B.A. Sanskrit C.C-1

MORAL TEACHINGS AND BASICS OF SANSKRIT

UTKAL UNIVERSITY
NAAC ACCREDITED A+

D.D.C.E.

Education for All

UTKAL UNIVERSITY
D.D.C.E
EDUCATION FOR ALL

ଦୂରନିରନ୍ତର ଶିକ୍ଷା ନିର୍ଦ୍ଦେଶାଳୟ, ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ
DIRECTORATE OF DISTANCE & CONTINUING EDUCATION
UTKAL UNIVERSITY

सूचिपत्रम्

विषयक्रमः

Unit-I हितोपदेशः (मित्रलाभः)

Unit-II शव्दरुपः

Unit- III यक्ष प्रश्नः (महाभारत)

Unit- Iv धातुरूपः

हितोपदेशः (मित्रलाभः)

हितोपदेशः (Hithopadesha) व्यावहारिक-नैतिक-राजनैतिकज्ञानेः पूर्णः लघुकथानां हृदयग्राही सङ्ग्रह अस्ति। सुकुमार

हितोपदेशः पञ्चतन्त्रस्य परिष्कृता काचित् आवृत्तिः चेदपि स्वतन्त्रग्रन्थत्वेन एव तस्य ख्यातिः अस्ति। तस्य हितोपदेशस्य

रचयिता नारायणभट्टः (नारायणपण्डितः)। एषः वङ्गदेशीयः। एषः धवलचन्द्रस्य आश्रये आसीत्। एतस्य् कालः क्रि श १० इति पण्डिताः अभिप्रयन्ति। यद्यपि पञ्चतन्त्रस्य आधारेण एषः ग्रन्थः रचितः, तथापि अन्यग्रन्थेभ्यः अपि अत्र कथाः स्वीकृताः। महाभारतात् स्वीकृता मुनिमूषककथा, वेतालपञ्चविंशतितः स्वीकृता वीरवरकथा इत्यादीनि अत्र उदाहरणानि। हितोपदेशस्य भाषा अतीव सरला। संस्कृतभाषाबोधनं नीतिबोधनं च एतस्य लक्ष्यम् इति कविः स्वयम् उक्तवान् अस्ति। संस्कृताभ्यासिनः सर्वे प्रायः एतं ग्रन्थं पठन्ति एव।

ग्रन्थोऽयं कथादृष्ट्या चतुर्षु भागेषु विभक्तोऽस्ति। यथा -

1. मित्रलाभः -- *मित्राणां लाभः सम्प्राप्तिः इति मित्र-लाभः ।*
2. सुहृद्भेदः

3. विग्रहः

4. सन्धिः

यक्ष प्रश्नः (महाभारत)

पांडवों के वनवास के बारह वर्ष समाप्त होनेवाले थे. इसके बाद एक वर्ष के अज्ञातवास की चिंता युधिष्ठिर को सता रही थी. इसी चिंता में मग्न एक दिन युधिष्ठिर भाइयों और कृष्ण के साथ विचार विमर्श कर रहे थे कि उनके सामने एक रोता हुआ ब्राम्हण आ खड़ा हुआ. रोने का कारण पूछने पर उसने बताया – "मेरी झोपडी के बाहर अरणी की लकड़ी टंगी हुई थी. एक हिरण आया और वह इस लकड़ी से अपना शरीर खुजलाने लगा और चल पड़ा. अरणी की लकड़ी उसके सींग में ही अटक गई. इससे हिरण घबरा गया और बड़ी तेजी से भाग खड़ा हुआ. अब मैं अग्नि होत्र के लिए अग्नि कैसे उत्पन्न करूंगा?" (अरणी ऐसी लकड़ी है जिसे दूसरी अरणी से रगड़कर आग पैदा की जाती है).

उस ब्राम्हण पर तरस खाकर पाँचों भाई हिरण की खोज में निकल पड़े. हिरण उनके आगे से तेजी से दौड़ता हुआ बहुत दूर निकल गया और आँखों से ओझल हो गया. पाँचों पांडव थके हुए प्यास से व्याकुल होकर एक बरगद की छाँव में बैठ गए. वे सभी इस बात से लज्जित थे कि शक्तिशाली और शूरवीर

होते हुए भी ब्राम्हण का छोटा सा काम भी नहीं कर सके. प्यास के मारे उन सभी का कंठ सूख रहा था. नकुल सभी के लिए पानी की खोज में निकल पड़े. कुछ दूर जाने पर उन्हें एक सरोवर मिला जिसमें स्वच्छ पानी भरा हुआ था. नकुल पानी पीने के लिए जैसे ही सरोवर में उतरे, एक आवाज़ आई – "माद्री के पुत्र, दुस्साहस नहीं करो. यह जलाशय मेरे आधीन है. पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर दो, फिर पानी पियो".

नकुल चौंक उठे, पर उन्हें इतनी तेज प्यास लग रही थी कि उन्होंने चेतावनी अनसुनी कर दी और पानी पी लिया. पानी पीते ही वे प्राणहीन होकर गिर पड़े.

बड़ी देर तक नकुल के नहीं लौटने पर युधिष्ठिर चिंतित हुए और उन्होंने सहदेव को भेजा. सहदेव के साथ भी वही घटना घटी जो नकुल के साथ घटी थी.

सहदेव के न लौटने पर अर्जुन उस सरोवर के पास गए. दोनों भाइयों को मृत पड़े देखकर उनकी मृत्यु का कारण सोचते हुए अर्जुन को भी उसी प्रकार की वाणी सुनाई दी जैसी नकुल और सहदेव ने सुनी थी. अर्जुन कुपित होकर शब्दभेदी बाण चलने लगे पर उसका कोई फल नहीं निकला. अर्जुन ने भी क्रोध में आकर पानी पी लिया और वे भी किनारे पर आते-आते मूर्छित होकर गिर गए.

अर्जुन की बाट जोहते-जोहते युधिष्ठिर व्याकुल हो उठे. उन्होंने भाइयों की खोज के लिए भीम को भेजा. भीमसेन तेजी से जलाशय की ओर बढ़े. वहां उन्होंने अपने तीन भाइयों को मृत पाया. उन्होंने सोचा कि यह अवश्य किसी राक्षस के करतूत है पर कुछ करने से पहले उन्होंने पानी पीना चाहा. यह सोचकर भीम ज्यों ही सरोवर में उतरे उन्हें भी वही आवाज़ सुनाई दी. – “मुझे रोकनेवाला तू कौन है!?” – यह कहकर भीम ने पानी पी लिया. पानी पीते ही वे भी वहीं ढेर हो गए.

चारों भाइयों के नहीं लौटने पर युधिष्ठिर चिंतित हो उठे और उन्हें खोजते हुए जलाशय की ओर जाने लगे. निर्जन वन से गुज़रते हुए युधिष्ठिर उसी विषैले सरोवर के पास पहुँच गए जिसका जल पीकर उनके चारों भाई प्राण खो बैठे थे. उनकी मृत्यु का कारण खोजते हुए युधिष्ठिर भे पानी पीने के लिए सरोवर में उतरे और उन्हें भी वही आवाज़ सुनाई दी – “सावधान! तुम्हारे भाइयों ने मेरी बात न मानकर तालाब का जल पी लिया. यह तालाब मेरे आधीन है. मेरे प्रश्नों का सही उत्तर देने पर ही तुम इस तालाब का जल पी सकते हो!”

युधिष्ठिर जान गए कि यह कोई यक्ष बोल रहा था. उन्होंने कहा – “आप प्रश्न करें, मैं उत्तर देने का प्रयास करूंगा!”

यक्ष ने प्रश्न किया – मनुष्य का साथ कौन देता है? युधिष्ठिर ने कहा – धैर्य ही मनुष्य का साथ देता है.

यक्ष – यशलाभ का एकमात्र उपाय क्या है?

युधिष्ठिर – दान.

यक्ष – हवा से तेज कौन चलता है?

युधिष्ठिर – मन.

यक्ष – विदेश जानेवाले का साथी कौन होता है?

युधिष्ठिर – विद्या.

यक्ष – किसे त्याग कर मनुष्य प्रिय हो जाता है?

युधिष्ठिर – अहम् भाव से उत्पन्न गर्व के छूट जाने पर.

यक्ष – किस चीज़ के खो जाने पर दुःख नहीं होता?

युधिष्ठिर – क्रोध.

यक्ष – किस चीज़ को गंवाकर मनुष्य धनी बनता है?

युधिष्ठिर – लोभ.

यक्ष – ब्राम्हण होना किस बात पर निर्भर है? जन्म पर, विद्या पर, या शीतल स्वभाव पर?

युधिष्ठिर – शीतल स्वभाव पर.

यक्ष – कौन सा एकमात्र उपाय है जिससे जीवन सुखी हो जाता है?

युधिष्ठिर – अच्छा स्वभाव ही सुखी होने का उपाय है.

यक्ष – सर्वोत्तम लाभ क्या है?

युधिष्ठिर – आरोग्य.

यक्ष – धर्म से बढ़कर संसार में और क्या है?

युधिष्ठिर – दया.

यक्ष – कैसे व्यक्ति के साथ की गयी मित्रता पुरानी नहीं पड़ती?

युधिष्ठिर – सज्जनों के साथ की गयी मित्रता कभी पुरानी नहीं पड़ती.

यक्ष – इस जगत में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

युधिष्ठिर – रोज़ हजारों-लाखों लोग मरते हैं फिर भी सभी को अनंतकाल तक जीते रहने की इच्छा होती है. इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है?

इसी प्रकार यक्ष ने कई प्रश्न किये और युधिष्ठिर ने उन सभी के ठीक-ठीक उत्तर दिए. अंत में यक्ष ने कहा – “राजन, मैं तुम्हारे मृत भाइयों में से केवल किसी एक को ही जीवित कर सकता हूँ. तुम जिसे भी चाहोगे वह जीवित हो जायेगा”.

युधिष्ठिर ने यह सुनकर एक पल को सोचा, फिर कहा – "नकुल जीवित हो जाये".

युधिष्ठिर के यह कहते ही यक्ष उनके सामने प्रकट हो गया और बोला – "युधिष्ठिर! दस हज़ार हाथियों के बल वाले भीम को छोड़कर तुमने नकुल को जिलाना क्यों ठीक समझा? भीम नहीं तो तुम अर्जुन को ही जिला लेते जिसके युद्ध कौशल से सदा ही तुम्हारी रक्षा होती आई है!"

युधिष्ठिर ने कहा – "हे देव, मनुष्य की रक्षा न तो भीम से होती है न ही अर्जुन से. धर्म ही मनुष्य की रक्षा करता है और धर्म से विमुख होनेपर मनुष्य का नाश हो जाता है. मेरे पिता की दो पत्नियों में से कुंती माता का पुत्र मैं ही बचा हूँ. मैं चाहता हूँ कि माद्री माता का भी एक पुत्र जीवित रहे."

"पक्षपात से रहित मेरे प्रिय पुत्र, तुम्हारे चारों भाई जीवित हो उठें!" – यक्ष ने युधिष्ठिर को यह वर दिया. यह यक्ष और कोई नहीं बल्कि स्वयं धर्मदेव थे. उन्होंने ही हिरण का और यक्ष का रूप धारण किया हुआ था. उनकी इच्छा थी कि वे अपने धर्मपरायण पुत्र युधिष्ठिर को देखकर अपनी आँखें तृप्त करें.

शब्दरूपज्ञानम्

व्यावहारिक संस्कृत प्रयोगसमये साधारणतया संस्कृतशब्दानां मौलिकं ज्ञानम् आवश्यकम् । शब्दानां लिङ्गनिरूपणेन सह विभक्त्यनुसारं प्रयोग: करणीय:। व्यवहारदृष्ट्या कस्मिन् अर्थे कस्य शब्दरूपस्य अभ्यास: करणीय: तद्विषये ध्यानं दातव्यम् ।

सर्वासु सप्तसु विभक्तिषु व्यावहारिकदृष्ट्या एकवचन द्विवचन - बहुवचनाधारेण अर्थज्ञानम् आवश्यकम् । किमर्थं कस्या: विभक्ते: प्रयोग: भवति, तदर्थं धारणा आहरणीया । तत: शब्दरूप व्यवहार: सुगम:भवति । प्रथमत: स्वज्ञानेन विभक्ति चिह्नानि वचनानुसारम् अनुसृत्य मनसि संस्थाप्य शब्दानां प्रयोगं कुर्यात् ।

अवश्यं वार्तलापमाध्यमेन प्रयोगेण च स्वत: संस्कृत शब्दरूपाणां व्यवहार: स्पष्टतया अनुभूयते ।

लिङ्ग विचार:

संस्कृते प्रातिपदिकशब्दानां त्रिषु लिङ्गेषु व्यवहार: दृश्यते ते च पुंलिंगवाचका:, स्त्रीलिंग वाचका:, नपुंसकवाचका: (क्लीवलिङ्ग वाचका:) च । प्रायेण अव्ययशब्द:,अलिङ्ग:। सर्वेषु लिङ्गेषु अव्यय शब्दानां व्यवहार: दृश्यते ।

शब्दानां लिङ्गनिरूपणं कष्टकरम् अत: 'संशयस्थले वक्ता स्वयं लिङ्गस्य प्रयोगं कुर्यात् तदर्थं कौमुदीकारेण उदाहृतम् 'लिङ्गमशिष्यं लोकाशयत्वात् तल्लिङ्गस्य ।

विशेष्यस्य हि यत् लिङ्गं विभक्ति वचने च ये ।

तानि सर्वाणि योज्यानि विशेषणपदेष्वपि ।

यथा - सुन्दर: बालक:, सुन्दरी बालिका, सुन्दरं भवनम्

प्रिय: पुत्र:, प्रियौ पुत्रौ, प्रिया: पुत्रा: सरला बालिका, सरले बालिके सरला: बालिका: सुन्दरं चित्रम्, सुन्दरे चित्रे , सुन्दराणि चित्राणि, गभीरात् कूपात्, उन्नतस्य वृक्षस्य, दरिद्राय भिक्षुकाय, धवलेन घोटकेन, मनोहारिणीं नारीम्, न्यायेन मार्गेण, विभिन्नेषु देशेषु

अनेके बालका: अनेका: बालिका: अनेकानि फलानि ।

<u>**सर्वेषु लिङ्गेषु अस्मद् युष्मद् शब्दयो: व्यवहार:**</u>

त्वम् / अहं पुरुष: / स्त्री, फलम्

वयं / यूयं बलवन्त:

Scanned with CamScanner

NOTES

नित्यप्रयोग योग्याः पुंलिङ्गवाचकशब्दाः

१. बालक, छात्र, मानव, विद्यालय, घोटक, गज, छागल, जन, काक, शुक, बक, कपोत, सर्प, शिक्षक, विहग, मूषिक, मास, नख, कर, हस्त, पाद, केश, प्रश्न, मूर्ख, सन्तान, पण्डित, मेघ, समुद्र, रोग, वृक्ष, ग्राम, देव इत्यादयः

नित्यबहुवचनान्ता, दार, प्राण, लाज, अक्षत

२. सोमपा, विश्वपा, गोपा,

३. मुनि, कवि, रवि, विधि, जलधि, अग्नि, कपि, ऋषि, नृपति, अधिपति, राष्ट्रपति, गणपति, दलपति, क्षेत्रपति

४. पति

५. सखि

६. सुधी, सेनानी, अग्रणी

७. साधु, गुरु, तरु, भानु, शिशु, सेतु, विधु, क्रतु, मधु

८. स्वयम्भू (ब्रह्मा)

९. दातृ, विधातृ, कर्तृ, जेतृ, नेतृ, हन्तृ, श्रोतृ

१०. पितृ, भ्रातृ, जामातृ

११. गो (पुंलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे च)

१२. वणिज्

१३. गच्छत्, धावत्, हसत्, पश्यत्

१४. महत् - बुद्धिमत्, सुहृद्, मतिमन् प्रेमम्न्

१६. आत्मन्, राजन्, युवन्, पथिन्, गुणिन्, स्वन्,

१६. विद्वस्, गरीयस्

स्त्रीलिंग शब्दाः

१- लता, विद्या, निद्रा, देवता, मेधा, चिन्ता, लज्जा, दया, भाषा, कविता, छाया

२- मति,गति, बुद्धि, भूमि, जाति, दृष्टि स्थिति, कीर्ति, शक्ति, नीति

३- नदी, देवी, नारी, वाणी, पत्नी, कुमारी, रमणी

४- स्त्री

५- धेनु, रज्जु, रेणु, चञ्चु

६- वधू, श्वश्रू

७- मातृ, दुहितृ, स्वसृ

Scanned with CamScanner

NOTES

८ - विपद्, दिक्, वाच्, परिषद्, संसद्

९ - अप् (जल) वर्षा, सिकता, समा, नित्यबहुवचनान्त शब्दा:

नपुंसकवाचकशब्दा:

१ - फल, जल, धन, सुख, दु:ख, पत्र, पुष्प, कलत्र (स्त्री) मित्र

२ - वारि,अक्षि, अस्थि, दधि

३ - मधु (Honey, wine) , अश्रु

४ - महत्, जगत्

५ - नामन्, प्रेमन्, कर्मन्, ब्रह्मन्, चर्मन्, जन्मन्,भस्मन्

६ - यशस्, वयस्, पयस्, तमस्, रजस्, मनस्, नभस्, स्त्रोतम्, शिरस्

७ - अहन्

८ - धनुस्, आयुस्, चक्षुस्

प्रायेण सर्वनामशब्दा: (त्रिषु लिङ्गेषु पृथक् रूपेण व्यवह्रियन्ते)

१. सर्व - सर्व: (पुं) सर्व (स्त्री सर्वम् (न) विश्व (समस्त) स्व (आत्मीय) सम (समस्त

२. किम् - क: (पुं) का (स्त्री) किम् (न)

३. तद् - स: (पुं) सा (स्त्री) तद् / तत् (न)

४. यद् - य: (पुं) या (स्त्री) यत्(न)

५. इदम् - अयम् (पुं) इयम् (स्त्री) इदम् (न)

६. एतद् - एष: (पुं) एषा (स्त्री) एतत् (न)

७. अन्यद् - अन्य: (पुं) अन्या (स्त्री) अन्यत् (न)

संख्यावाचकशब्दा:

१. एक - एकवचनान्तशब्द:- एक: (पुं) एका (स्त्री) एकम् (न)

२. द्वि - द्विवचनान्तशब्द: - द्वौ (पुं) द्वे (स्त्री) द्वे (न)

३. त्रि - बहुवचनान्तशब्द: - त्रय: (पुं) तिस्त्र: (स्त्री) त्रीणि (न)

४. चतुर् - बहुवचनान्तशब्द:- चत्वार: (पुं) चतस्त्र: (स्त्री) चत्वारि(न)

त्रिषु लिङ्गेषु समानं रूपम्

५. पञ्चन् - बहुवचनान्तशब्द: - पञ्च (पुं) पञ्च (स्त्री) पञ्च (न)

६. षट् - बहुवचनान्तशब्द: - षट् (पुं) षट् (स्त्री) षट् (न)

७. सप्तन् - बहुवचनान्तशब्द:- सप्त (पुं) सप्त (स्त्री) सप्त (न)

Scanned with CamScanner

NOTES

एवम् अष्टन् (अष्ट / अष्टौ)नवन् (नव) दशन् (दश) एकादशन् (एकादश) द्वादशन् (द्वादश) त्रयोदशन् (त्रयोदश) चतुर्दशन् (चतुर्दश) पञ्चदशन् (पञ्चदश) षोडशन् (षोडश) सप्तदशन् (सप्तदश) अष्टादशन् (अष्टादश) नवदशन् (नवदश)

ऊनविंशतितः १००००००००००००००००० परार्धपर्यन्तं संख्यावाचकशब्दाः तत्तत् संख्याबोधनार्थम् एकवचनान्ताः भवन्ति ।

ऊनविंशतिः विंशतिः द्वाविंशतिः...

षष्टिः एकषष्टिः द्विषष्टिः...

सप्ततिः अशीतिः नवतिः इत्यादयः **स्त्रीलिङ्गे एकवचनरूपेण मतिशब्दवत् व्यवह्रियन्ते ।**

ऊनत्रिंशत्, त्रिंशत्, एकत्रिंशत्, द्वत्रिंशत्, त्रयस्त्रिंशत्, चतुस्त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, प्रभृतयः शब्दाः

स्त्रीलिङ्गे एकवचने 'भूभृत्" शब्दवत् व्यवहृताः भवन्ति

अन्ये अकारान्त संख्यावाचकशब्दाः नपुंसके फलवत् यथा -शतम्, सहस्त्रम्, लक्षम्, अयुतम्

स्मरणीयम्

एकं दश शतं चैव सहस्त्रमयुतं तथा

लक्षं च नियुतं चैव कोटिरर्वुदमेव च । (कोटि : + अर्वुदम्)

(अत्र कोटि : स्त्रीलिङ्गवाचकशब्दः)

वृन्दं खर्वो निखर्वश्च शङ्खः पद्मश्च सागरः ।

अन्त्यं मध्यं परार्धं च दशवृद्ध्या यथा क्रमम् ।।

खर्वः, निखर्वः, शङ्खः, पद्मः, सागरः - एते पुंलिङ्गवाचकाः ।

एते संख्यावाचक शब्दाः विशेषण रूपेण एकवचनान्ताः एतेषां विशेष्यप्रयोगो बहुवचने एव भवति ।

यथा - विंशतिः बालकाः / बालिकाः / फलानि ।

शतम् अश्वाः, सहस्त्रं रूप्यकाणि ।

किन्तु द्वित्व, बहुत्व बोधने एतेषां शब्दानां द्विवचने, बहुवचने च व्यवहारः भवति ।

- **छात्राणां शतं गच्छति, छात्राणां द्वेशते गच्छतः, छात्राणां त्रीणि शतानि गच्छन्ति ।**
- **विंशतिः आम्राणि सन्ति / आम्राणां विंशतिः अस्ति ।**
- **आम्राणां द्वे विंशती स्तः, आम्राणां द्वेशते स्तः**
- **आम्राणां तिस्त्रः विंशतयः सन्ति ।**
- तति, कति, यति - प्रभृतयः परिमाणवाचक शब्दाः - नित्यबहुवचनान्ताः त्रिषु लिङ्गेषु समानाः यथा -कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः कतिभ्यः कतीनाम्, कतिषु, कति

Scanned with CamScanner

NOTES

- पूरणवाचकशब्दा: -

प्रथम: द्वितीय: ... दशम:

षोडश:, विंश:.... पुंलिङ्गवाचका:

प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, दशमी, एकादशी.. स्त्रीलिङ्गवाचका:

प्रथमम्, द्वितीयम्, तृतीयम्, पञ्चमम्... नपुंसकवाचका:

- सर्वशब्दस्य पुंलिङ्गे प्रयोग:

एकवचने - नहि सर्व: सर्वं वेत्ति ।

द्विवचने - सर्वौ असुरवा नरौ हतौ ।

बहुवचने - सर्वे सन्तु निरामया:

- विश्व शब्द: समस्त - अर्थ -बोधक: सन् सर्वादिगणीयं: ।

विश्वे वदन्ति - सर्वे वदन्ति ।

अन्यत्र अकारान्त: यथा - विश्वे (जगति) नरा: स्वार्थपरा: ।

- उभ - शब्द: द्विवचनान्त: - **उभौ बालकौ । उभे बालिके, उभे पुस्तके ।**

उभय-शब्द: एकवचने, बहुवचने, च व्यवह्रियते यथा - **उभयो मुनि:, उभये देवमनुष्या:**

- एक शब्द: नित्य - एकवचनान्त: (एक: बालक: एका बालिका, एकंफलम्

किन्तु संख्या भिन्नार्थे, द्विवचने बहुवचने च व्यवह्रियते ।

एके वदन्ति - केचित् वदन्ति

एकेषाम् प्रधानानाम्

एकौ - अन्यौ

दम्पती एकप्राणौ - एके समाना: प्राणा: ययो: तौ ।

'एकोऽन्यार्थे प्रधाने च प्रथमे केवले तथा ।

साधारणेसमानेऽल्पे संख्यायां च प्रयुज्यते ।।

अन्य-प्रधान - प्रथम - केवल - साधारणं - समान - अल्पादि बोधने एक शब्दस्य प्रयोग: दृश्यते ।

<u>केचन प्रयोगा:</u>

वृक्षवाचकशब्दा: पुंलिङ्गे , फल पुष्पवाचकशब्दा: नपुंसकलिङ्गे च व्यवह्रियन्ते ।

यथा - नारीकेल : (वृक्ष:) नारीकेलम् (फलम्) चम्पक: (वृक्ष:) चम्पकम् (पुष्पम्)

पाटल: (वृक्ष:) पाटलम् (पुष्पम्)

नारी, रमणी, स्त्री शब्दा: - स्त्रीलिङ्गवाचका: - किन्तु जन-लोक -गण - शब्द योगेन पुंलिङ्गवाचका: भवन्ति

Scanned with CamScanner

यथा -एषा नारी / रमणी बुद्धिमती / सुन्दरी स्त्री किन्तु एषः नारीजनः / रमणीगणः बुद्धिमान् ।

एषः रमणीगणः / सुन्दरः स्त्रीलोकः

एष स्त्रीलोकः / अयं स्त्रीजनः कः ?

- गण, संघ, समाज, समूह वाचक शब्दाः बहुत्वबोधने अपि एकवचने व्यवह्रियन्ते-

यथा - मानवगणः, जातिसंघः ,छात्रसमाजः

- अजहत्लिङ्गविचारः - विशेषणे अपरिवर्तनीयाः

शरण - कारण, भूषण - प्रमाण - पात्र - आस्पद - स्थान - पद - भाजन - निदान - मूल प्रभृतयः केचन शब्दाः विशेषणरूपेण स्वंलिङ्गं न जहति ।

यथा - भगवान् / भगवती / देवाः / त्वं मम शरणम्

गुणाः पूजास्थानम्, जननी भक्ति भाजनम् । भवन्तः प्रमाणम् । पिता / माता / गुरवः देवाः पूजास्पदम् ।

सम्पदः आपदां पदम् । पुत्रः / पुत्री गृहस्य भूषणम्, विद्या / धर्मः सुखस्य मूलम् ।

विद्या सर्वस्य भूषणम्, नारीणां भूषणं लज्जा / अन्यत्र भूषणानि मनोहराणि, स्थानानि मार्जयतु...शूकरः मूलानि खादति ।

- प्राण (जीवनार्थक), नित्यबहुवचनान्तः (पुंलिङ्गे) सर्वेषां / वृद्धस्य प्राणाः अस्थिराः

प्राणः - प्राण (अम्लजान) नामा वायुविशेषः (पुंलिङ्गे प्राणः जीवनरक्षकः)

दाराः (नित्यबहुवचनान्त पुंलिङ्ग शब्दः)

सीता रामस्य दाराः (अस्ति) । तस्य दाराः मृताः । ते दाराः गच्छन्ति ।

- अप् (जल) सुमनस् (पुष्प) समा (वर्ष) सिकता (बालुका) वर्षा (ऋतुविशेष) प्रभृतयः शब्दाः स्त्रीलिङ्गवाचकाः नित्य बहुवचनान्ताश्च ।

ताः आपः / सुमनसः। / समाः / सिकताः / वर्षाः

शीतलासु अप्सु / मनोहरासु सुमनःसु

त्वं बह्वीः समाः जीव । सूक्ष्मासु सिकतासु., वर्षासु मयूराः नृत्यन्ति ।

- अप्सरस् शब्दः स्त्रीलिङ्गबहुवचनान्तः

ताः अप्सरसः सुन्दर्य्यः (मनोहराः) किन्तु नामवाचके एकवचनं भवति - यथा - मेनका नाम अप्सराः ।

<u>विशेषण प्रयोगाः</u>

१. मगधस्य राजा राज्ञी च वदान्यौ (दानशीलौ) आस्ताम्

२. सुकोमलानि लताः पत्राणि च आनय

३. वृक्षः लता, फलं च सुन्दरम् / सुन्दराणि

Scanned with CamScanner

NOTES

४. बालकः बालिका च सुन्दरौ ।

५. बालकः बालिका च सुन्दरौ ।

५. साधुः नारीजनः

६. शोभनं / रमणीयं प्रातः

स्वशब्दस्य व्यवहारः

स्व-शब्दः - आत्मार्थे पुंलिङ्गे नपुंसकालिङ्गे च

आत्मीयार्थे त्रिषु लिङ्गेषु

ज्ञाति- अर्थे पुंलिङ्गे

धन - अर्थे पुंलिङ्गे नपुंसकलिङ्गे च

आत्यीयार्थे

१. त्वं स्वस्मै (निजाय) लोकाय धनं देहि

२. हरिः स्वस्यां (निजायां) भार्यायां विश्वसिति

३. रामस्य स्वानि (निजानि) मित्राणि आगतानि

आत्मार्थे १. सीता स्वस्य (आत्मनः) चित्रं पश्यति

२. रमा स्वम् (आत्मानं) असहायां मन्यते ।

धनार्थे १. तस्करः मम सर्वान् स्वान् (अर्थ विशेषान्) अनयत्

२. मम सर्वाणि स्वानि (धनानि) नष्टानि ।

ज्ञात्यर्थे १. महाजनः स्वानां (ज्ञातीनां) रक्षणम् इच्छति ।

२. अहं स्वस्य (आत्मनः) स्वान् (ज्ञातिविशेषान्) पश्यामि ।

सीता स्वस्य (आत्मनः) मात्रा सह यास्यति ।

सीता स्वया (निजया) मात्रा सह यास्यति ।

किन्तु - **स्वस्याः मात्रा सह न भवेत् यतः आत्मार्थे स्त्रीलिङ्ग व्यवहारः. नास्ति**

विशेष द्रष्टव्यानि - स्वोज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने इत्यमरः

स्वो ज्ञात्यात्मनोः स्वं निजे धने इति हेमचन्द्रः

स्वः स्यात् पुंस्यात्मनि ज्ञातौ त्रिष्वात्मीयेऽस्त्रियां धने - इति मेदिनी

अष्टाध्यायी - स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ।

Scanned with CamScanner

NOTES

भ्रम (अशुद्धि)० निराकरण पूर्वकं शुद्ध शब्द रूप) प्रयोग:

अशुद्धम	शुद्धम्
१. विदुषी स्त्री जन: पूज्या	विद्वान् स्त्रीजन: पूज्य:
२. सो बालक:	स: / स बालक:
३. एषो जन:	एष: / एष जन:
४. हरि: शरण:	हरि: शरणम्
५. दुर्गा शरणा	दुर्गा शरणम्
६. पूजास्पदा: गुरुव:	पूजास्पदं गुरव:
७. बालक त्रया:	बालकत्रयम्
८. सुमिष्टान् फलान्	सुमिष्टानि फलानि
१०. रम्यान् वनान्	रम्याणि वनानि
११. दाराणि मृतानि	दारा: मृता:
१२. कोमलं प्राणम्	कोमलान् प्राणान्
१३. कर्मस्य अनुरूप: फल:	कर्मण: अनुरूपं फलम्
१४. सफल: जीवन:	सफलं जीवनम्
१५. निर्मल: चरित्र:	निर्मलं चरित्रम्
१६. गभीर: ज्ञान:	गभीरं ज्ञानम्
१७. चन्द्रमाया: शोभा	चन्द्रमस: शोभा
१८. महान् शक्ति:	महती शक्ति:
१९. प्राण: प्रिय:	प्राणा: प्रिया:
२०. उपकारी मित्र:	उपकारि मित्रम्
२१. प्रसन्न: मन:	प्रसन्नं मन:
२२. निर्मल: पय:	निर्मलं पय:
२३. विख्यात: यश:	विख्यातं यश:
२४. प्राणादपि प्रिय:	प्राणेभ्य: अपि प्रियतर:
२५. छिन्न: वास:	छिन्नं वास:(वस्त्रम्)
२६. यादृश: कर्म:	यादृशं कर्म
२७. किमपि गुणम्	कोऽपि गुण:

Scanned with CamScanner

NOTES

२८. गुणशाली बधू:	गुणशालिनी वधू:
२९. अन्यं कारणम्	अन्यत् कारणम् .
३०. गौरीस्य माता	गौर्या: माता
३१. सरितानां जलेषु	सरितां जलेषु
३२. महतानां चरितम्	महतां चरितम्
३३. सुहृदेन सह	सुहृदा सह
३४. विद्वानानां पूजा	विदुषां पूजा
३५. महाराज: शासन:	महाराजस्य शासनम्
३६. प्रियसखा गत:	प्रियसख: गत:
३७. राजपथि कोलाहल:	राजपथे कोलाहल:
३८. नीतिवान् जन:	नीतिमान् जन:
३९. गुणवान् पुत्रम्	गुणवन्तं पुत्रम्
४०. इदं सरे	अस्मिन् सरसि
४१. इमं गावम्	इमं / इमां गाम्
४२. सुभद्रानामा भग्नी	सुभद्रानाम्नी भगिनी
४३. लक्ष्मीमान् पुरुष:	लक्ष्मीवान् पुरुष:
४४. बुद्धिमन्त: बालिका:	बुद्धिमत्य:बालिका:
४५. अपरा: जना:	अपरे जना:
४६. भवान्नत्र तिष्ठ	भवानत्र तिष्ठतु
४७. गभीरे नद्याम्	गभीरायां नद्याम्
४८. निस्तब्ध रजन्याम्	निस्तब्धायां रजन्याम्
४९. सुशीतले छायायाम्	सुशीतलायां छायायाम्
५०. पञ्चानि मुद्राणि	पञ्च मुद्रा:
५१. अयं व्यक्ति:	इयं व्यक्ति:
५३. महाराज्ञ: आदेश:	महाराजस्य आदेश:
५४. गुणीन: जना:	गुणिन: जना:
५५. युवाया: आकृति:	यून: आकृति:
५६. श्वानस्य रव:	शुन: रव:

Scanned with CamScanner

NOTES

५७. शयन् शिशुः	शयानः शिशुः
५८. बुद्धिमती नारीवर्गः	बुद्धिमान् नारीवर्गः
५९. लज्जन्ती, बालिका	लज्जमाना बालिका
६०. पलायन्तं चौरम्	पलायमानं चौरम्
६१. वर्धन्तं रोगम्	वर्धमानं रोगम्
६२. द्वौ मित्रा	द्वे मित्रे
६३. वर्षायां नद्य:वर्द्धन्ते -	वर्षासु नद्यः वर्द्धन्ते
६४. नदीस्य स्रोते	नद्याः स्त्रोतसि
६५. गवानां वत्स्ाः	गवां वत्साः
६६. माताया: आदेशः	मातुः आदेशः
६७. भगवानस्य कृपायाम्	भगवतः कृपया
६८. पश्चिमस्यां दिशि	पश्चिमायां दिशि
६९. तवमहिमां नमामि	तव महिमानं नमामि
७०. सम्पदे गर्वः मा कुरु	संम्पदि गर्वं मा कुरु
७१.हे हरिः विपदात् रक्ष	हे हरे! विपदः रक्ष
७२. तिस्त्रः दाराः सन्ति	त्रयः दाराः सन्ति
७३. हरिस्य गावं पश्य	हरेः गां पश्य
७४. भूपत्युः आदेशं पालय	भूपतेः आदेशं पालय
७५. रविः भ्रातास्य गृहं गच्छति	रविः भ्रातुः गृहं गच्छति
७६. हे विष्णुः रक्ष	हे विष्णो! रक्ष
७७. वृद्धस्य प्राणः अस्थिर	वृद्धस्य प्राणाः अस्थिराः ।
७८. कुमारीनां लीला -	कुमारीणां लीला
७९. अम्बे! मां रक्ष -	अम्ब! मां रक्ष
८८. मम स्वस्रः	मम स्वसारः
८९. हे माता! / हे माते!	हे मातः!
९०. वधोः भ्राता आयाति	वध्वाः भ्राता आयाति
९१. सुन्दरी बालिके	सुन्दर्यौ बालिके
९२. सरलेन नीतिना	सरलया नीत्या

Scanned with CamScanner

NOTES

९३. काक: चञ्चुना खादति	काक: चञ्च्वा खादति
९४. महानदौ तरी चलाति	महानद्यां तरी: चलति
९५. बहव: पुष्पाणि सन्ति	बहूनि पुष्पाणि सन्ति
९६. पद्मपत्रे अम्बुं पश्य	पद्मपत्रे अम्बु पश्य
९७. कुकुर: अस्थिं चर्वति	कुक्कुर: अस्थि चर्वति ।
९८. भ्रमरा: मधुं पिवति	भ्रमर: मधु पिबति ।
९९. सम्राटं प्रजा: वदन्ति	सम्राजं प्रजा: वदन्ति ।
१००. पथा वृक्षा: सन्ति	पथि वृक्षा: सन्ति
१०१. आत्माया: उन्नतिं कुरु	आत्मन: उन्नतिं कुरु
१०२. रोगिस्य सेवां कुरु	रोगिण: सेवां कुरु
१०३. भगवानस्य दया महान्	भगवत: दया महती
१०४. शिशूनां वाक् मधुरम्	शिशूनां वाक् मधुरा
१०५. सरितात् योषित: जलम् आनयन्ति	सरित: योषित: जलम् आनयन्ति
१०६. आपदेषु दुर्गास्मर	आपत्सु दुर्गां स्मर
१०७. व्योमे नक्षत्रा: शोभन्ते	व्योम्नि नक्षत्राणि शोभन्ते
१०८. मूर्खानां जन्म निरर्थक:	मूर्खाणां जन्म निरर्थकम्
१०९. व्याध: धनुना मृगान् मारयति	व्याध: धनुषा मृगान् मारयति
११०. कस्मात् दिश: वायु: वहति?	कस्या: दिश: वायु: वहति
१११. अयं लता सुन्दरम्	इयं लता सुन्दरी
११२. हे सखे! ते गृहंकुत्र?	हे सखे! तव गृहं कुत्र ?
११३. सर्वा: बालका: विद्यालयं यान्ति	सर्वे बालका: विद्यालयं यान्ति
११४. एते रत्नानि मूल्यवन्त:	एतानि रत्नानि मूल्यवन्ति
११५. पञ्चा: मृगा: धावन्ति	पञ्च मृगा: धावन्ति
११६. अष्टानि फलानि आनय	अष्टौ / अष्ट फलानि आनय ।
११७. विंशतय: धेनव: चरन्ति	विंशति: धेनव: चरन्ति
११८. शिष्य: आचार्याणीं नमति	शिष्य: आचार्यानीं नमति
११९. मम द्वौ लेखन्यौ	मम द्वे लेखन्यौ

❖❖❖

Scanned with CamScanner

UNIT - II

NOTES

धातुरूपज्ञानम्

साधारणतया एकस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं तदनुसारं क्रियापदं युज्यते । क्रियापदस्य मूलं रूपं धातुः एव । मूलधातुषु तिप्, तस्, झि -प्रभृति प्रत्यय योगेन पठ् + तिप् = पठति, पठ् + तस् पठतः पठ् + झि पठन्ति इति रूपाणि भवन्ति । एते प्रत्ययाः परस्मैपदी आत्मनेपदीधातुषु च व्यवह्रियन्ते । अतः धातवः तिङन्तरूपेण प्रसिद्धाः

धातवः त्रिधा विभक्ताः

१ - परस्मैपदिनः २ - आत्मनेपदिनः ३ - उभयपदिनः

१ - क्रियायाः फलं परस्मै (अन्यनिमित्तं) यदि उद्दिष्टं तदा परस्मैपदी धातुः । यथा - ब्राह्मणः राज्ञे यजति, पाचकः अन्नं पचति, छात्रः पठति, छागः चरति अत्र क्रिया पदानां फलं परस्मै उपलक्षितम् । यतः क्रमेण राज्ञः समाजस्य हिताय फलम्, अन्नेन सर्वेषां भोजनं हि फलम् । पठनेन समाज कल्याणाय ज्ञानवर्धनं हि फलम्, छागस्य चरति क्रियाद्वारा शरीर वृद्ध्या सह अन्येषां कृते क्षीर-मांसादि प्रदानमेव फलम्

२. क्रियायाः फलं यदा कर्ता स्वयं गृह्णाति (अनुभवति) तदा आत्मनेपदी धातुः । यथा - सेवकः सेवते ।

फलं रोचते । हिमालयः विद्यते, धनं लभते । लता वेपते - अत्र सेवकस्य सेवाकार्यं स्वार्थसाधनायं, फलभोजनेन रुचिः केवलं भोजनकर्त्तुः, स्वयं हिमालयः अवस्थितः, कर्ता एव धनं निजनिमित्तं स्वीकरोति । लता स्वयं दोलायमाना भवति, अत्र कम्पनमेव फलम् ।

३ - केचन धातवः पूर्वोक्त द्विविधफललाभाय भवन्ति, कर्त्ता स्वयं निजार्थं परार्थं च यत्र कार्यं करोति तत्र क्रिया उभयपदि - धातुम् अनुसरति ।

(क) माता अन्नं पचति - परिवारस्य सर्वेषां कृते (परार्थं) रन्धनं करोति ।

(ख) रमा अन्नं पचते - स्वयं खादितुम् एव । फलं रमायै। व्रती अन्नं पचते - फलं व्रतचारिणे एव । श्रमिकः कार्यं करोति अत्र परार्थं फलम् । श्रमिकः कार्यं कुरुते - अत्र निजभरणपोषण - निमित्तमेव फलम् ।

संस्कृत भाषायां समुपलब्धाः धातवः दशसु गणेषु विभक्ताः ।

- भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च

तुदादिश्च रुधादिश्च तन-क्र्यादि - चुरादयः

भ्वादिगणीयाः

भू-आदौ येषां - ते भ्वादिगणीयाः, एवं क्रमेण

१ - भ्वादि २ - अदादि ३ - जुहोत्यादि ४ - दिवादि ५ - स्वादि ६ - तुदादि ७ - रुधादि ८ - तनादि ९ - क्र्यादि १० - चुरादि गणीयाः-धातवः विद्यन्ते

Scanned with CamScanner

NOTES

भ्वादि-दिवादि - तुदादि - चुरादि - चतुर्गणेषु १८७६ धातव: सन्ति

अदादि - जुहोत्यादि खादि रुधादि तनादि - क्रियादि - षड्गणेषु २३९ धातव: सन्ति ।

धातुरूपाणि लकारेषु पुरुषवचनेषु व्यवह्रियन्ते

संस्कृतव्याकरणे विभिन्नकाला: अवस्थाश्च लकाररूपेण परिचिता: भवन्ति । दश संख्यका: लकारा: सन्ति वैदिक संस्कृते लेट लकारेण सह, लट् लङ् लिङ् (विधिलिङ्, आशीर्लिङ्) लिट् लुट् लुङ् लङ् लृट्, लोट् इत्यादय: लकारा: व्यवह्रियन्ते

लेट्लकारं विहाय अन्ये लकारा: लौकिक संस्कृत व्याकरणे व्यवह्रियन्ते । सम्प्रति केवलं पञ्चलकारा: लट्, विधिलिङ्, लोट्, लङ् लृट् - इत्यादय: व्यावहारिक रूपेण पाठ्यक्रमेषु प्रचलन्ति । अवश्यं विशेषरूपेण अन्येषां लकाराणां प्रयोग: दृश्यते ।

लट् वर्तमाने लेट् वेदे भूते लुङ्लङ् लिटस्तथा

विध्याशिषोस्तु लिङ् लोटौ लुट् लृङ् लृट् च भविष्यत:

१ - वर्तमाने - **लट्** - बालक: पठति

२ - परोक्षे **लिट्** (परोक्षे अतीतेकाले) राम: वनं जगाम

३ - अनद्यतने भविष्यत्काले (श्वस्तने) **लुट्** श्व: गोपाल: भुवनेश्वरम् आगन्ता ।

४ - भविष्यति - **लृट्** (सामान्य भविष्यत्काले) हरि: ग्रामं गमिष्यति ।

५- विध्यादौ **लोट् - अनुज्ञार्थे आदेशार्थे चलोट्** सत्यं वद, धर्मं चर, उत्तरं ब्रूहि, लिख

६- अनद्यतने भूते **लङ्** (सामान्ये - अतीत काले) सुजाता ग्रामम् अगच्छत्

७. (क) **विध्यादौलिङ् (विधि - सम्भावना - औचित्य - प्रेरणा निमन्त्रण - सत्कार - प्रार्थनादि व्यापारेषु)**

शिशु: क्षीरं पिबेत् , स्वकर्त्तव्यं पालयेत्

(ख) आशिषि लिङ् (**आशीर्वादे शुभेच्छावचने च**)

कन्या ते सुचिरं जीव्यात्

तव कुशलं भूयात्

८. भूते **लुङ्** (निकटे अतीत काले)

स: चन्द्रम् अद्राक्षीत् ।

९. भविष्यति क्रियातिपत्तौ लृङ् हेतुहेतुमद्भावार्थे (लिङ् निमित्ते लृङ् क्रियातिपतौ - अष्टाध्यायी ३.३.१३९)

वृष्टि: अभविष्यत् चेत् बीजम् अवपस्याम ।

यदि गोपाल: सन्तरणम् अज्ञास्यत् तर्हि जलात् अभेष्यत् ।

Scanned with CamScanner

NOTES

१० - वेदे लेट् -

वैदिकसाहित्ये लट् लोट् लिङ् इत्यादि लकारार्थेषु स्वतन्त्रभावेन लेटलकारस्य प्रयोगः भवति । लौकिक संस्कृतव्याकरणे लेटलकारस्य व्यवहारः नास्ति । यथा - पताति (पतति, अपतत्) तारिषत् (तरेत्, तारयेत्)

भू - धातोः प्रथमपुरुषैकवचने क्रमशः रूपाणि

१. लट् - Present भवति

२. लङ् Imperfect अभवत्

३. लिट् Perfect बभूव

४. लुङ् Aorist अभूत्

५. लुट् First future भविता

६. लृट् Second Futre भविष्यति

७. लोट् Imperative भवतु / भवतात्

८. विधिलिङ् Potential भवेत्

९. आशीर्लिङ् - Benedictive भूयात्

१०.लृङ् Conditional अभविष्यत्

स्मरणीयम्

सर्वदा उत्तमपुरुषक्रियायां कर्तृपदे अस्मद् शब्दस्य व्यवहारः मध्यमपुरुषक्रियायां कर्तृपदे युष्मद् शब्दस्य व्यवहारः, प्रथमपुरुषक्रियायां कर्तृपदे - अस्मद् युष्मद् भिन्न शब्दानां व्यवहारः ।

तदर्थं युष्मद् अर्थबोधकभवत् शब्दस्य कर्तृत्वं प्रथमपुरुषान्तर्गतं भवति

यथा - लट्लकारे - गम् धातोः रूपाणि

	प्रथम पुरुषे	मध्यम पुरुषे	उत्तमपुरुषे
एकवचने	सः / भवान् / गच्छति	त्वं गच्छसि	अहं गच्छामि
द्विवचने	तौ / भवन्तौ गच्छतः	युवां गच्छथः	आवां गच्छावः
बहुवचने	ते / भवन्तः गच्छन्ति	यूयं गच्छथ	वयं गच्छामः

एवं क्रमेण विविधेषु लकारेषु धातूनां विविधानि रूपाणि भवन्ति ।

- अतीत काल बोधक लङ् लकार निमित्तं वर्त्तमान काल लट् लकार क्रियायां साधारणतया 'स्म" शब्दस्य योगः भवति - यथा - रामः अगच्छत् - रामः गच्छति स्म ।
- निकटातीते निकटे भविष्यति काले वा कदाचित् लट् लकारस्य प्रयोगः भवति - यथा - अद्य अहं गच्छामि, अहम् आगच्छामि

Scanned with CamScanner

NOTES

- प्र, परा प्रभृतय: निपाता: (अव्ययशब्दा:) धातो: पूर्वं यदि युक्ता: भवन्ति, तर्हि ते उपसर्गरूपेण कथिता: भवन्ति । उपसर्गयुक्त धातूनां प्रयोगेण क्वचित् परिवर्तनं दृश्यते ।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।

प्रहाराहार संहार विहार परिहारवत् ।

यथा - हृ -धातो अर्थ: हरणे नाम अपहरणे व्यवह्रियते

हृ - हरति - तस्कर: धनं हरति ।

प्र + हृ - प्रहरति - बालक: शुनकं प्रहरति ।

आ + हृ - आहरति- शवरी फलानि / भोजनम् आहरति ।

सम् + हृ - संहरति - दुर्गा असुरान् संहरति ।

वि + हृ - विहरति - राम: उपवने / कानने विहरति ।

परि + हृ - परिहरति - साधु: गर्वम् / आलस्यं परिहरति ।

पुनश्च - उपसर्गप्रयोगेण धातूनां त्रिधा गति: भवति ।

धात्वर्थं वाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते ।

तमेव विशिनष्ट्यन्य: उपसर्गगतिस्त्रिधा ।

१ - कुत्रचित् उपसर्गयोगेन धातो: अर्थं वाधते यथा - आ .. दा .. आददाति / आदत्ते

छात्र: पुस्तकम् आददाति (नयति)

दरिद्र: धनम् आदत्ते (गृह्णाति)

२ - कुत्रचित् अनुवर्तते - यथा - प्र + नम् - प्रणमति

बालक: पितरं प्रणमति (नमति)

३ - कुत्रचित् विशेष भावेन परिपुष्टं करोति

तृ-तरति - मानव: नदीं तरति / (पारंगच्छति)

सम् + तृ - सन्तरति - मत्स्य: नद्यां सन्तरति।

भिक्षुक: भोजने / भोजनेन तुष्यति / सन्तुष्यति

केषांचित् प्रचलित -भ्वादिगणीय धातूनां प्रथमपुरुषैक वचने रूपाणि (परस्मैपदी)

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
भू-	भवति	भविष्यति	अभवत्	भवतु	भवेत्
पठ् -	पठति	पठिष्यति	अपठत्	पठतु	पठेत्
स्था (अवस्थाने)-	तिष्ठति	स्थास्यति	अतिष्ठत्	तिष्ठतु	तिष्ठेत्

Scanned with CamScanner

पा (पाने)	पिबति	पास्यति	अपिबत्	पिबतु	पिबेत्
गम्(गमने)	गच्छति	गमिष्यति	अगच्छत्	गच्छतु	गच्छेत्
दृश् (दर्शने)	पश्यति	द्रक्ष्यति	अपश्यत्	पश्यतु	पश्येत्
नी(नयने)	नयति	नेष्यति	अनयत्	नयतु	नयेत्
ईर्ष्य	ईर्ष्यति	ईर्ष्यिष्यति	ऐर्ष्येत्	ईर्ष्यतु	ईर्ष्येत्
क्रन्द्	क्रन्दति	क्रन्दिष्यति	अक्रन्दत्	क्रन्दतु	क्रन्देत्
हस्	हसति	हसिष्यति	अहसत्	हसतु	हसेत्
क्रीड्	क्रीड़ति	क्रीडिष्यति	अक्रीडत्	क्रीडतु	क्रीडेत्
खेल	खेलति	खेलिष्यति	अखेलत्	खेलतु	खेलेत्
गर्ज्	गर्जति	गर्जिष्यति	अगर्जत्	गर्जतु	गर्जेत्
गै	गायति	गास्यति	अगायत्	गायतु	गायेत्
घ्रा(आघ्राणे)	जिघ्रति	घ्रास्यति	अजिघ्रत्	जिघ्रतु	जिघ्रेत्
जि(जये)	जयति	जेष्यति	अजयत्	जयतु	जयेत्
जीव (जीवनधारणे)	जीवति	जीविष्यति	अजीवत्	जीवतु	जीवेत्
त्यज् (त्यागे)	त्यजति	त्यक्ष्यति	अत्यजत्	त्यजतु	त्यजेत्
दह् (दहने)	दहति	धक्ष्यति	अदहत्	दहतु	दहेत्
नम् (नमस्कारे)	नमति	नंस्यति	अनमत्	नमतु	नमेत्
निन्द् (निन्यायाम्)	निन्दति	निन्दिष्यति	अनिन्दत्	निन्दतु	निन्देत्
वद् (कथने)	वदति	वदिष्यति	अवदत्	वदतु	वदेत्
रक्ष् (रक्षणे)	रक्षति	रक्षिष्यति	अरक्षत्	रक्षतु	रक्षेत्
वस् (वासे)	वसति	वत्स्यति	अवसत्	वसतु	वसेत्

केषांचित् आत्मनेपदीधातूतां रूपाणि

लभ् (लाभे)	लभते	लप्स्यते	अलभत	लभताम्	लभेत
सेव्(सेवने, आश्रये, भोगे)	सेवते	सेविष्यते	असेवत	सेवताम्	सेवेत
परा..अय(पलायने)	पलायते	पलायिष्यते	पलायत	पलायताम्	पलायेन
ईक्ष्(दर्शने)	ईक्षते	ईक्षिष्यते	ऐक्षत	ईक्षेताम्	ईक्षेत
क्षम् (क्षमायाम्)	क्षमते	क्षमिष्यते	अक्षमत	क्षमताम्	क्षमेत
गाह (स्नाने)	गाहते	गाहिष्यते	अगाहत	गाहताम्	गाहेत

NOTES

Scanned with CamScanner

NOTES

चेष्ट्(चेष्टायाम्)	चेष्टते	चेष्टिष्यते	अचेष्टत	चेष्टताम्	चेष्टेत
त्रै (रक्षणे)	त्रायते	त्रास्यते	अत्रायत	त्रायताम्	त्रायेत
दय्(दयायाम्)	दयते	दयिष्यते	अदयत	दयताम्	दयेत
बाध् (बाधायाम्)	बाधते	बाधिष्यते	अबाधत	बाधताम्	बाधेत
भाष् (कथने)	भाषते	भाषिष्यते	अभाषत	भाषताम्	भाषेत
यत् (यत्ने)	यतते	यतिष्यते	अयतत	यतताम्	यतेत
वृत् (स्थिरे)	वर्तते	वर्तिष्यते	अवर्त्तत	वर्तताम्	वर्तेत
वृध् (वृद्धौ)	वर्धते	वर्धिष्यते	अवर्धत	वर्धताम्	वर्धेत
शङ्क् (आशङ्कायाम्)	शङ्कते	शङ्किष्यते	अशङ्कत	शङ्कताम्	शङ्केत
शुभ् (शोभायाम्)	शोभते	शोभिष्यते	अशोभत	शोभताम्	शोभेत
सह(सहने)	सहते	सहिष्यते	असहत	सहताम्	सहेत
हद(पुरीषोत्सर्गे)	हदते	हदिष्यते	अहदत	हदताम्	हदेत

केषांचित् उभयपदी धातूनां रूपाणि -

हृ - (हरणे)	पं.	हरति	हरिष्यति	अहरत्	हरतु	हरेत्
	आं.	हरते	हरिष्यते	अहरत	हरताम्	हरेत
धृ (धारणे)	प.	धरति	धरिष्यति	अधरत्	धरतु	धरेत्
	आ.	धरते	धरिष्यते	अधरत	धरताम्	धरेत
धाव्(धावने)	प.	धावति	धाविष्यति	अधावत्	धावतु	धावेत्
	आ.	धावते	धाविष्यते	अधावत	धावताम्	धावेत
पच् (पाके)	प.	पचति	पक्ष्यति	अपचत्	पचतु	पचेत्
	आं.	पचते	पक्ष्यते	अपचत	पचताम्	पचेत
राज(शोभायाम्)	प.	राजति	राक्ष्यति	अराजत्	राजतु	राजेत्
	आ.	राजते	राक्ष्यते	अराजत	राजताम्	राजेत
वह् (वहने)	प.	वहति	वक्ष्यति	अवहत्	वहतु	वहेत्
	आ.	वहते	वक्ष्यते	अवहत	वहताम्	वहेत

अदादिगणीय धातूनाम् अनेकत्र स्वतंत्ररूपेण रूपाणि भवन्ति । तद् व्याकरण पुस्तकं दृष्ट्वा अभ्यास: करणीय: ।

परस्मैपदी - 'अस्" धातो: बहुत्र व्यवहार हेतो:। पञ्चसु लकारेषु क्रमश: रूपाणि -

Scanned with CamScanner

NOTES

अस् - सत्तायाम्

लट्

एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पु: अस्ति	स्त:	सन्ति
म:पु: असि	स्थ:	स्थ
उ.पु. अस्मि	स्व:	स्म:

लृट्

एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पु: भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
म:पु: भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उ.पु. भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

लङ्

एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पु: आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म:पु: आसी:	आस्तम्	आस्त
उ.पु. आसम्	आस्व	आस्म

लोट्

एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पु: अस्तु	स्ताम्	सन्तु
म:पु: एधि	स्तम्	स्त
उ.पु. असानि	असाव	असाम

विधिलिङ्

एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पु: स्यात्	स्याताम्	स्यु:
म:पु: स्या:	स्यातम्	स्यात
उ.पु. स्याम्	स्याव	स्वाम

केषांचन धातूनां प्रथमपुरूषैकवचने रूपाणि

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
विद् (ज्ञाने)	वेत्ति	वेदिष्यति	अवेत्	वेत्तु	विद्यात्
दुह् (दोहने)	दोग्धि	धोक्ष्यति	अधोक्	दोग्धु	दुह्यात्
अद् (भोजने)	अत्ति	अत्स्यति	आदत्	अत्तु	अद्यात्

Scanned with CamScanner

NOTES

इण् (गतौ)	एति	एष्यति	ऐत्	एतु	इयात्
या (गमने)	याति	यास्यति	अयात्	यातु	यायात्
पा (रक्षणे)	पाति	पास्यति	अपात्	पातु	पायात्
भा (शोभायाम्)	भाति	भास्यति	अभात्	भातु	भास्यति
रुद् (क्रन्दने)	रोदिति	रोदिष्यति	अरोदत्	रोदितु	रुद्यात्
शास् (शासने)	शास्ति	शासिष्यति	अशात्	शास्तु	शिष्यात्
हन् (हिंसायाम्)	हन्ति	हनिष्यति	अहन्	हन्तु	हन्यात्
श्वस्(श्वासक्रियायाम्)	श्वसिति	श्वसिष्यति	अश्वसत्	श्वसितु	श्वसेत्
स्ना(स्नाने)	स्नाति	स्नास्यति	अस्नात्	स्नातु	स्नायात्
स्वप्(शयने)	स्वपिति	स्वप्स्यति	अस्वपत्	स्वपितु	स्वपेत्

आत्मनेपदी प्रथमपुरुषैकवचने रूपाणि

आस् (उपवेषने)	आस्ते	आसिष्यते	आस्त	आस्ताम्	आसीत्
शी (शयने)	शेते	शयिष्यते	अशेत	शेताम्	शयीत

उभयपदी धातु रूपाणि

ब्रु - (वाचि)	प.	ब्रवीति/आहवक्ष्यति	अब्रवीत्	ब्रवीतु	ब्रूयात्
	आ.	ब्रूते	वक्ष्यते	अब्रूत	ब्रुताम् ब्रूयात
स्तु (स्तुतौ)	प.	स्तौति/स्तवीति	स्तोष्यति	अस्तौत्	स्तौतुस्तुयात्
	आ.	स्तुते	स्तोष्यते	अस्तुत	स्तुताम् स्तुवीत

केषांचित् जुहोत्यादि (ह्वादि) गणीय धातूनां (परस्मैपदी) पञ्चसु लकारेषु प्रथमपुरुषैकवचने रूपाणि

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
हु(होमे)	जुहोति	होष्यति	अजुहोत्	जुहोतु	जुहुयात्
भी(भये)	बिभेति	भेष्यति	अबिभेत्	बिभेतु	बिभीयात्
दा(दाने)	ददाति	दास्यति	अददात्	ददातु	दद्यात्
हा(त्यागे)	जहाति	हास्यति	अजहात्	जहातु	जह्यात्
धा(धारणे)	दधाति	धास्यति	अदधात्	दधातु	दध्यात्

आत्मनेपदी

दा(दाने)	दत्ते	दास्यते	अदत्त	दत्ताम्	ददीत
धा(धारणे)	धत्ते	धास्यते	अधत्त	धत्ताम्	दधीत

Scanned with CamScanner

केषांचित् दिवादिगणीय धातूनां (परस्मैपदी) प्रथमपुरुषैकवचने पञ्चसु लकारेषु रूपाणि

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
दिव् (क्रीड़ायां शोभायां च)	दीव्यति	देविष्यति	अदीव्यत्	दीव्यतु	दीव्येत्
अस् (क्षेपणे)	अस्यति	असिष्यति	आस्यत्	आस्यतु	आस्येत्
कुप् (कोपे)	कुप्यति	कोपिष्यति	अकुप्यत्	कुप्यतु	कुप्येत्
क्रुध(क्रोधे)	क्रुध्यति	क्रोत्स्यति	अक्रुध्यत्	क्रुध्यतु	क्रुध्येत्
द्रुह्(द्रोह)	द्रुह्यति	द्रोहिष्यति	अद्रुह्यत्	द्रुह्यतु	द्रुह्येत्
क्षुध् (क्षुधायाम्)	क्षुध्यति	क्षोत्स्यति	अक्षुध्यत्	क्षुध्यतु	क्षुध्येत्
नश्(नाशे)	नश्यति	नङ्क्ष्यति	अनश्यत्	नश्यतु	नश्येत्
नृत्(नर्तने)	नृत्यति	नर्तिष्यति	अनृत्यत्	नृत्यतु	नृत्येत्
तुष्(सन्तोष)	तुष्यति	तोक्ष्यति	अतुष्यत्	तुष्यतु	तुष्येत्
दुष्(दोषयुक्ते)	दुष्यति	दोक्ष्यति	अंदुष्यत्	दुष्यतु	दुष्येत्
पुष्(पोषणे)	पुष्यति	पोक्ष्यति	अपुष्यत्	पुष्यतु	पुष्येत्
सिध्(सिद्धौ)	सिध्यति	सेत्स्यति	असिध्यत्	सिध्यतु	सिध्येत्
स्निह्(स्नेहे)	स्निह्यति	स्नेहिष्यति	अस्निह्यत्	स्निह्यतु	स्निह्येत्
		आत्मनेपदी			
बुध्(बोधने)	बुध्यते	भोत्स्यते	अबुध्यत	बुध्यताम्	बुध्येत
विद् (सत्तायाम्)	विद्यते	वेत्स्यते	अविद्यत	विद्यताम्	विद्येत
मन्(मनने)	मन्यते	मंस्यते	अमन्यत	मन्यताम्	मन्येत
युज्(योग्ये)	युज्यते	योक्ष्यते	अयुज्यत	युज्यतान्	युज्येत

केषांचित् स्वादिगणीय धातूनां (परस्मैपदी) पञ्चसु लकारेषु प्रथमपुरुषैकवचने रूपाणि

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
सु(स्नाने, यज्ञे, सेचने)	सुनोति	सोष्यति	असुनोत्	सुनोतु	सुनुयात्
आप् (व्याप्तौ, लाभे)	आप्नोति	आप्स्यति	आप्नोत्	आप्नोतु	आप्नुयात्
शक्(सामर्थ्ये)	शक्नोति	शक्ष्यति	अशक्नोत्	शक्नोतु	शक्नुयात्
श्रु(श्रवणे)	शृणोति	श्रोष्यति	अशृणोत्	शृणोतु	शृणुयात्
वृ (वरणे)	वृणोति	वरिष्यति	अवृणोत्	वृणोतु	वृणुयात्
चि(चयने)	चिनोति	चेष्यति	अचिनोत्	चिनोतु	चिनुयात्

NOTES

Scanned with CamScanner

NOTES

आत्मनेपदी

चि(चयने)	चिनुते	चेष्यते	अचिनुत	चिनुताम्	चिन्वीत
वृ (वरणे)	वृणुते	वरी(रि)ष्यते	अवृणुत	वृणुताम्	वृण्वीत
अश(प्राप्तौ)	अश्नुते	अक्ष्यते	आश्नुत	अश्नुताम्	अश्नुवीत

केषांचित् तुदादिगणीय धातूनां (परस्मैपदी) पञ्चसु लकारेषु प्रथमपुरुषैकवचने रूपाणि

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
तुद्(पीड़ने)	तुदति	तोत्स्यति	अतुदत्	तुदतु	तुद्यात्
इष् (इच्छायाम्)	इच्छति	एषिष्यति	ऐच्छत्	इच्छतु	इच्छेत्
प्रच्छ्(प्रश्ने)	पृच्छति	प्रक्ष्यति	अपृच्छत	पृच्छतु	पृच्छेत्
विश् (प्रवेशे)	विशति	वेक्ष्यति	अविशत्	विशतु	विशेत्
सृज्(सर्जन)	सृजति	स्रक्ष्यति	असृजत्	सृजतु	सृजेत्
मुच्(त्यागे)	मुञ्चति	मोक्ष्यति	अमुञ्चत्	मुञ्चतु	मुञ्चेत्
सिच् (सेचने)	सिञ्चति	सेक्ष्यति	असिञ्चत्	सिञ्चतु	सिञ्चेत्
क्षिप् (क्षेपणे)	क्षिपति	क्षेप्स्यति	अक्षिपत्	क्षिपतु	क्षिपेत्

आत्मनेपदी

मृ(मरणे)	म्रियते	मरिष्यति	अम्रियत	म्रियताम्	म्रियेत
आदृ (आदरे)	आद्रियते	आदरिष्यते	आद्रियत	आद्रियताम्	आद्रियेत
लज्ज (लज्जायाम्)	लज्जते	लज्जिष्यते	अलज्जत	लज्जताम्	लज्जेत

केषांचित् रुधादिगणीयधातूनां (परस्मैपदी) रूपाणि पञ्चसु लकारेषु प्रथमपुरुषैकवचने

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
रुध् (अवरोधे)	रुणद्धि	रोत्स्यति	अरुणत्	रुणद्धु	रुन्ध्यात्
छिद् (छेदने)	छिनत्ति	छेत्स्यति	अच्छिनत्	छिनत्तु	छिन्द्यात्
हिंस् (हिंसायाम्)	हिनस्ति	हिंसिष्यति	अहिनत्	हिनस्तु	हिंस्यात्
भुज्(पालने)	भुनक्ति	भोक्ष्यति	अभुनक्	भुनक्तु	भुञ्ज्यात्

आत्मनेपदी

भुज्(भागे/भोजने)	भुंक्ते	भोक्ष्यते	अभुंक्त	भुंक्ताम्	भुञ्जीय

Scanned with CamScanner

केषांचित् 'तनादिगणीय" धातूनां रूपाणि .. पञ्चसु लकारेषु प्रथमपुरुषैकवचने

परस्मैपदी

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
तन् (विस्तारे)	तनोति	तनिष्यति	अतनोत्	तनोतु	तनुयात्
कृ (करणे)	करोति	करिष्यति	अकरोत्	करोतु	कुर्यात्

आत्मनेपदी

तन्(विस्तारे)	तनुते	तनिष्यते	अतनुत	तनुताम्	तन्वीत
कृ(करणे)	कुरुते	करिष्यते	अकुरुत	कुरुताम्	कुर्वीत
मन्(बोधने)	मनुते	मनिष्यते	अमनुत	मनुताम्	मन्वीत

व्यापकव्यवहारहेतोः 'कृ'धातोः परस्मैपदे पञ्चसु लकारेषु प्रथम -मध्यम - उत्तमपुरुषेषु त्रिषुवचनेषु रूपाणि

लट्

	एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पुः	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म:पुः	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ.पु.	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट्

	एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पुः	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म:पुः	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ.पु.	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लङ्

	एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पुः	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म:पुः	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ.पु.	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट्

	एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पुः	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म:पुः	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ.पु.	करवाणि	करवाव	करवाम

NOTES

Scanned with CamScanner

NOTES

विधिलिङ्

	एकवचने	द्विवचने	बहुवचने
प्र:पुः	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म:पुः	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात्
उ.पु.	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

केषांचित् 'क्र्यादिगणीय" परस्मैपदिधातूनां पञ्चसु लकारेषु प्रथमपुरुषैकवचने रूपाणि

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
क्री(क्रये)	क्रीणाति	क्रेष्यति	अक्रीणात्	क्रीणातु	क्रीणीयात्
अश् (भोजने)	अश्नाति	अशिष्यति	अश्नात्	अश्नातु	अश्नीयात्
बन्ध् (बन्धने)	बध्नाति	भन्स्यति	अबध्नात्	बध्नातु	बध्नीयात्
मन्थ् (मथने)	मथ्नाति	मन्थिष्यति	अमथ्नात्	मथ्नातु	मथ्नीयात्
ग्रह् (गृहणे)	गृह्णाति	ग्रहीष्यति	अगृह्णात्	गृह्णातु	गृह्णीयात्
पूञ् (पवित्रीकरणे)	पुनाति	पविष्यति	अपुनात्	पुनातु	पुनीयात्
वृञ् (वरणे)	वृणाति	वरिष्यति	अवृणात्	वृणातु	वृणीयात्
ज्ञा(ज्ञाने)	जानाति	ज्ञास्यति	अजानात्	जानातु	जानीयात्

आत्मनेपदी

ज्ञा(ज्ञाने)	जानीते	जास्यते	अजानीत	जानीताम्	जानीत
क्री (क्रयणे)	क्रीणीते	क्रेष्यते	अक्रीणीत	क्रीणीताम्	क्रीणीत
ग्रह् (ग्रहणे)	गृह्णीते	ग्रहीष्यते	अगृह्णीत	गृह्णीताम्	गृह्णीत
वृञ् (वरणे)	वृणीते	वरिष्यते	अवृणीत	वृणीताम्	वृणीत

केषांचित् 'चुरादिगणीय" परस्मैपदिधातूनां पञ्चसु लकारेषु प्रथमपुरुषैकवचने रूपाणि

	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
चुर्(चौरकार्ये)	चोरयति	चोरयिष्यति	अचोरयत्	चोरयतु	चोरयेत्
पूज् (पूजने)	पूजयति	पूजयिष्यति	अपूजयत्	पूजयतु	पूजयेत्
कथ(कथने)	कथयति	कथयिष्यति	अकथयत्	कथयतु	कथयेत्
क्षाल् (धौते)	क्षालयति	क्षालयिष्यति	अक्षालयत्	क्षालयतु	क्षालयेत्
गण्(गणने)	गणयति	गणयिष्यति	अगणयत्	गणयतु	गणयेत्
अर्च (अर्चने)	अर्चयति	अर्चयिष्यति	आर्चयत्	अर्चयतु	अर्चयेत्
अर्ज् (अर्जने)	अर्जयति	अर्जयिष्यति	आर्जयत्	अर्जयतु	अर्जयेत्

Scanned with CamScanner

NOTES

पाल्(रक्षणे/पालने)	पालयति	पालयिष्यति	अपालयत्	पालयतु	पालयेत्
दण्ड् (दण्डे)	दण्डयति	दण्डयिष्यति	अदण्डयत्	दण्डयतु	दण्डयेत्
चिन्त् (चिन्तने)	चिन्तयति	चिन्तयिष्यति	अचिन्तयत्	चिन्तयतु	चिन्तयेत्
भक्ष् (भक्षणे)	भक्षयति	भक्षयिष्यति	अभक्षयत्	भक्षयतु	भक्षयेत्
मूत्र् (मूत्रत्यागे)	मूत्रयति	मूत्रयिष्यति	अमूत्रयत्	मूत्रयतु	मूत्रयेत्
रच (रचनायाम्)	रचयति	रचयिष्यति	अरचयत्	रचयतु	रचयेत्

आत्मनेपदी

वञ्च्(प्रतारणे)	वञ्चयते	वञ्चयिष्यते	अवञ्चयत	वञ्चयताम्	वञ्चयेत
भर्त्स् (निन्दायाम्)	भर्त्सयते	भर्त्सयिष्यते	अभर्त्सयत	भर्त्सयताम्	भर्त्सयेत
प्र+अर्थ (प्रार्थनायाम्)	प्रार्थयते	प्रार्थयिष्यते	प्रार्थयत	प्रार्थयताम्	प्रार्थयेत
मन्त्र् (मन्त्रणायाम्)	मन्त्रयते	मन्त्रयिष्यते	अमन्त्रयत	मन्त्रयताम्	मन्त्रयेत

विशेषणरूपेण धातूनां प्रयोग:

१. अनु + भू - बालक: सुखम् अनुभवति

२. परा + भू - दु:खात् परा भवति (पराभवं प्राप्नोति)

३. प्र + भू - हिमालयात् प्रभवति (प्रथम प्रकाशने)

४. सम् + भू - सम्भवामि युगे युगे (जन्मग्रहणे)

५. अधि + स्था - वृक्षमूलम् अधितिष्ठति छागल: ।

६. उत् + स्था - (जागरणे) आसनात् उत्तिष्ठति छात्र: ।

७. सम् + स्था - (स्थिरे) स: स्वधर्मे संतिष्ठते ।

८. अधि + गम् (प्राप्तौ) ज्ञानी शान्तिम् अधिगच्छति ।

९. अनु + गम् (अनुगमने) पितरमनुगच्छति पुत्र: ।

१०. अव + गम् (अवगतौ) छात्रा: रहस्यम् अवगच्छन्तु

११. आ + गम् (आगमने) - सखे ! आगच्छ!

१२. सम् + गम् (मिलने) साधु: साधून् संगच्छति ।

१३. आ + नी (आनयने) आपणात् द्रव्यांणि आनयतु ।

१४. दन्श् (दंशने) मशक: दशति

१५. गुञ्ज् (गुञ्जने) भ्रमरा: उपवने गुञ्जन्ति ।

१६. सद् (शिथिले / विषादे) सीदन्ति मम गात्राणि ।

१७. ईक्ष् (पर्यवेक्षणे) न कामवृत्ति: वचनीयम् ईक्षते ।

Scanned with CamScanner

NOTES

१८. अप + भाष् (निन्दायाम्) मूर्खा: गुरुम् अपभाषन्ते ।

१९. वप् (वपने) कृषक: धान्यबीजं वपति ।

२०. वप् (मुण्डने) नापित: बालकस्य केशान् वपति ।

२१. दा (छेदने) - कृषक: तृणानि दाति

२२. उप + आस् (उपासनायाम् / समीपस्थाने) छात्र: शिक्षकमुपास्ते । भक्ता: गणपतिम् उपासते ।

२३. परि + धा (परिधाने) वधू: शाटीं परदधाति ।

२४. शुष् (शुष्क) ग्रीष्मकाले जलाशया: शुष्यन्ति ।

२५. शम् (शान्तौ) क्षुधा भोजनेन शाम्यति ।

२६. नि + शमि (श्रवणे) भक्त: मन्त्रं निशमयति ।

२७. नि + शमि (दर्शने) भक्त: देवं निशामयति ।

२८. उप + पद् (योग्यतायाम्) नैतत् त्वयि उपपद्यते ।

२९. प्रति + पद् (आश्रये) ये यथा मां प्रपद्यन्ते तां तथैव भजाम्यहम् ।

३०. प्रति + पद् (अङ्गीकारे) शुद्धम् उत्तरम् अत्र प्रतिपद्यते ।

३१. अप + हन् (दूरीकरणे) देवा: मम दुरितम् अपघ्नन्तु ।

३२. अभि + हन् (आघाते) युवका: कान् अपि न अभिघ्नन्तु ।

३३. आ + हन् (प्रहारे) बालक: शुनकम् आहन्ति ।

३४. नि + हन् (निहते) सैनिका: शत्रून् निघ्नन्तु ।

३५. उत् + सृज् (त्यागे) पापधनम् उत्सृजेत् ।

३६. अधि + क्षिप् (तिरस्कारे) किमर्थं माम् / मह्यम् अधिक्षिपति

३७. आ + क्षिप् (दोषारोपे) अपराधं मयि मा आक्षिप ।

३८. सम् + क्षिप् (संक्षेपणे) भवत: कथां संक्षिपतु ।

३९. आ + ह्वे (आह्वाने) गुरु: छात्रम् आह्वयति ।

४०. आ + ह्वे (आस्फालने / युद्धे) वीर: वीरम् आह्वयते ।

४१. प्र + ईर् (प्रेरणे) - पिता पुत्रं वनं / वनाय प्रेरयति ।

४२. अनु + कृ (अनुकरणे) छात्र: शिक्षकम् अनुकरोति ।

४३. अप + कृ (अपकारे) दुर्जन: सज्जनं प्रति अपकरोति ।

४४. उप + कृ (उपकारे) औषधि: शरीरम् उपकरोति ।

Scanned with CamScanner

NOTES

४५. सम् + कृ (संस्कारे) तपस्या चित्तं संस्करोति ।

४६. परा + कृ (प्रत्याख्याने) न्यायालयः आवेदनं पराकरोति ।

४७. वि + कृ (विकारे) लोभः मनः विकरोति ।

४८. अधि + कृ (अधिकारे) वैदेशिकाः भारतम् अधिकुर्वन्ति स्म ।

४९. परि + कृ (परिष्करणे) माता गृहं परिष्करोति ।

५०. पुरस् + कृ (पुरस्कारे) राजा सेवकान् पुरस्करोति । (अग्रेकरोति वा इत्यर्थः)

५१. तिरस् + कृ (तिरस्कारे) साधुः पापं तिरस्करोति ।

५२. निर् + आ + कृ (निराकरणे) सर्वकारः अभावं निराकरोति ।

५३. आविस् + कृ (आविष्कारे) वैज्ञानिकाः ग्रहान् आविष्कुर्वन्ति ।

५४. नमस् + कृ (प्रणामे) गुरुजनान् नमस्कुरुत ।

५५. वहिस् + कृ (वहिष्कारे) सैनिकाः देशात् शत्रून् वहिष्कुर्वन्ति ।

५६. अलम् + कृ (भूषणे) विद्वांसः सभाम् अलंकुर्वन्ति ।

५७. दूर् + कृ (दूरीकरणे) मातः दुःखं दूरीकुरु ।

५८. स्थिर + कृ (स्थिरी करणे) पिता पुत्रस्य विवाहं स्थिरी करोति ।

५९. सत् + कृ (सत्कारे) भारतीयाः अतिथीन् सत् कुर्वन्ति ।

६०. प्रति + कृ (प्रतिकारे) चिकित्सकः रोगं प्रतिकरोति ।

६१. अनु + ज्ञा (अनुमतौ) मां गमनाय अनुजानीहि

६२. अभि + ज्ञा (स्मरणे) दुष्यन्तः शकुन्तलां नाभिजानाति स्म ।

६३. अव + ज्ञा (अनादरे) मूर्खाः साधून् अवजानन्ति

६४. प्रति + ज्ञा (प्रतिज्ञायां / शपथे) मन्त्री देशसेवार्थं प्रतिजानाति ।

धातुरूपेषु सामान्य भ्रमनिराकरणम्

१. अहं धनं लप्स्यामि (लप्स्ये)

२. भिक्षुकः ग्रामे अभिक्षत् (अभिक्षत)

३. यूयं मातुलगृहे अवर्त्तन्त (अवर्त्तध्वम्)

४. वयं गीतं गास्यथ (गास्यामः)

५. सः तव उपदेशम् अविस्मरत् (व्यस्मरत्)

६. अहं लगुड़ेन सर्पम् अहन् ।(अहनम्)

७. गुरुः सर्वं शासति (शास्ति)

Scanned with CamScanner

NOTES

८. भवान् पुत्रं शासतु (शास्तु)

९. यूयम् अधुना ग्रामं याहि (यात)

१०. ते नक्तं कार्यम् अकरोत् (अकुर्वन् (पुं) अकुरुताम् (स्त्री)

११. बालकाः मां बिभ्यन्ति । मत् बिभ्यति ।

१२. त्वं कस्मात् अविभेत् (अबिभेः)

१३. वयं धनम् अददाम (अदद्म)

१४. विप्रः गणेशाय पुष्पं ददतु । (ददातु)

१५. ते गीतं शृणुयात् । (शृणुयुः)

१६. अहं धनं प्राप्तुवान् (प्राप्तवान् - पुं) (प्राप्तवती - स्त्री)

१७. वयं पुष्पाणि नेष्यथः (नेष्यामः)

१८. आवां कथां शृणुथः (शृण्वः)

१९. सः यशं प्राप्नुहि (यशः प्राप्नोतु)

२०. भवान् तस्मै मा क्रुध्य (क्रुध्यतु)

२१. तेषां मने दुःखम् अज्ञायन्त । (मनसि, अजायत)

२२. भीताः बालकाः पलायन्ति - (पलायन्ते)

२३. चौरः अपलायत् - (पलायत)

२४. मेघं दृश्यन् मयूरः नृत्यन्ति (पश्यन् नृत्यति)

२५. मित्रं त्वाम् उक्तवान् - (उक्तवत्)

२६. माता दुहितरम् उक्तवान् - (उक्तवती)

२७. सःपुत्राय पत्रम् अप्रेरयत् - (प्रैरयत्)

२८. वने मुनयः अनिवसन् - (न्यवसन्)

२९. मृगः वने अप्रविशत् - (प्राविशत्)

३०. बालकाः नद्याम् असन्तरन् - (समतरन्)

प्रेरणार्थक णिजन्त क्रिया प्रयोगः

१. गुरुः छात्रं पाठयति

२. साधुः जनान बोधयति

३. पिता पुत्रं विपणिं गमयति

४. वायुः शाखां चलयति

Scanned with CamScanner

५. सारथिः यानं चालयति / राजा देशं चालयति

६. अतिथिः प्रदीपं ज्वलयति / ज्वालयति ।

७. माता शिशुं भोजयति ।

८. पितामहः नप्तारं हासयति

९. लोभः दुःखं जनयति ।

१०. शिक्षकः मानचित्रं दर्शयति ।

११. मातामही गीतं श्रावयति ।

१२. चित्रकरः रञ्जयति ।

१३. व्याधः पशून् रजयति ।

१४. नेता गौरवं स्मारयति ।

१५. अधिकारी निर्देशं ज्ञापयति ।

सन्नन्त (इच्छार्थक) क्रिया प्रयोगः

१. दरिद्रः धनम् ईप्सति (आप्तुम् इच्छति)

२. सन्यासी हिमालयं जिगमिषति (गन्तुम् इच्छति)

३. यजमानः यज्ञं चिकीर्षति (कर्तुम् इच्छति)

४. पुत्रः पितरौ सिषेविषते (सेवितुम् इच्छति)

५. वेदस्य रहस्यं जिज्ञासते छात्रः (ज्ञातुम् इच्छति)

६. वधूः सर्वान् शुश्रूषते (श्रोतुम् इच्छति)

७. युवकः चित्राणि दिदृक्षते (द्रष्टुम् इच्छति)

८. शिष्यः शिक्षकं पिपृच्छिषति (प्रष्टुम् इच्छति)

९. भारतं पाकिस्थानं जिगीषति (जेतुम् इच्छम)

१०. साधुः दरिद्रेभ्यः दित्सति । (दातुम् इच्छति)

११. जननी ओदनं पिपक्षति (पक्तुम् इच्छति)

१२. वक्ता विवक्षति (वक्तुम् इच्छति)

१३. तृषार्तः जलं पिपासति । (पातुम् इच्छति)

यङ्न्त (पुनः पुनः अतिशयार्थे) प्रयोगः

१. पुनः पुनः अतिशयेन भवति - बोभूयते ।

२. पुनः पुनः अतिशेन गच्छति - जङ्गम्यते

NOTES

Scanned with CamScanner

NOTES

३. पुन:पुन: अतिशयेन ददाति - देदीयते

४. पुन: पुन: अतिशयेन दीप्यते - देदीप्यते

५. पुन: पुन: अतिशयेन रोदिति - रोरुद्यते

नाम धातु रूप प्रयोग:

१. आत्मन: पुत्रमिच्छति - पुत्रीयति

२. आत्मन: बन्धुमिच्छति - बन्धूयति

३. आत्मन: धनमिच्छति - धनीयति

४. लोभार्थे धनमिच्छति - धनायति

५. नम: करोति - नमस्यति

६ तप: करोति - तपस्यति

७. पुत्रमिव आचरति (तं पुत्रवत् अनुभूय कर्म करोति) पुत्रीयति

८. पितरमिव आचरति (तं पितरं मत्वा आचरति) पित्रीयति

९. धवलं करोति - धवलयति

१०. स्वयं पुत्र: इव आचरति - पुत्रयति / पुत्रायते

११. शब्दं करोति - शब्दायते

१२. कलहं करोति - कलहायते

१३. सुखमनुभवति - सुखायते

१४. दु:खमनुभवति - दु:खायते

१५. फेनमुद्वमति - फेनायते

१६. वाष्पमुद् वमति - वाष्पायते

१७. अपण्डित: पण्डित: भवति - पण्डितायते

१८. पवित्रं करोति - पवित्रयति

१९. दृढं कराति - द्रढ़यति

२०. बहुलं करोति - बहयति

❖❖❖

Scanned with CamScanner

UNIT - III

कारक विभक्ति - वाक्यनिर्माण ज्ञानम्

कारक - विभक्ति ज्ञानेन सह विविधै: पदै: वाक्य निर्माणं सुकरं भवति ।

कारकम् - वाक्य मध्ये क्रियया सह यस्य पदस्य प्रत्यक्षरूपेण सम्बन्ध: विद्यते, तत्र कारकं कथ्यते । करोति, क्रियां सम्पादयति इति कारकम् । क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्, क्रिया जनकत्वं कारकत्वम् इति ।

यथा - गोपालस्य पुत्र: राम: विद्यालयं यानेन पठनाय गृहात् सपाददशवादने शीघ्रं शीघ्रं याति ।

अत्र क्रियापदम् - याति

<u>प्रश्ना:</u> <u>उत्तराणि</u>

क: याति ? <u>राम:</u> याति (कर्ता)

कं स्थानं याति ? <u>विद्यालयं</u> याति (कर्म)

केन याति ? <u>यानेन</u> याति (करणम्)

कस्मै याति ? <u>पठनाय</u> याति (सम्प्रदानम्)

कस्मात् याति ? <u>गृहात्</u> याति (अपादानम्)

कदा (कस्मिन् समये) याति <u>सपाददशवादने</u> याति (आधार:)

कीदृशं याति ? <u>शीघ्रं शीघ्रं</u> याति (क्रियाविशेषणम्)

अस्मिन् वाक्ये **याति** क्रियाम् अवलम्ब्य प्रश्ना: उत्तराणि च भवन्ति

किन्तु **याति** क्रियया सह **गोपालस्य** पुत्र: इति पदद्वयस्य प्रत्यक्षसम्बन्धो नास्ति । राम: इति पदं गोपालस्य पुत्र: - इति परस्परं सम्बधिते । अत: गोपालस्य पुत्र: राम:, अत्र गोपालस्य - केवलं सम्बन्धपदम्, नतु क्रियाजनकत्वगुणाभावात् कारकत्वं नास्ति ।

अत: उच्यते सम्बन्धस्य क्रियाभावात् कारकत्वं न विद्यते !

एतदर्थं कारकाणि षट् - विभक्तय: सप्त
कर्त्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च
अपादानं तथाधार: इत्याहु: कारकाणि षट्
अपादानाधिकरणे - इति पाठान्तरम् ।

षट्कारकाणि - सप्तविभक्तय:

कर्त्तृकारकम् - प्रथमाविभक्ति:

कर्मकारकम् - द्वितीया विभक्ति:

करण कारकम् - तृतीया विभक्ति:

NOTES

सम्प्रदान कारकम् - चतुर्थी विभक्तिः

अपादान कारकम् - पञ्चमी विभक्तिः

सम्बन्धपदम् - षष्ठी विभक्तिः

अधिकरण कारकम् - सप्तमी विभक्तिः

विभक्तिः - संख्या कारक बोधयित्री विभक्तिः

विभक्तिः पदानां संख्या परिमाणं कारकसम्बन्धं च बोधयति, साधारण भावेन पदस्य विभागं च दर्शयति कस्मिन् पदे किमर्थं किं कारकं का विभक्तिः भवतः इति स्पष्टं भवति । येन सङ्केतेन पदस्य वचनं कारकं वा प्रकाशितं भवति तद् भवति विभक्ति चिह्नम् ।

कारक विभक्तिः

क्रिया योगेन यत्र विभक्तिः भवति सा कारकविभक्तिः

यथा - १. शिवं नमस्कुरु । २. दरिद्राय धनं देहि ।

१. कर्मणि द्वितीया २ - दरिद्राय सम्प्रदाने चतुर्थी, धनं - कर्मणि २या

उपपद विभक्तिः

क्रियां विना केवलं पदयोगेन यत्र विभक्तिः तत्र उपपद विभक्तिः। यथा - १ - शिवाय नमः । २ - विवादेन अलम्

अत्र नमः उपपदयोगेन - चतुर्थी । अलम् उपपदयोगेन - तृतीया

विशेषद्रष्टव्यम्

उक्तः - कथितः, मुख्यरूपेण परिचितः ।

क्रियापदं सर्वदा उक्तं पदम् अनुसरति

रामः ग्रामं गच्छति - **रामः** उक्तः

अनुक्तः - न उक्तः गौण रूपेण परिचितः वक्रेण उक्तः इत्यर्थः

रामेण ग्रामः गम्यते ।

अत्र - रामेण - अनुक्तः - ग्रामः उक्तः

कर्तृकारकम् - प्रथमाविभक्तिः

१. प्रातिपदिकार्थ लिङ्ग परिमाण वचनमात्रे प्रथमा / प्रातिपदिकार्थे / नाममात्रे / अभिधेयमात्रे प्रथमा

हिमालयः, भारतम्, महानदी, गौः, अश्वः

२ -स्वतन्त्रः कर्ता / कर्तरि प्रथमा - सूर्यः उदेति

श्रीरामः महाविद्यालयं गच्छति

Scanned with CamScanner

NOTES

३. सम्बोधने प्रथमा - हे राम! अत्रागच्छ । - नमो **गणेश विघ्नेश!**

४. उक्ते कर्मणि प्रथमा - रामेण चन्द्रः दृश्यते ।

५. निपातयोगे (अव्यय योगे) प्रथमा - असाम्प्रतम् (न युज्यते) - **विषवृक्षोऽपि सम्बर्ध्य स्वयं** छेत्तुम् असाम्प्रतम् ।

इति - राम: इति बालक: पठति (बालक: कर्त्तरि)

एब - भगवान् एव शरणम्

नाम - हिन्दुस्थानं नाम भारतवर्षम्

कर्मकारकम् द्वितीया विभक्ति:

१ - कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (कर्मणि द्वितीया) कर्त्तुः ईप्सिते अनीप्सिते अपि द्वितीया भवति यथा - ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति - ग्रामम् - ईप्सितम् तृणम् अतीप्सितम् - तथापि उभयत्र द्वितीया

२ - अधिशीङ्स्थासां कर्म - अत्र अधि - उपसर्गेण युक्तानां शीङ् (शेते) स्था (तिष्ठतिं) आस् (आस्ते)

धातूनाम् आधारेषु (अधिकरण कारकस्थलेषु) कर्मसंज्ञा अर्थात् कर्मणि द्वितीया भवति

शीङ्- शिशु: शय्यायां शेते (अधिकरणे सप्तमी)

अधिशेते - शिशु: शय्याम् अधिशेते

स्था - शिव: कैलासे तिष्ठति (अधिकरणे सप्तमी)

अधितिष्ठति - शिव: कैलासम् अधितिष्ठति ।

आस् - राजा सिंहासने आस्ते । (अधिकरणे सप्तमी)

अध्यास्ते - राजा सिंहासनम् अध्यास्ते ।

३ - उपान्वध्याङ्वस: - वस् - धातुपूर्वं यदि, उप, अनु, अधि

आङ् (आ) उपसर्गा: व्यवह्रियन्ते तर्हि अधिकरणे सप्तमी स्थाने द्वितीया भवति ।

विष्णु: वैकुण्ठे वसति / निवसति । (अधिकरणे सप्तमी)

किन्तु-

उपवसति - विष्णु: वैकुण्ठम् उपवसति ।

अनुवसति - विष्णु: वैकुण्ठम् अनुवसति ।

अधिवसति - विष्णु: वैकुण्ठम् अधिवसति ।

आवसति - विष्णु: वैकुण्ठम् आवसति ।

४ - (अभुक्त्यर्थस्य न)

उपवसति (उपवासं / अनशनं करोति) इत्यर्थे अधिकरणे सप्तमी एव भवति न च द्वितीया ।

Scanned with CamScanner

NOTES

यथा - भक्त: मन्दिरे उपवसति

दरिद्र: कुटीरे उपवसति

५ - अभिनिविशश्च

'विश्" - धातु प्रयोगेण अभि, नि - उपसर्गाभ्यां युक्तेन कर्मणि द्वितीया भवति - यथा

छात्र: सन्मार्गम् अभिनिविशते

अन्यत्र - मूर्खाणां पापे अभिनिवेश: (आसक्ति:) अधिकरणे सप्तमी

६. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (व्याप्त्यर्थे द्वितीया) - काल-मार्ग वाचक शब्दादियोगे अन्त्यन्त संयोगे द्वितीया भवति ।

काल - वर्षं दुर्भिक्षं तिष्ठति । मासं पठति

मार्ग - क्रोशं कुटिला नदी

७. क्रियाविशेषणे द्वितीया क्लीवैकवचनम् / क्रियाविशेषणे द्वितीया

मृग: द्रुतं धावति । कपोत: सभयं क्रन्दति

मूर्खा: परस्परं विवदन्ते

८. गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ शब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता सणौ - गत्यर्थक - बुद्ध्यर्थक - भोजनार्थक - शब्दकर्मक - अकर्मक - धातूनां प्रयोगेण प्रेरणार्थक (णिजन्त) धातूनां प्रयोगस्थले अणिजन्तवाक्यस्य कर्तृस्थाने द्वितीया भवति ।

प्रयोज्यकर्तरि द्वितीया

गति - पुत्र: नगरं गच्छति । पिता पुत्रं नगरं गमयति ।

बुद्धि - शिष्य: अर्थं वेत्ति - गुरु: शिष्यम् अर्थं वेदयति ।

प्रत्यवसान (भोजन) शिशु: अन्नं भुङ्क्ते - माता शिशुम् अन्नं भोजयति

शब्दकर्मक (शब्दकर्मयेषाम्) छात्र: गणितं पठति

शिक्षक: छात्रं गणितं पाठयति

अकर्मक (भाववाचक) पुत्र: शेते। माता पुत्रं शाययति ।

दृश् धातु प्रयोगेण प्रयोज्यकर्तरि द्वितीया

पर्यटका: कोणार्क मन्दिरं पश्यन्ति

मार्गदर्शक: पर्यटकान् कोणार्कमन्दिरं दर्शयति

Scanned with CamScanner

NOTES

९. अकथितं च (द्विकर्मकधातुयोगे गौण कर्मणिद्वितीया)

केचन धातवः द्विकर्मकाः, अर्थात् अपादानादि विविधकारकस्थले कर्मकारकस्य विवक्षा भवति । यत्र ईप्सितं कर्म भिन्नं न भवति तत् मुख्यकर्म । यत्र अन्यकारकस्य सम्भावना स्यात् तत् गौणकर्म ।

द्विकर्मकधातवः षोड़श - दुह्याच् पच् दण्ड रुधिप्रच्छिचिब्रूशास् जिमथ्मुषाम्
कर्मयुक् स्यात् अकथितं तथा स्यात् - नी- हृ- कृष्वहाम्

१- दुह् - गोपालः गां (गोः) पयः दोग्धि

२- याच् - हरिः बलिं (बलेः) वसुधां याचते

३- पच् - पाचकः तण्डुलान् (तण्डुलैः) अन्नं पचति

४. दण्ड् - विचारकः चौरं (चौरात्) शतं दण्डयति

५ - रुध् - आरक्षी कारागारं (कारागारे) चौरं रुणद्धि ।

६ - प्रच्छ् - पथिकः आपणिकं (आपणिकाय) मार्गं पृच्छति

७ - चि - मालाकारः वृक्षं (वृक्षात्) पुष्पं चिनोति ।

८ - ब्रू - गुरुः शिष्यं (शिष्याय) धर्मतत्त्वं ब्रूते ।

९ - शास् - आचार्यः शिष्यान् (शिष्येभ्यः) धर्मं शास्ति ।

१०-जि - शत्रुं (शत्रोः) शतं जयति ।

११-मथ् - गोपी दधि (दध्नः) नवनीतं मथ्नाति

१२-मुष् - सेवकः प्रभुं (प्रभोः) धनं मुष्णाति

१३-नी - कृषकः ग्रामम् (ग्रामे) अजां नयति

१४-हृ - तस्करः धनिकः (धनिकात्) धनं हरति

१५-कृष् - कुम्भकारः जलं (जलाय) भूमिं कर्षति

१६-वह्- श्रमिकः ग्रामं (ग्रामे) छागं वहति ।

१० - कर्मप्रवचनीययोगे द्वितीया

केचन अव्ययशब्दाः स्वतन्त्रार्थप्रकाशकभावेन कार्यं साधयन्ति, क्रिया योगेन ते उपसर्गाः भवन्ति । अन्यत्र कर्मसाधकाः प्रवचनीयाः भवन्ति। अनु - मानवाः देवान् अनु (निकृष्टाः)

प्रति - यदत्र मां प्रति स्यात् (मम लभ्यः / भागः)

उप - उपार्जुनं योद्धारः (हीनाः)

अति - अति देवान् कृष्णः (श्रेष्ठः)

अपि - अपि स्तुयात् विष्णुम् ? (सम्भावनायाम्)

Scanned with CamScanner

NOTES

परि - वृक्षंवृक्षं परि सिञ्चति मालाकार: (वीप्सार्थे)

(क्रियाया: द्योतका: नेमे सम्बन्धस्य न वाचका: ।

नापि क्रियान्तरापेक्षा: सम्बन्धस्य तु भेदका: ।

कर्मप्रवचनीया: न क्रियाया: सूचका:, न च सम्बन्धस्य वाचका: न च क्रियान्तरम् अपेक्षन्ते, केवलम् आपेक्षिक सम्बन्धस्य परिचायका: भवन्ति)

११ - विविध - अव्ययशब्दयोगे द्वितीया

उभसर्वतसो: कार्या: धिणुपर्यादिषु त्रिषु

द्वितीयाम्रेड़ितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ।

अन्तरान्तरेणयुक्ते, अभित: समया निकषा हा प्रति योगेऽपि ।

उभयत: - मार्गम् उभयत: वृक्षा: सन्ति ।

सर्वत: - देशं सर्वत: अराजकता दृश्यते ।

परित: - सूर्यं परित: ग्रहा: भमन्ति ।

अभित: - मातरम् अभित: शिशु: धावति ।

उपर्युपरि - वायुमण्डलम् उपर्युपरि स्तरभेद: ।

अध्यधि -वृक्षम् अध्यधि शाखा: सन्ति ।

अधोऽध: - भूमिम् अधोऽध: रत्नानि सन्ति ।

अन्तरा - चिलिकाम् अन्तरा कालीजायी मन्दिरम् ।

अन्तरेण - जलम् अन्तरेण जीवनम् असम्भवम् ।

विना / ऋते - परिश्रमं विना / ऋते विद्या न भवति .

धिक् - चरित्रहीनं धिक्

हा - हा दु:खम् ।

यावत् - अहं हिमालयं यावत् गमिष्यामि ।

समया / निकषा - कटकं निकषा / समया महानदी ।

दक्षिणेन / उत्तरेण - ग्रामस्य दक्षिणेन / उत्तरेण सरोवर: शोभते ।

विना योगे तृतीया / पञ्चमी च भवत:

श्रमेण / श्रमात् विना फलं नास्ति

ऋते योगे पञ्चमी - धर्मात् ऋते सुखं नास्ति

दक्षिणेन / उत्तरेण योगे षष्ठी विभक्ति: अपि भवतिभारतस्य दक्षिणेन महासागर: उत्तरेण हिमालय: ।

Scanned with CamScanner

NOTES

प्रति - दरिद्रं प्रति दयां कुरु

आम्रेडितम् (वीप्सार्थे) वारंवारम् शब्दस्य प्रयोगे - दिशं दिशं प्रतीक्षते / दिनं दिनं विवर्धते ।

करणकारकम् तृतीया विभक्तिः

साधकतमं करणम्

क्रियासम्पादने कर्त्तुः यत् अतीव सहायकं (साधकतमं) तत् करणम्

क्रियते अनेन इति करणम्

१. करणे तृतीया - बालकः यानेन गच्छति । कलमेन लिखति

२. (अनुक्ते) कर्त्तरि तृतीया

मया चन्द्रः दृश्यते

३. उपलक्षणे तृतीया - शस्त्रेण सैनिकाः,

जटाभिः तापसः।

४. अङ्गविकारे तृतीया - नयनाभ्याम् अन्धः ।

शिरसा खल्वाटः । पादेन खञ्जः ।

५. हेतौ तृतीया - (क्रियासाधने अन्यतमं कारणम्)

द्रव्यादिसाधारणं निर्वाप्यार साधारणं च हेतुत्वम् (कर्त्ता हेतोः अधीनः, किन्तु करणं कर्तुः अधीनम् हेत्वधीनं फलम्) करणंतु क्रियामात्र विषयं व्यापार नियतं च ।

शिशुः शीतेन कम्पते /क्षुधया क्रन्दति । पुण्येन दृष्टः हरिः । लज्जया बाला न वदति ।

हेतौ विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् - हेत्वर्थे पञ्चमी अपि भवति, किन्तु स्त्रीलिंग शब्दस्य हैतौ पञ्चमी न भवति, केवलं स्त्रीलिङ्गे हेतौ तृतीया भवति यथा - शिशुः शीतात् / ज्वरात् कम्पते ।

बुद्ध्या मुक्तः । अनावृष्ट्या शस्य हानिः। हेतौ तृतीया

६. प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम्

प्रकृत्यादिगणस्थितानां शब्दानां स्वभावदृष्ट्या तृतीयाविभक्तौ प्रयोगः दृश्यते ।

प्रकृत्या - निम्बं प्रकृत्या तिक्तम् ।

आकृत्या - सीता आकृत्या सुन्दरी ।

स्वभावेन - साधुः स्वभावेन दयालुः ।

प्रायेण - प्रायेण नराः स्वार्थपराः ।

यत्नेन - यत्नेन उत्तरं लिख ।

Scanned with CamScanner

NOTES

क्रमेण - क्रमेण राष्ट्रपतीना नामानि कथयन्तु ।

गोत्रेण - सुरेन्द्रः गोत्रेण भारद्वाजः ।

नाम्ना - भारतं नाम्ना हिन्दुस्थानम् ।

जात्या - अहं जात्या भारतीयः। (ब्राह्मणः)

स्वेच्छया - नृपतिः स्वेच्छया भ्रमति ।

लीलया - बाला लीलया क्रीडति

सुखेन - सुखेन कालं यापय ।

दुःखेन - दुःखेन समयम् अतिवाहयति दरिद्रः ।

वेगेन - यानं वेगेन चलति

त्वरया - त्वरया धावति मृगः

वयसा - गणेशः वयसा युवकः ।

आत्मना - आत्मना अपराधी ।

समेन - समेन भावेन गच्छति रेखा

विषमेण - विषमेण चलति राजनीतिः ।

७ - अपवर्गे - तृतीया - (अपवर्गे फलप्राप्तौ)

कार्यस्य समाप्तिसूचना चेत् तृतीया (अन्यथा अत्यन्त संयोगे व्याप्त्यर्थे द्वितीया भवति)

छात्रः मासेन व्याकरणं पठितवान् / न पठितवान्

गच्छता कालेन सर्पेण मण्डूकाः भक्षिताः ।

किन्तु - सः मासं व्याकरणं पठितवान् (द्वितीया)

श्रमिकाः वर्षं कार्यं कृतवन्तः (द्वितीया)

गृहं वर्षेण निर्मितम् ।श्रमिकाः वर्षेण कार्यं कृतवन्तः ।

अत्र अपवर्गे तृतीया ।

८. सहयुक्तेऽप्रधाने

सहार्थ शब्द योगेन अप्रधाने पदे तृतीया भवति।

पित्रा सह पुत्रः (गच्छति 'अत्र पित्रा (अप्रधानः) पुत्रः कर्ता (प्रधानः)

सहार्थबोधकपदैः- साकम् / सार्धम् / समम् इत्यादिभिः तृतीया भवति

रामेण साकं / समं / सार्धं सीता वनम् अगच्छत् ।

विनापि तद्योगे - (सहादि शब्द व्यवहारं विना तदर्थ बोधके पदे अपि तृतीया भवति ।

Scanned with CamScanner

यथा - **पित्रा पुत्रः** मिलितः । शृगालः **स्वजात्या** मिलितः ।

अत्र **पित्रा, स्वजात्या** सह इति बोधः भवति ।

९ ऊनवारण प्रयाजनार्थेश्च

क - ऊनार्थेः तृतीया - ऊनः, हीनः, रहितः, शून्यः,

मूर्खः गुणेन ऊनः / हीनः / रहितः / शून्यः भवति

ख - वारणार्थेः तृतीया (अलम्, कृतम्, किम्,इत्यादि योगेन)

कलहेन अलम् (अनुचितम्, वृथा)

मूर्खस्य जीवनेन कृतम् (वृथा)

दानं विना धनेन किम् (वृथा)

ग - प्रयोजनार्थेः तृतीया -

मम पाठेन / धनेन प्रयोजनम्

मूर्ख-पुत्रेण कः अर्थः ?

कलहेन कः लाभः ?

अन्धस्य दर्पणेन किम् ?

१०-परिक्रयणे / विनिमयार्थे तृतीया

पञ्चभिः रूप्यकैः पुस्तकं क्रीतम्

कियता मूल्येन शटिका आनीता ?

शतेन मुद्राभिः शटिका आनीता ।

११-पृथग् विना नाना प्रभृति शब्द योगे द्वितीया तृतीया पञ्चमी च भवन्ति ।

जलं / जलेन / जलात् पृथक् / विना /नाना मत्स्याः न जीवन्ति ।

१२.दिग्वाचक / मार्गवाचक शब्द योगे तृतीया

कतमेन (केन) दिग्भागेन तस्करः पलायितः?

अनने मार्गेण (पथा) भवान् गच्छतु ।

१३. शपथग्रहणे तृतीया - अहं संविधानेन / ईश्वरस्य नाम्ना शपथं नयामि ।

१४.पूर्व - शब्दयोगे तृतीया

रामः भरतात् दिनेन पूर्वः (ज्यायान्)

गोपालः हरेः मासेन पूर्वः ।

सीता गीतायाः वर्षेण पूर्वा । (ज्यायसी, वर्षीयसी)

१५.अवर - शब्दयोगे तृतीया

हरिः गोपालात् मासेन / वर्षेण अवरः (कनीयान्)

गीता सीतायाः वर्षेण अवरा । (कनीयसी)

NOTES

Scanned with CamScanner

NOTES

१६ - तुल्यार्थे तृतीया - रामेण सदृशः / समः / समानः / तुल्यः वीरः नासीत्।

मात्रा सदृशी / समा / समाना / तुल्या कापि नास्ति

विकल्पेन तुल्यार्थे षष्ठी विभक्तिरपि भवति

यथा - रामस्य समानः ... । मातुः सदृशी...

सम्प्रदानकारकम् - चतुर्थीविभक्तिः

१. श्रेयोबुद्ध्या सम्यक् प्रदीयते अस्मै इति सम्प्रदानम्

२. सम्प्रदीयते अस्मै इति सम्प्रदानम्

३. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्

४. स्वस्वत्वध्वंसपूर्वकं परस्वत्व समुत्पादकं सम्प्रदानम्

५. क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्

६. चतुर्थी सम्प्रदाने

१.२. उत्तममनसा उत्तमभावेन यस्मै किंचित् प्रदीयते तत्र सम्प्रदानकारकम् ।

३.४. कर्त्तुः कर्मणा यत् अभिप्रेतम् अर्थात् यम् अभिलक्ष्य किंचित् ददाति तत्र अभिप्रेते जने सम्प्रदानकारकम् । सम्प्रदानस्य साधारणभावः यत्र कर्ता स्वाधिकारं विहाय अन्यस्मै अधिकारम् इच्छति तत्र सम्प्रदानकारकम् ।

५.६. दानादिव्यापारं विना यदि काचित् क्रिया (किमपि कार्यम्) कमपिजनं प्रसङ्ग वा लक्ष्यीकृत्य अनुष्ठीयते, तस्मिन् जने प्रसङ्गे वा सम्प्रदानकारकमपि भवेत् । सम्प्रदानकारके चतुर्थी विभक्तिः भवति ।

७. सम्प्रदाने चतुर्थी - (दानार्थे) दरिद्राय धनं दद्यात् ।

८. क्रिया ग्रहणे चतुर्थी (क्रियया यमभिप्रैति...)

माता पुत्राय चन्द्रं दर्शयति

मन्त्री छात्रेभ्यः मिष्टान्नं / पुरस्कारं वितरति

९ -(कथनार्थ प्रेरणार्थे श्च) **कथनार्थे - प्रेरणार्थे - निवेदनार्थे चतुर्थी**

गङ्गदत्ताय मत्सन्देशं कथय ।

कृष्णः शिशुपालाय दूतं प्रेरयति ।

प्रजाः मन्त्रिणे दुःखं निवेदयन्ति

राज प्रजाभ्यः समाचारं ज्ञापयति (कथयति)

१०. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः - (रुच्यर्थे चतुर्थी)

रुच्यर्थक धातुप्रयोगे यस्मै रोचते (यः प्रीतः भवति) तत्र चतुर्थी भवति ।

रोचते - हरये रोचते भक्तिः ।

Scanned with CamScanner

NOTES

तस्मै / बालकाय मिष्टान्नं रोचते ।

स्वदते - मह्यं / तुभ्यं फलं स्वदते ।

स्वदन्ते / रोचन्ते - बालकाय फलानि न रोचन्ते / स्वदन्ते

११. स्पृहेरीप्सित: : (स्पृहार्थे चतुर्थी) स्पृहि धातो: प्रयोगेण कर्त्तु: ईप्सिते पदार्थे अभिलषिते द्रव्ये चतुर्थी भवति ।

बालिका <u>पुष्पेभ्य:</u> स्पृहयति ।

स्पृहयामि सरलबालकाय ।

विवक्षायाम् अत्यन्तस्पृहार्थे कर्मणि द्वितीया - कृपणा: धनं स्पृहयन्ति ।

स्त्रिय: भूषणं / अलङ्कारान् स्पृहयन्ति ।

१२. क्रुध्द्रुहेर्ष्या सूयार्थानां यं प्रति कोप:

क्रुध् - द्रुह् ईर्ष्य - असूयार्थक धातुप्रयोगे यं प्रति कोप: तत्र चतुर्थी भवति

क्रुध्यति / कुप्यति - राजा **शत्रवे** क्रुध्यति / कुप्यति

द्रुह्यति - पाकिस्थानं **भारताय** द्रुह्यति ।

ईर्ष्यति - असाधु: **साधवे** ईर्ष्यति

असूयति - साधु: **कस्मै** न असूयति

किन्तु अत्रैव - उपसर्ग युक्तधातो: प्रयोगेण द्वितीया भवति

अभिक्रुध्यति - राजा शत्रुम् अभिक्रुध्यति

संकुप्यति - दुर्जन: सज्जनान् संकुप्यति

अभिद्रुह्यति - सेनापति: राजानम् अहिद्रुह्यति

१३. धारेरुत्तमर्ण: (धारि धातुयोगे चतुर्थी)

धारि - धातो: प्रयोगेण (धारयति) उत्तमर्ण: (ऋणदाता) चतुर्थी विभक्त्यन्त: भवति

(उत्तम + ऋण:) उत्तमर्ण:। अधम + ऋण: । अधमर्ण: (ऋणकर्ता)

अधम: एव ऋणं करोति, उत्तम: एव ऋणं ददाति

गोपाल: (अधमर्ण:) हरये (उत्तमर्णाय) शतं मुद्रा: धारयति ।

अन्यत्र धारणभारवहने कर्मणि द्वितीया यथा - भगवान् **विश्वं** धारयति ।

छात्र: **पुस्तकं** धारयति

१४. कृपि सम्पद्यमाने (सम्पद्यमाने चतुर्थी)

क्रियाद्वारा यत्र परिवर्त्तनं, सम्भावना विकार: वा लक्ष्यन्ते तत्र सम्पद्यमाने चतुर्थी भवति

Scanned with CamScanner

NOTES

क्लृप् - कल्पते - भक्तिः ज्ञानाय कल्पते । भक्तिः प्रकृतिः ज्ञानं विकृतिः (विकारः) भक्तिः ज्ञानं सृजति इत्यर्थः

(सम् + पद्) सम्पद्यते - लोभः विनाशाय सम्पद्यते

(जन्) जायते - कलहः दुःखाय जायते

(परि + नम्) परिणमते - बीजं वृक्षाय परिणमते

(भू) भवति - दुहिता कुलद्वयस्य हिताय भवति

परोपकारः **पुण्याय (स्वर्गाय) पापाय** परपीड़नम्

अत्र सम्पद्यमाने चतुर्थी ।

१५. उत्पातेन ज्ञापिते च (उत्पात सूचनार्थे चतुर्थी)

<u>वाताय</u> कपिला विद्युत्

<u>आतपाय</u> अतिलोहिनी

यदि विद्युत् कपिलवर्णा (पिङ्गलवर्णा) भवति तर्हि वात्या भवति । अतिलोहितवर्णा यदि भवति तर्हि प्रचण्डः आतपः भवति ।

१६. क्रियार्थोपदस्य च कर्मणि स्थानिनः

(तुं (तुमुन् प्रत्यय) लोपे (कर्मणि) चतुर्थी

यदि वाक्यमध्ये कर्मानुसारं तुमुन् प्रत्ययस्य लोपः भवति तर्हि कर्मणि चतुर्थी भवति ।

यथा - शवरी फलाय (फलम् आहर्तुम्) याति

नृसिंहाय (नृसिंहम् अनुकूलयितुम् (तोषितुम्) नमस्करोति

१७. तुमर्थाच्च भाववचनात् (तुमर्थे चतुर्थी)

तुमुन् प्रत्ययस्य अर्थं यत् भाववचनं (क्रिया वाचकं विशेष्यम्) प्रकाशयति तत्रैव चतुर्थी भवति

बालकः पठनाय (पठितुम्) गच्छति ।

क्षुधार्तः भोजनाय (भोक्तुम्) आगच्छति / इच्छति ।

१८. निवृत्तौ निवर्तनीयात् (निवारणार्थे चतुर्थी)

यस्य निवारणम् उद्दिष्टं तत्र चतुर्थी भवति

मशकाय धूमः । आतपाय छत्रम् ।

रोगाय औषधम् । तापाय स्नानम् । शैत्याय कम्बलम् ।

१९. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता

प्रतिश्रुत्यर्थे चतुर्थी - यस्य कृते प्रतिश्रुतिः दीयते तत्र चतुर्थी भवति ।

पिता पुत्राय द्विचक्रयानं प्रतिशृणोति / आशृणोति

Scanned with CamScanner

NOTES

२०. नमः - स्वस्ति-स्वाहा -स्वधा - अलम् - वषट् योगाच्च (उपरिलिखित उपपद योगे चतुर्थी)

नमः - देवाय नमः

स्वस्ति - प्रजाभ्यः स्वत्ति

स्वाहा - इन्द्राय स्वाहा

स्वधा - मातृभ्यः / पितृभ्यः स्वधा (श्राद्ध सम्बन्धीयम्

अलम् (सामर्थ्ये) वीरः युद्धाय अलम्

वषट् - (देवसमर्पणे वैदिक कर्मकाण्डे) शिवाय विल्वपत्रं वषट् / शिखायै / मध्यमाभ्यां वषट्

२१. उपपद विभक्तेः कारकविभक्तिः बलीयसी

उपपदविभक्तेः अपेक्षया कारकविभक्तेः बलम् अधिकम्

देवाय नमः । अत्र नमः - उपपद योगे चतुर्थी किन्तु **देवं नमस्करोति अत्र नमः + करोति - नमस्करोति** - एकं क्रियापदम् । क्रिया योगेन देवं नमस्करोति, अत्र कर्मणि द्वितीया ।

२२. गत्यर्थकर्मणि द्वितीया चतुर्थ्यै वा चेष्टायामनध्वनि

गत्यर्थक धातुयोगे द्वितीया / चतुर्थी

शरीरेण गमनव्यापारे गत्यर्थक धातु (गम्, ब्रज, या, चल)

योगे कर्मणि विकल्पेन द्वितीया चतुर्थी वा भवति

अनध्वनि (न अध्वनि) - अध्ववाचक (मार्गवाचक शब्दे कर्मणि केवलं द्वितीया भवति ।)

युवकः नगरं / नगराय गच्छति / याति / चलति / ब्रजति...

किन्तु - सः मनसा / भावेन वैकण्ठं गच्छति

अत्र शारीरिकी चेष्टा नास्ति । अतः चतुर्थी नैव

अधिकारी मार्गं गच्छति (अनध्वति)

२३. तादर्थ्ये (निमित्तार्थे) चतुर्थी

यूपाय दारु । वस्त्राय सूत्रम्

हाराय सुवर्णम् । भोजनाय अन्नम्

स्वर्गाय निःश्रेणी नास्ति, महाजनाय नोत्तरम्

२४. मन्यकर्मण्यनादरे विभाषा अप्रणिषु

(अनादरे / मन्धातुयोगे चतुर्थी)

मन् धातुयोगे (मन्यते, मन्यसे, मन्ये) अनादर बोधके कर्मणि **अप्राणिवाचके शब्दे द्वितीया चतुर्थी वा विकल्पेन भवति ।**

Scanned with CamScanner

NOTES

गोपाल: / नेता मां पाषाणं / पाषाणाय मन्यते

अहं त्वां काष्ठं / काष्ठाय मन्ये ।

प्राणिवाचके पदे अनादरे केवलं कर्मणि द्वितीया भवति

स: मां काकं मन्यते (न काकाय) ।

किन्तु अनादरस्य अभावात् चतुर्थी नैव भवति

यथा - पुत्र: पितरं देवं मन्यते

भक्त: प्रस्तरं शालग्रामं मन्यते

२५. चतुर्थी चाशिष्यायुष्य - मद्र-भद्र-कुशल सुखार्थहितै:

आशीर्वादार्थक शब्दयोगे चतुर्थी / विकल्पे षष्ठी

आशीर्वाद: / आशी: / बहुवचने (आशिष:)

तुभ्यम् आशीर्वाद: / आशी: / (आशिष: सन्तु)

आयुष्यम् - बालकाय आयुष्यं भूयात् ।

मद्रम् / समृद्धि: - देशाय मद्रं / समृद्धि: भवतु ।

भद्रम् / मङ्गलम् - युष्मभ्यं भद्रं / मङ्गलं भवेत् ।

कल्याणम् - भवते / छात्रेभ्य: कल्याणमस्तु ।

कुशलम् - कुशलं ते? तुभ्यं कुशलं भवतु ।

सुखम् - अहं सर्वेभ्य: सुखं चिन्तयामि ।

निरामयम् / हितम् / शम् - नागरिकेभ्य: निरामयं / हितं / शं भूयात् ।

पूर्वोक्तवाक्येषु यथाक्रमं षष्ठी विभक्ते: अपि व्यवहार: भवेत्

यथा - तव आशीर्वाद:, बालकस्य आयुष्यम्, देशस्य मद्रम्, युष्माकं मङ्गलम् / भद्रम्

भवत: / छात्राणां कल्याणम् । तव कुशलम् ।

सर्वेषां सुखम् । नागरिकाणां हितं / निरामयम् भूयात् एवं क्रमेण प्रयोग: दृश्यते

अन्यत्र आशीर्वाद बोधकार्थं विना - आयुष्यं (आयुर्वर्धकं) प्राणिनां घृतम् (सम्बन्धे षष्ठी)

अपादानकारकम् - पञ्चमीविभक्ति:

ध्रुवमपायेऽपादानम् - ध्रुवम् + अपाये + अपादानम्

ध्रुवं नाम स्थिरं निर्दिष्टं गतिशीलम्, अपाये नाम विच्युते विच्छेदे पृथक्कृते, तत् अपादानं भवति - अप + आ + दानम् - मूलत: विच्छिन्नम्-

अर्थात् अपाय: नाम विच्छेद: । यस्मात् स्थानात् विच्छेद: / विच्युति: भवति तत्र अपादान कारकम्

Scanned with CamScanner

NOTES

१- अपादाने पञ्चमी - ग्रामात् बालक: आगच्छति

वृक्षात् फलं पतति ।

धावत: अश्वात् सैनिक: अपतत् ।

हिमालयात् गङ्गा प्रवहति ।

२ - भीत्रार्थानां भयहेतु: (भयार्थे/रक्षार्थे पञ्चमी) भयार्थक-रक्षार्थक धातु प्रयोगे भयस्य हेतौ पञ्चमी भवति ।

भयार्थे पञ्चमी - सर्प: नकुलात् बिभेति ।

न कस्य मरणात् भयम् ।

रक्षार्थे पञ्चमी - विपद: रक्ष / त्रायस्व माम् ।

पाहि मां भवसागरात् ।

३. जुगुप्साविरामप्रमादार्थानाम् उपसंख्यानम्

जुगुप्सार्थे (घृणा) पञ्चमी - साधु: पापात् जुगुप्सते ।

विरामार्थे पञ्चमी - मूर्ख: पठनात् विरमति ।

प्रमादार्थे पञ्चमी - स्वधर्मात् सज्जन: न प्रमाद्यति ।

४ - पराजेरसोढ: - परा + जि धातु प्रयागेण यं प्रति सहनं न भवति तत्र पञ्चमी ।

पराजयते - जाल्म: (शठ:) अध्ययनात् पराजयते ।

धार्मिक: पापात् पराजयते ।

अध्ययनं / पापं न सहते इत्यर्थ: ।

५ - वारणार्थानामीप्सित: (वारणार्थे पञ्चमी)

वार्यमाणस्य अभिलषितस्थाने पञ्चमी भवति

कृषक: शस्यक्षेत्रात् वृषभं वारयति ।

उत्तम: बन्धु: सर्वदा कुकार्यात् वारयति

६ - अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति - अन्तर्धौ नाम व्यवधाने यस्मात् अदर्शनं कश्चित् इच्छति तत्र व्यवधाने पञ्चमी भवति ।

अदर्शने पञ्चमी - मातु: निलीयते कृष्ण:

चौरा: रक्षकात् निलीयन्ते

७ - लज्जार्थे पञ्चमी बधू: अपरिचितात् लज्जते

८. भुव: प्रभव: (प्रथमप्रकाशार्थे पञ्चमी)

Scanned with CamScanner

NOTES

वैतरणी गोनासिकापर्वतात् प्रभवति

महानदी अमरकण्टकात् प्रभवति

९ - आख्यातोपयोगे - शिक्षाग्रहणे (विद्यास्वीकारे) पञ्चमी

आचार्यात् शास्त्रम् अधीते ।

विश्वामित्रात् रामलक्ष्मणौ धनुर्विद्याम् अधीतवन्तौ ।

१० - जनिकर्त्तुः प्रकृतिः (सृष्ट्यर्थे / उत्पत्त्यर्थे पञ्चमी)

बीजात् अङ्कुरः जायते । ब्रह्मणः प्रजाः अजायन्त

नवनीतात् घृतम् उद्पद्यते ।

यज्ञकुण्डात् द्रौपदी अजायत ।

११. पञ्चमीविभक्तेः (अपेक्षार्थे) उत्कर्षापकर्षे पञ्चमी

विन्ध्यात् हिमालयः उच्चतरः ।

रामात् भरतः कनीयान् ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

सुवर्णं रजतात् मूल्यवत्तरम् ।

सर्पात् क्रूरतरः खलः ।

१२. ल्यप्लोपे कर्मण्यधिकरणे च (असमापिका क्रिया - लोपे पञ्चमी)

क्त्वाल्यप् प्रत्ययलोपे कर्मणि अधिकरणे च पञ्चमी)

मूषिकः गर्त्तात् (गर्त्तेस्थित्वा) मार्जारं पश्यति ।

बालिकाः प्रासादात् (प्रासादम् आरुह्य) नृत्यं पश्यन्ति ।

यानात् (याने उपविश्य) यात्रिणः गिरिशोभां विलोकयन्ति ।

१३ - हेतौ पञ्चमी - (हेत्वर्थवाचकशब्दे पञ्चमी / तृतीया भवति) - स्त्री लिङ्गवाचक शब्दे केवलं तृतीया भवति ।

वृद्धः शीतात् कम्पते (हेतौ तृतीयायां शीतेन)

लोभात् बुद्धिश्चलति । पापात् मृत्युः भवति

हेतौ तृतीयायाम् - लोभेन, पापेन

हेतौतृतीया स्त्री लिङ्गे - अनावृष्ट्या शस्यहानिः ।

बाला लज्जया / ह्रिया न वदति ।

१४ - दूरान्तिकार्थेभ्यः (दूर समीप - अन्तिकार्थक शब्द योगे मूलशब्दे पञ्चमी षष्ठी वा भवति दूर - अन्तिकादि शब्दे द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी विभक्तयश्च भवन्ति ।

Scanned with CamScanner

NOTES

ग्रामात् / ग्रामस्य , दूरं / दूरेण / दूरात् / दूरे श्मशानमस्ति

नगरात् / नगरस्य अन्तिकं / अन्तिकेन / अन्तिकात् / अन्तिके महाविद्यालयः अस्ति

मम / मत् समीपं / समीपेन / समीपात् / समीपे आगच्छ

१५ - अधस्तनशब्दानां योगे पञ्चमी

अन्यशब्द योगे पञ्चमी

रामात् अन्यः / इतरः / भिन्नः कः रावणं हन्तुं समर्थः ?

आरात् (निकटे / दूरे) कटकात् आरात् महानदी ।

ऋते - सन्तोषात् ऋते सुखं नास्ति ।

विना - धनात् विना किं करिष्यति?

पूर्वम् / प्राक् - भोजनात् पूर्वं / प्राक् हस्तं प्रक्षालयेत् ।

परम् /अनन्तरम् - पठनात् परं / अनन्तरं क्रीड़त ।

पृथक् - सुवर्णं रौप्यात् पृथक् ।

आरभ्य / प्रभृति - बाल्यात् प्रभृति / आरभ्य सः परिश्रमी ।

वहिः - भारतात् वहिः बहवः शत्रवः / बहूनि मित्राणि सन्ति । गृहात् वहिः गच्छ ।

प्रति (प्रतिनिधिः) राज्यपालः राज्यात् प्रति ।

पुत्रः / पुत्री पितुः मातुः वा प्रति ।

दक्षिणा /दक्षिणाहि - भारतात् दक्षिणा / दक्षिणाहि कुमारिका

उत्तरा /. उत्तराहि - भारतात् उत्तरा / उत्तराहि हिमालयः ।

आङ् / आ उपसर्ग योगे पञ्चमी - आ मूलात् श्रोतुम् इच्छामि धृतराष्ट्रः आजन्मनः अन्धः आसीत् ।

अपपरीवर्जने (वर्जनार्थे)

अप - उपसर्गयोगे पञ्चमी - अप विष्णोः संसारः ।

परि - उपसर्गयोगे पञ्चमी - परि विष्णोः संसारः ।

विष्णुं वर्जयित्वा अन्यत्र संसारः (माया) इत्यर्थः ।

अप / परि वनात् वर्षति मेघः (वनं वर्जयित्वा अन्यत्र) वृष्टिः भवति इत्यर्थः) ।

कृच्छ्र (अतिकष्टेन)

अल्प (स्वल्पव्यवधानेन)

स्तोक (सामान्यतः) - शब्देषु द्वितीया तृतीया पञ्चमी विभक्तीनां संयोगः भवति

यथा - पथिकः कृच्छ्रं / कृच्छ्रेण / कृच्छ्रात् विपदः मुक्तः ।

Scanned with CamScanner

प्रार्थी निर्वाचने स्तोकात् / स्तोकं / स्तोकेन परास्तः।

शिशुः अपघातात् अल्पं / अल्पेन / अल्पात् रक्षितः ।

सम्बन्धपदम् - षष्ठी विभक्तिः

(सम्बन्धस्य क्रियाभावात् कारकत्वं न विद्यते)

सम्बन्धाः बहुविधाः सन्ति । तथापि मुख्यतया जन्यजनकभावः, स्वस्वामिभावः, अवयवावयविभावः आधाराधेय भावः - इति प्रसिद्धाः एते विशेषेण 'शेषः" इति कथ्यते ।

१ - शेषे षष्ठी नाम सम्बन्धे षष्ठी

रामस्य पुत्रः कुशः (जन्य - जनक भावः)

प्रधानाचार्यस्य सेवकः / कर्मचारी (स्वस्वामि भावः)

वृक्षस्य शाखा । बालकस्य हस्तौ (अवयवावय विभावः)

समुद्रस्य जलम् । सरोवरस्य जलम् (आधाराधेय भावः)

२. कर्तृकर्मणोः कृति - कृद् योगे / कृदन्तपद योगे षष्ठी (ल्युट्, क्तिन्, घञ्, अल् प्रभृतियोगे)

कृद्योगेकर्तरि षष्ठी - **रामस्य गमनम् / गतिः** (अर्थात् रामः गच्छति - इत्यर्थः)

कृद्योगेकर्मणि षष्ठी- **संस्कृतस्य पठनम् ।**

जलस्य पानम् ।

अर्थात् संस्कृतं पठन्ति, जलं पिबन्ति - इत्यर्थः

३- उभयप्राप्तौ कर्मणि षष्ठी

यदि एकस्मिन् वाक्ये कर्ता कर्म च स्तः , तत्र **केवलं कर्मणि षष्ठी)**

शिशुः दुग्धस्य पानं करोति । शिशुः - कर्तरि प्रथमा

शिशुना दुग्धस्य पानम् । शिशुना - अनुक्ते कर्तरि तृतीया

४. न लोकाव्ययनिष्ठा खलर्थतृनाम्

कस्मिन् स्थले कृदन्त पदयोगे षष्ठी विभक्तिः न भवति तद् विषये अत्र वर्णितम् - लोकाव्ययनिष्ठा खलर्थतृनाम् ।

ल + उ + उक + अव्यय + निष्ठा + स्वलर्थ +तृन् - प्रभृति प्रत्ययान्तकृदन्तपदयोगे षष्ठी न भवति ।

ल - शतृ, शानच्, स्यतृ, स्यमान, क्वसु, कानच्

शतृ - ग्रामं गच्छन्.. .पतति

शानच् - धनं लभमानः नृत्यति

स्यतृ - कार्यं करिष्यतः जनस्य नाम किम् ?

Scanned with CamScanner

स्यमान - धनं लप्स्यमानःसुखी भविष्यति

क्वसु - ओदनं पेचिवान् ।

कानच् - ओदनं पेचानः ।

उ - जलं पिपासुः ।

उक - दैत्यान् घातुकः ।

अव्यय - जलं पीत्वा, गृहम् आगत्य, चित्रं द्रष्टुम्, स्वप्नं स्मारं स्मारम् ।

निष्ठा (क्त्वा, क्तवतु)

ग्रामं गतः/ गतवान्

खल् - कार्यं मया दुष्करम् (दुः + कृ + खल्)

खलर्थ - (ईषत् अर्थक) तेन जलं दुष्पानम् (दुः + पा + खल्)

तृन् - धनं दाता (दा + तृन्) **शीलार्थे धनदाने अभ्यस्तः।**

साधारण भावेन अकस्मात् कश्चित् ददाति

चेत् तत्र तृन् स्थाने तृच् प्रत्ययः भवति -

आपणिकः फलस्य / दानस्य दाता (दा + तृच्)

अत्र सम्बन्धे षष्ठी ।

५.क्तस्य च वर्तमाने (वर्तमानकाले क्त प्रत्यय योगे - षष्ठी - (मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च)

इदं **मम** मतम् (मन् + क्त)

विद्वान् **सर्वेषां** पूजितः (पूज् + क्त)

अयं **मम** विदितः (विद् + क्त)

सतां सम्मतः, **सर्वेषां** ज्ञातः ।

६ - नपुंसके भावे क्तः (भाववाच्ये) क्त प्रत्यय योगे षष्ठी विकल्पेन अनुक्ते कर्तरि तृतीया)

मम हसितम् । मया हसितम्

तव जीवितम् । त्वया जीवितम्

तस्य शयितम् । तेन शयितम्

७. कृत्यानां कर्तरि वा (कृत्य -तव्य, अनीय, ण्यत्, यत्, क्यप्) **प्रत्यय योगे षष्ठी विकल्पेन अनुक्ते कर्तरि तृतीया भवति)**

मम / मया चन्द्रः द्रष्टव्यः । (दृश् + तव्य)

तव / त्वया पुरी गन्तव्या । (गम् + तव्य)

NOTES

Scanned with CamScanner

NOTES

लोकहितं मम / मया करणीयम् (कृ + अनीय)

भक्तस्य / भक्तेन सेव्यः प्रभुः (सेव् + यत्)

सर्वेषां / सर्वैः ग्राह्यम् (ग्रह + व्यम्)

अर्जुनः कृष्णस्य / कृष्णेन शिष्यः (शास् + क्यप्)

८. अनादरे षष्ठी (विकल्पे सप्तमी)

क्रन्दतः शिशोः / क्रन्दति शिशौ माता अगच्छत्। **क्रन्दत् शब्दस्य षष्ठी एकवचने - क्रन्दतः, सप्तमी एकवचने -क्रन्दति**

मम पश्यतः / मयि पश्यति काकः पिष्टकम् अनयत् - **पश्यत् शब्दस्य षष्ठी एकवचने - पश्यतः**, सप्तमी एकवचने **पश्यति**

९. **दूरान्तिकार्थे षष्ठी (विकल्पे दूरान्तिकार्थे पञ्चमी**

ग्रामस्य / ग्रामात् दूरम् / अन्तिकम्

१०. सम्बन्ध विवक्षायोगेषष्ठी - कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्र विवक्षायां षष्ठ्येव)

वन्दे शम्भोः चरणयोः। (चरणौ इति स्थाने चरणयोः (सम्बन्धविवक्षायोगे षष्ठी)

तावत् **भयस्य** भेतव्यम् (भयात् - स्थाने)

स्वर्गोऽपि मम न रोचते (मह्यम् स्थाने)

अस्य विश्वासं कुरु । अस्मिन् स्थाने

११. निर्धारणे षष्ठी (विकल्पे) **निर्धारणे सप्तमी**

प्राणिनां / प्राणिषु मनुष्याः श्रेष्ठाः ।

गवां / गोषु कृष्णा बहुक्षीरा ।

१२. तुल्यार्थे षष्ठी (विकल्पे तृतीया)

कृष्णस्य / कृष्णेन सदृशः / तुल्यः / समः / समानः कोऽपि नास्ति ।

तुला उपमा शब्द योगे षष्ठी

सीतायाः उपमा नास्ति ।

रामस्य तुला नास्ति ।

१३. हेतु शब्द प्रयोगे षष्ठी (हेतुशब्देन सह हेतुवाचकशब्दे षष्ठी भवति

अन्नस्य हेतोः वसति (अन्नाय)

अल्पस्य हेतोः बहुहातुमिच्छन्... (अल्पाय)

१४. सर्वनाम्नस्तृतीया च (हेतु शब्देन सह

सर्वनाम शब्दस्य प्रयोगेण उभयत्र षष्ठी / तृतीया वा भवति ।

Scanned with CamScanner

यथा - **केन हेतुना** आगच्छति?

कस्य हेतोः आगच्छति?

अन्यत्र हेतु - तत् पर्यायवाचक शब्द - कारण निमित्त - प्रयोजनादि शब्द योगे सर्वासां विभक्तीनां प्रयोगः दृश्यते - तत्र मुख्यं सूत्रं योज्यम्

को हेतुः / किं निमित्तम् / किं कारणम् (अभिधेयमात्रे प्रथमा)

कं हेतुम् / किं निमित्तम् ... जानासि? (कर्मणि द्वितीया)

केन हेतुना / केन निमित्तेन - करणे तृतीया

कस्मै हेतवे / निमित्ताय / कारणाय - तादर्थ्ये चतुर्थी

कस्मात् हेतोः / निमित्तात् / कारणात् - हेतौ पञ्चमी

कस्य हेतोः / निमित्तस्य / कारणस्य - सम्बन्धे षष्ठी

कस्मिन् हेतौ / निमित्ते / कारणे .. अधिकरणे सप्तमी

१५. आशीर्वादार्थक शब्दयोगे षष्ठी (विकल्पे चतुर्थी)

(चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्र कुशल सुखार्थ हितैः)

प्रजानां / प्रजाभ्यः, हितं / सुखं / शुभं भवतु ।

१६ - अधीगर्थदयेशां कर्मणि (अधीगर्थ (स्मरणार्थक) दय्, ईश धातुयोगे कर्मणि **विकल्पेन षष्ठी भवति अन्यत्र कर्मणि** द्वितीया)

पुत्रः मातुः स्मरति - **स्मरणार्थक धातु योगे** षष्ठी

पुत्रः मातरं स्मरति, **कर्मणि** द्वितीया

दरिद्रस्य / दरिद्रं दयस्व

नगरस्य / नगरम् ईष्टे (प्रभुत्वं विस्तारयति)

१७. तृप्त्यर्थे षष्ठी (तृप्त्यर्थानां विभाषाकरणे)

तृषार्त्तः जलेन तृप्यति (करणे तृतीया)

तृषार्त्तः जलस्य तृप्यति (तृप्त्यर्थे षष्ठी)

१८ - अव्ययपदयोगे षष्ठी

दक्षिणेन - ग्रामस्य दक्षिणेन वनमस्ति

द्वितीया विकल्पेन - ग्रामं दक्षिणेन वनमस्ति ।

तथैव - उत्तरेण - कटकस्य / कटकम् उत्तरेण महानदी वहति ।

द्विः - अहं वर्षस्य द्विः पुरीं गच्छामि ।

त्रिः - मुनयः दिनस्य त्रिः स्नान्ति ।

Scanned with CamScanner

NOTES

चतुः - सप्ताहस्य चतुः रेलयानं गच्छति ।

पञ्चकृत्वः, षट्कृत्वः, सप्तकृत्वः, सहस्रकृत्वः - प्रधानमन्त्री वर्षस्य पञ्चकृत्वः / षट्कृत्वः / सप्तकृत्वः / सहस्रकृत्वः देशं / विदेशं भ्रमति ।

पूर्वतः - भारतस्य पूर्वतः गङ्गासागरः ।

पश्चिमतः - उत्कलस्य पश्चिमतः छत्तीशगड़ः ।

उत्तरात् / उत्तरतः - भारतस्य उत्तरात् / उत्तरतः जम्मुकश्मीरः ।

दक्षिणात् / दक्षिणतः - श्रीक्षेत्रस्य दक्षिणात् / दक्षिणतः महोदधिः

पुरः, पुरतः / पुरस्तात् / अग्रतः / अग्रे - शिवस्य पुरः / पुरतः / पुरस्तात् / अग्रतः / वृषभः शोभते ।

अधः / अधस्तात् - वृक्षस्य अधः /अधस्तात् पथिकः उपविशति

उपरि - वृक्षस्य उपरि मर्कटः उपविशति ।

पृष्ठतः - सिंहस्य पृष्ठतः दुर्गा विराजते ।

कृते (निमित्तम्) बालिका **जलस्य कृते** गच्छति । **तव कृते अत्र स्थानं** नास्ति ।

अधिकरणकारकम् सप्तमी विभक्तिः

आधारोऽधिकरणम् । अधिक्रियन्ते अस्मिन् इति अधिकरणम्

क्रियायाः आधारः अधिकरणम्

१. सप्तम्यधिकरणे - अधिकरणे सप्तमी

कृषकाः ग्रामे निवसन्ति (स्थाने)

वसन्ते सकलं रमणीयं भवति (समये / काले)

मोक्षे इच्छा / रुचिः / स्पृहा नास्ति (विषये)

तिलेषु तैलम् - (व्याप्त्यर्थे) सर्वावयवे तैलम्)

गङ्गायां घोषः - (सामीप्यार्थे) गङ्गा समीपे / तीरे

२. यस्य च भावेन भावलक्षणम् (भावे सप्तमी)

येन भावेन अर्थात् यया क्रियया अन्यः भावः अर्थात् अन्या क्रिया सूच्यते / लक्ष्यते तत्र पूर्वक्रियायाः कर्तरि कर्मणि वा (कृदन्त कर्मणि) सप्तमी विभक्तिः भवति ।

यथा - **उदिते सूर्ये (सूर्ये उदिते)** पद्मं विकसति

समाप्ते कार्ये श्रमिकाः गतवन्तः ।

शिक्षके आगते छात्राः उत्तिष्ठन्ति ।

रामे वनं गते दशरथः प्राणान् अत्यजत् ।

Scanned with CamScanner

NOTES

३. निमित्तात् कर्मयोगे सप्तमी

कर्मकारकेण सह निमित्तस्य अवयवावयवि-सम्बन्ध स्थले निमित्तवाचके शब्दे सप्तमी भवति - केशेषु चमरीं हन्ति ।

अत्र केशनिमित्तं चमरीं मारयति इति ।

दन्तयोः हन्ति कुञ्जरम् ।

दन्तद्वय निमित्तं गजं मारयति इति ।

४. अवच्छेदे सप्तमी (अवच्छेदः शरीरधारिणः कश्चित् पृथक् अंशविशेषः)

शरीरस्य पृथक् अंशधारण माध्यमेन शरीरधारिणः ग्रहणव्यापारे तत्र कर्मणि द्वितीया स्थाने अवच्छेदे सप्तमी भवति ।

अन्धं करे धृत्वा नय / उपावेशय ।

करं स्थाने करे (अवच्छेदे सप्तमी)

यदि कश्चित् अन्धस्य करं धृत्वा लिखति महान् अनर्थः जायते, यतः अन्धस्य करं छित्त्वा एव बोधः भवति)

गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्

दुःशासनः द्रौपदीं केशेषु धृत्वा आकर्षति

५. निर्धारणे सप्तमी / विकल्पे षष्ठी

प्राणिषु / प्राणिनां मानवाः श्रेष्ठाः।

पशुषु / पशूनां सिंहः राजा ।

६. स्वामी ईश्वर अधिपति दायाद साक्षि प्रतिभू - प्रसूतैश्च सप्तमी / षष्ठी

स्वामी - ईश्वर... प्रभृति शब्द योगे सप्तमी / षष्ठी

क. गवां / गोषु स्वामी ।

ख. नराणाम् /नरेषु ईश्वरः / अधिपतिः ।

ग. विवादस्य / विवादे साक्षी ।

घ. व्यापारस्य / व्यापारे प्रतिभूः (मध्यस्थः) ।

ङ. रामः रघुवंशस्य / रघुवंशे दायादः / प्रसूतः

७. कुशल - निपुणादि शब्द योगेन सप्तमी

क. महेन्द्रः क्रीडायां कुशलः / दक्षः / निपुणः ।

ख. गोपालः धावने प्रवीणः /

Scanned with CamScanner

NOTES

ग. श्रमिकः कार्यो लग्नः / व्यापृतः / तत्परः

८ - साधु / असाधु शब्द योगे सप्तमी

कृष्णः मातरि साधुः, मातुले असाधुः ।

९. विश्वास - स्नेह - भक्ति - अनुरागादि योगे सप्तमी

क. माता सन्तानेषु स्निह्यति ।

ख. अपरिचिते न विश्वसेत् ।

ग. शिक्षके छात्राः अनुरक्ताः ।

घ. स्वार्थपरे सर्वे विरक्ताः ।

ङ. जगन्नाथे सः भक्तिं करोति ।

च. भोजने तस्य अभिलाषः / अनुरागः ।

छ. मद्यपाने आसक्तिः निन्दनीया ।

१०. क्तस्येन् प्रत्यय योगे सप्तमी

क्त प्रत्ययेन सह इन् प्रत्यय योगे सप्तमी

अधि + इ + क्त = अधीत + इन् - अधीती

व्याकरणे अधीती (व्याकरणम् अधीतवान्) ।

११. योग्यतार्थे सप्तमी

क. एतत् त्वयि न सम्भाव्यते ।

ख. त्रैलोक्यस्य प्रभुत्वं त्वयि / तस्मिन् युज्यते

ग. दौर्बल्यं त्वयि / मयि न उपपद्यते

मिश्रविभक्ति विवरणम्

१. पृथक् ,नाना, विना योगे द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी भवन्ति किन्तु ऋतेयोगे द्वितीया पञ्चमी भवतः । अन्तरेण योगे केवलं द्वितीया भवति

२. दक्षिणेन / उत्तरेण योगे द्वितीया षष्ठी ।

३. फलप्राप्त्यभावे काल + मार्ग वाचक शब्दे अत्यन्त संयोगे व्याप्त्यर्थे द्वितीया भवति, किन्तु फलप्राप्तिबोधने (अपवर्ग" तृतीया भवति ।

४. प्रति शब्द योगे द्वितीया, किन्तु प्रतिनिधि, प्रतिदानार्थे पञ्चमी

५. वारणार्थक - अलम् योगे तृतीया

समर्थार्थक - अलम् योगे चतुर्थी

६. प्रायेणगमनार्थक - कथनार्थक धातुयोगे द्वितीया चतुर्थी च ।

Scanned with CamScanner

७. तुल्यार्थे, तृप्त्यर्थे तृतीया षष्ठी च

तुला - उपमायोगे केवलं षष्ठी

८. हेतौ तृतीया, पञ्चमी किन्तु स्त्रीलिङ्गे केवलं तृतीया - हेतु शब्द प्रयोगे षष्ठी

९. कृत्य प्रत्यय योगे कर्तरि तृतीया / षष्ठी

१०. आशीर्वादार्थक शब्द योगे चतुर्थी, षष्ठी च किन्तु 'स्वस्ति" योगे - केवलं चतुर्थी

११. स्मरणार्थक दय् ईश् धातु योगे कर्मणि द्वितीया, षष्ठी च ।

१२. निमित्तार्थे चतुर्थी, किन्तु अवयव सम्बन्धे सप्तमी

१३. उपवसति (वासार्थे) योगे द्वितीया

उपवसति (उपवासार्थे) योगे सप्तमी

१४. क्रुधादि योगे चतुर्थी

उपसर्गयुक्त क्रुधादियोगे द्वितीया

१५. दूर निकटार्थक शब्द योगे - पञ्चमी, षष्ठी च

ग्रामात् / ग्रामस्य दूरे / निकटे

१६. दूरान्तिकार्थे - द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी च

ग्रामात् / ग्रामस्य, दूरं / दूरेण / दूरात् / दूरे / निकटें / निकटं / निकटेन / निकट्यात्...

१७. निर्धारणे, अतादर्रे स्वामि - श्रेष्ठादि योगे षष्ठी सप्तमी च

१८. मन् धातु प्रयोगे अनादरे अप्राणिवाचके शब्दे द्वितीया चतुर्थी च । (तृणं / तृणाय मन्यते)

प्राणिवाचकशब्दे केवलं द्वितीया - मां शूकरं मन्यते

१९. नमः - योगे चतुर्थी - देवाय नमः

नमस्करोति योगे द्वितीया - देवं नमस्करोति

तुमुन् प्रत्ययलोपे कर्मणि चतुर्थी

देवाय (देवम् तोषयितुम्) नमस्करोति ।

२०. अवच्छेदे सप्तमी - (अङ्गाङ्गि सम्बन्धे)

दन्तयोः हन्ति कुञ्जरम् ।

अङ्गाङ्गि सम्बन्धं विना - राजा यशसे हन्ति कुञ्जरम्

यशसे (यशः लब्धुम्) तुमुन् प्रत्ययलोपे कर्मणि चतुर्थी

NOTES

Scanned with CamScanner

NOTES

१. वाक्यं स्यात् योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्त: पदोच्चय:

२. वचनस्य योग्यम् - वाक्यम्

३. सार्थक पदसमूह द्वारा मनोभाव प्रकाश: नाम वाक्यम्

परस्परं सम्बन्धहीन पदै: वाक्य रचना न सम्भवति

४. एकस्मिन् वाक्ये - योग्यता (प्रासङ्गिकता) आवश्यकी

वानर: फलानि खादति ।इति योग्यं वाक्यम्

किन्तु फलानि वानरं खादन्ति - इति न सम्भवेत्

५. परस्परं पदं प्रति पुन: आकाङ्क्षा आवश्यकी

यथा - वानर: फलानि - इति अर्धोक्ते भाव: पूर्णतया न प्रकाश्यते, तदर्थं किमपि क्रियापदम् आवश्यकम् - पुन: अग्रे किमपि क्रियापदम् अपेक्षते / आकाङ्क्षति

वानर: फलानि खादति / पश्यति / क्षिपति एवं भवेत्

६. वाक्यमध्ये परस्परं यथास्थानं पदानि सन्ति चेत् दुर्बोध: भाव: न जायते ।

आसत्ति: नाम उपयुक्त स्थाने स्थिति:, यथार्थ पदविन्यास: । यथा सूर्यं परित: ग्रहा: भ्रमन्ति । एकं पदं श्रुत्वा तत् परपद श्रवणेन या ज्ञानधारा प्रवहति सा एव आसत्ति: । अन्यथा परित: ग्रहा: सूर्यं भ्रमन्ति - प्रतिपदम् अर्थ: स्पष्टतया प्रकाश्यते किन्तु वाक्ये पठने श्रवणे अर्थ: दुर्बोध्य: भवेत् ।

पद्य रचनायाम् एतादृशं सम्भवेत्, न तु गद्य रचनायां वाक्य रचनायां युज्यते ।

पुनरपि - कालक्षेपं कृत्वा स्थानं त्यक्त्वा वाक्यं न शोभते - हे बालका:! यूयं मेषशावकान्... पश्यत / आनयत / अपश्यत एवं वाक्यस्य गौरवं नाशयति ।

७. एक पदात्मकं वाक्यमपि सम्भवेत् ।

आयाहि / याहि / पठ / पठत / नमस्ते।

८. वाक्य निर्माणे साधारणत: प्रदत्तपदै: वाक्य रचनार्थं सुयोग: अपेक्षते, निरर्थकम्, अशुद्धंवाक्यं कस्मै न रोचते ।

९ सर्वजनबोधाय सरलतया वाक्यरचना विधेया ।

१०. पाण्डित्यपूर्ण शास्त्रीय- वाक्यरचना अवश्यं गुरुत्वपूर्णा किन्तु सामान्य जनानां तृप्तिं न जनयति ।

११. लघु लघु वाक्यं श्रुतिमधुरं सरलं च ।

१२. स्थानं कालं पात्रं च दृष्ट्वा विचार्य एव वाक्यं रचयेत् ।

१३. वाक्ये कर्ता समापिका क्रिया अवश्यं भवेताम् ।

१४. शब्दानां धातूनां कृदन्तपदानाम् अव्यय पदानां च कारक - विभक्त्यनुसारं यथास्थाने व्यवहार: कार्य: ।

Scanned with CamScanner

१५. कारक विभक्ति - अव्यय - शब्द - धातु प्रकरणेषु विहिता प्रयोगा: अनुशीलनीया: ।

१६. किमर्थं कस्य शब्दस्य कस्य धातो: वा कीदृश: प्रयोग: भवेत् तदपि अनुसरणीयम् ।

१७. कारक - विभक्ति प्रकरणानुसारं धातो: अव्यय पदानां च कुत्र कुत्र प्रयोग साधुता प्रदर्शिता प्राथम्येन तदपि ज्ञातव्या ।

१८. अवश्यम् प्रयोजनदृष्ट्या कारक विभक्तिं नाश्रित्य वाक्य रचनार्थं स्वातंत्र्यम् अपेक्षते तत्र अर्थप्राधान्यं भवेत् ।

यथा - नमो गणेश ! विघ्नेश !

वहि: गन्तव्यम् ।

उपरि आकाश:, अध: पृथिवी ।

कारक - विभक्ति प्रयोगार्थम् अत्र पदम् ऊह्यम् ।

१९. प्रदत्त पदयोगे वाक्य रचनार्थं निर्दिष्ट पदेन पृथक् विभक्ते: सम्भावना विचार्य एव वाक्यं रचयेत् ।

यथा - विना - जलं / जलेन / जलात् विना मीन: न जीवति ।

अलम् - विवादेन अलम् / विवादाय अलम् ।

दर्शयति - पिता पुत्रं / पुत्राय चन्द्रं दर्शयति ।

श्रेष्ठ: - कालिदास: कवीनां / कविषु श्रेष्ठ: ।

महती (महत् नपुंसक - प्रथमा - द्वितीया द्विवचने)

महती फले आनय

महती (स्त्री) गङ्गा एका महती नदी

एवम् अन्यत्रापि अवधेयम्

नर: - बुद्धिमान् नर: गच्छति (नर - प्रथमा एकवचने)

I नर: (नृ - प्रथमा बहुवचने) नर: बुद्धिमन्त: गच्छन्ति ।

२०. आप्तवाक्यानि शिष्टवाक्यानि स्वकीयायां वाक्य रचनायां नैव व्यवहरेत् ।

यथा - एव - सत्यमेव जयते ।

देहि - भवति भिक्षां देहि

यत: तत: - यतो धर्मस्ततो जय:

सर्वदा प्रासङ्गिकं सरलं युगोपयोगि वाक्यं रचयेत् ।

❖❖❖

NOTES

Scanned with CamScanner

NOTES

UNIT - IV

अव्ययज्ञानम्

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिु ।

वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम् ।।

त्रिषु लिङ्गेषु,सर्वासु विभक्तिषु त्रिषु वचनेषु यस्य किमपि परिवर्त्तनं न भवति तद् अव्ययपदम् इति उच्यते । यत् + न + वि + एति (विशेषेण विकृतिम् एति गच्छतीति)

साधारणत: अव्ययरूपेण व्यवहृता: केचन शब्दा: (पदानि) तेषां वाक्येषु प्रयोग: ।

१. स्वर् (स्वर्ग:) धार्मिका: स्वर्गच्छन्ति ।

२. अन्त: (मध्ये) सर्वेषाम् अन्त: ईश्वर: विराजते ।

३. प्रात: (प्रभाते) प्रात: भ्रमणं हितकरम् ।

४. पुन: (वारंवारम्) शत्रु: पुन: आगमिष्यति ।

५. उच्चै: (उपरि / उच्चस्वरेण) कुक्कुर: उुच्चै: बुक्कति ।

६. नीचै: (अध: / नीचस्वरेण) चक्रं नीचै:! गच्छति ।

७. शनै: (धीरम्) गज: शनै: गच्छति ।

८. ऋते (विना) धनम् / धनात्) ऋते सुखं नास्ति ।

९. युगपत् (एकस्मिन् एव मिलितसमये) राज्ञ: युगपत् पुत्रलाभ: - राज्यलाभश्च अभवताम् ।

१०. आरात् (निकटे दूरेवा वाक्चातुर्ये) वनात् आरात् ग्राम: ।

११. पृथक् (भिन्नम्) मानवा: दानवा: देवा: एते सन्ति पृथक् पृथक् ।

१२. ह्य: (गतदिवसे) ह्य: रविवासर: ।

१३. अद्य (अद्यतनदिवसे) अद्य सोमवासर: ।

१४. श्व: (आगमिदिवसे) श्व: मङ्गलवासर: ।

१५. दिवा (दिवस:) दिवा शयनं नोचितम् ।

१६. सायम् (सन्ध्याकाल:) सायं प्रार्थनां कुर्वन्ति छात्रा: ।

१७. चिरम् (विलम्ब: / बहुकाल:) कीर्त्ति: चिरं तिष्ठति ।

१८. तूष्णीम् (नीरवता) मार्जार: तूष्णीं दुग्धं पिबति ।

१९. वहि: (बहिर्भागे) ग्रामात् वहि: शस्यक्षेत्राणि सन्ति ।

२०. निकषा (निकटे) कटकं निकषा महानदी वहति ।

२१. वृथा (निरर्थकम्) मूर्खा: वृथा समयं नाशयन्ति ।

Scanned with CamScanner

२२. नक्तम् (रात्रिः) नक्तं दधि न पिबेत् ।

२३. अन्तरा (मध्ये) समुद्रम् अन्तरा श्रीलङ्का ।

२४. जगन्नाथं बलभद्रं च अन्तरा सुभद्रा राजति ।

२५. अन्तरेण (विना) अम्लजानम् अन्तरेण नरः न जीवति ।

२६. सहसा (हठात्) सहसा किमपि कर्म न कुर्यात् ।

२७. विना / नाना (व्यतीतम्) श्रमं / श्रमात् विना / नाना फलं न लभ्यते ।

२८. स्वाहा (देवाय समर्पणे) अग्नये स्वाहा ।

२९. स्वधा (पितृ - निमित्तम्) पितृभ्यः स्वधा ।

३०. परितः (चतुः पार्श्वे) गृहं परितः प्राचीरं शोभते

३१. अभितः (अग्रे) मातरम् अभितः शिशुः धावति ।

३२. सर्वतः (सर्वासु दिक्षु) देशं सर्वतः वन्या भवति ।

३३. उभयतः (द्वयोः पार्श्वयोः) मार्गम् उभयतः वृक्षाः शोभते ।

३४. सर्वत्र (सर्वस्मिन्स्थाने) साधवः नहि सर्वत्र ।

३५. एकत्र (एकस्मिन् स्थाने) छात्राः एकत्र पठन्ति क्रीडन्ति च ।

३६. परत्र (परस्मिन् स्थाने) धर्मः परत्र रक्षति ।

३७. अत्र (अस्मिन् स्थाने / तस्मिन् स्थाने) अत्र आगच्छ ।

३८. तत्र (तस्मिन् स्थाने) तत्र न गन्तव्यम् ।

३९. यत्र (यस्मिन् स्थाने) यत्र धूमः तत्र वह्निः ।

४०. कुत्र (कस्मिन् स्थाने) तव गृहं कुत्र?

४१. क्व / कुह (कुत्र) क्व रामः ? / कुह अहन् !

४२. इह (अस्मिन् स्थाने / संसारे) इह धर्मस्य हानिः दृश्यते ।

४३. अतः (एतस्मान् स्थानात् / कारणात् / हेतोः) अतः परं किम् ?

४४. वृष्टिः भवति, अतः विद्यालयस्य अवकाशः ।

४५. कुतः (कस्मात् स्थानात् / कारणात् / हेतोः) कुतः आयासि भ्रातः ?

४६. ततः (तस्मात् स्थानात् / कारणात् / हेतोः) ततः परं भोजनम् । यतःधर्मः ततः जयः ।

४७. यतः (यस्मात् स्थानात् / कारणात् / हेतोः) यतः अद्य रविवारः, अतः अहं न गच्छामि ।

४८. इतः - (अस्मात् स्थानात्) इतः त्वं कुत्र न गच्छ । इतस्ततः न भ्रमेत् ।

४९. अन्यदा / अन्यर्हि (अन्यस्मिन् दिने) भवान् अन्यदा / अन्यर्हि आगच्छतु ।

Scanned with CamScanner

NOTES

५०. कदा / कर्हि (कस्मिन् काले) कदा / कर्हि निर्वाचनं भविष्यति?

५१. यदा / यर्हि (यस्मिन् काले) यदा सूर्यः अस्तं गमिष्यति तदा प्रार्थनां करिष्यति।

५२. तदा / तर्हि (तस्मिन् काले / तदानीम्) - तदा किं भविष्यति।

५३. इदानीम् (अधुना / एतर्हि) (अस्मिन् काले) इदानिम् अधुना वर्षाकालः।

५४. सर्वथा - (सर्वेण प्रकारेण) सर्वथा हिंसा वर्जनीया।

५५. अन्यथा (अन्येन प्रकारेण) पाठं पठ अन्यथा कृषिं कुरु।

५६. उभयथा - (उभाभ्यां प्रकाराभ्याम्) त्यागः भोगश्च उभयथा न भवेताम्।

५७. यथा (येन प्रकारेण) यथा कार्यं तथा फलम्।

५८. तथा (तेन प्रकारेण) अहं यथा वदामि त्वं तथा कुरु।

५९. कथम् (केन प्रकारेण / किमर्थम्) कथं विलम्बेन आगतः

६०. इत्थम् (अनेन प्रकारेण) इत्थं कुकर्म न करणीयम्।

६१. एकधा (एकविधा / एकेन प्रकारेण)

६२. महापुरुषस्यवचनं कर्म च एकधा भवति।

६३. द्विधा (द्वेविधे / द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम्)

६४. विशालं फलं द्विधा अभवत्। द्विधा वचनात् संशयः जायते।

६५. सहस्रधा (सहस्रं विधाः) सहस्रेण प्रकारैः - धर्मस्य रहस्यं सहस्रधा विभक्तम्।

६६. पञ्चकृत्वः (पञ्चवारान्) शिशुः रात्रेः पञ्चकृत्वः अक्रन्दत्।

६७. सप्तकृत्वः (सप्तवारान्) मन्त्री मासस्य सप्तकृत्वः ग्रामं गच्छति।

६८. द्विः (द्वौ वारौ) भक्ताः वर्षस्य द्विः दुर्गोत्सवं पालयन्ति।

६९. त्रिः (त्रीन् वारान्) मुनयः दिवसस्य (दिवा) त्रिः स्नान्ति।

७०. चतुः (चतुरः वारान्) गोपालः सप्ताहस्य चतुः पुरीं याति।

७१. सकृत् (एकं वारम्) दिवसस्य सकृत् अपि हरिंस्मरेत्।

७२. अलम् (भूषणम्) विद्या मनुष्यम् अलं करोति।

७३. अलम् (सामर्थ्य वाचकम्) वीरः युद्धाय अलम्।

७४. अलम् (वारणार्थकम्) कलहेन अलम्।

७५. मिथ्या (भ्रमात्मकम् / अवास्तवम्) ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या।

७६. पुरा (पूर्वकाले) पुरा राजतन्त्राम् आसीत्।

७७. अभीक्ष्णम् (वारंवारम्) माता पुत्रम् अभीक्ष्णं स्मरति।

Scanned with CamScanner

NOTES

७८. सह, समम्, साकम्, सार्धम् (साहित्येन) मात्रा सह / समं / साकं / सार्धं कन्या आगच्छति ।

७९. नमः (भक्त्या अवनतभावः) गुरवे नमः ।

८०. धिक् (निन्दायान्) चरित्रहीनं धिक् ।

८१. मा (निषेधे) मा कुरु धनान यौवनगर्वम् ।

८२. च (मिश्रणे पादपूरणे) पिता पुत्रः च आगच्छतः ।

८३. वा (विकल्पे) रामः रहिमः वा गच्छतु ।

८४. एव (केवलम्) सत्यम् एव जयते ।

८५. एवम् (एतावता प्रकारेण) हिंसा वर्जनीया एवं सर्वदा चिन्तयेत् ।

८६. हि (यतः / निश्चयेन) अहिंसा हि परमो धर्मः ।

८७. नूनम् (निश्चयेन) नूनं वृष्टिः भविष्यति ।

८८. शश्वत् (सर्वदा) आत्मा शश्वत् तिष्ठति ।

८९. यावत् (पर्यन्तम्) नदीं यावत् बन्धुम् अनुसरेत् ।

९०. तावत् (तथा) यावत् जननं तावत् मरणम् ।

९१. खलु (वस्तुतः) गुरुः खलु शिष्याणां गतिः ।

९२. अथ (शुभारम्भे / अतः परम्) अतथ सुप्रभातम् । अथ प्रतियोगिता भविष्यति ।

९३. इव (सादृश्यवाचके) दुर्जनः सर्पः इव खलः ।

९४. यदि / चेत् (सम्भवे सति) यदि तत्र गच्छसि, उत्तमं फलं प्राप्नोषि ।

९५. अपि (साहचर्येण, प्रश्ने) रामेण सह सीता अपि अगच्छत् । अपि छात्राः संस्कृतं पठन्ति ?

९६. तर्हि (ततः) यदि पठिष्यति तर्हि प्रशंसितः भविष्यति ।

९७. तत्र तत्र (स्थाने स्थाने) गावः तत्र तत्र विचरन्ति ।

९८. अथकिम् (स्वीकारे) किं ज्ञानम् ? अथकिम् ।

९९. वाढ़म् (स्वीकारे) अवगतंवा ? - वाढ़म् अवगतम् ।

१००. आम् (स्वीकारे) शीघ्रं तत्र याहि - आम्, यामि ।

१०१. प्राक् (पूर्वम्, प्रथमतः) प्राक् भारतं पराधीनम् । भोजनात् प्राक् हस्तं प्रक्षालयेत् ।

१०२. पश्चात् (पृष्ठतः) मम पश्चात् गोपालः आगच्छति । प्रथमं पठनम्, पश्चात् क्रीडा ।

१०३. भोः / हे (संबोधनार्थे) भोः / हे प्रभो! पाही माम् ।

१०४. अरे / रे (निन्दार्थसंबोधने, पादपूरणार्थे) अरे रे दुष्ट दानव! दूरं गच्छ ।
(पादपूरणार्थे) आगतः श्यामल! तव दर्शननिमित्तंरे ।

Scanned with CamScanner

NOTES

१०५. असकृत् (वारंवारंम्) असकृत् विद्या अभ्यसनीया ।

१०६. अधुना (वर्तमानकाले) अधुना गणतत्रशासनं प्रचलति ।

१०७. इदानीम् (वर्त्तमान काले) इदानीं वर्षाकाल: ।

१०८. सम्प्रति (वर्त्तमान काले) सम्प्रति कोलाहल: श्रूयते ।

१०९. असाम्प्रतम् (अनुचितम्, सम्प्रति न युज्यते इत्यर्थ:) रोपित: विषवृक्षोऽपि स्वयं छेत्तुम् असाम्प्रतम् ।

११०. पुर: - मम पुर: मन्दिरं शोभते ।

१११. पुरत: (अग्रे / समक्षम्) - तव पुरत: क: ?

११२. पुरस्तात् - यानस्य पुरस्तात् न धाव ।

११३. अग्रत: - अग्रत: क: याति ?

११४. दक्षिणा (दक्षिण भागे) ग्रामात् दक्षिणा नदी वहति ।

११५. दक्षिणत: - मार्गस्य दक्षिणत: वृक्षा: सन्ति ।

११६. दक्षिणाहि - भारतात् दक्षिणाहि कन्याकुमारी ।

११७. दक्षिणेन - मां / मम दक्षिणेन तिष्ठ ।

११८. उत्तरा (उत्तरदिशि / वामभागे) कटकात् उत्तरा महानदी ।

११९. उत्तरत: (उत्तरदिशि) भारतस्य उत्तरत: हिमालय: ।

१२०. उत्तराहि - ग्रामाात् उत्तराहि वनमस्ति ।

१२१. उत्तरेण- देशस्य देशम् उत्तरेण चीनदेश: ।

१२२. अध: - निम्नभागे वृक्षस्य अध: छाग: चरति ।

१२३. अतीव (अतिशयेन) राम: अतीव चतुर: ।

१२४. अनु (पश्चात् / निकृष्टे) रामम् अनु सीता याति । मानवा: देवान् अनु ।

१२५. ऋते (विना) धनम् / धनात् ऋते सुखं नास्ति ।

१२६. आशु (शीघ्रम्) त्वम् आशु आगच्छ ।

१२७. उपरि (ऊर्ध्वम्) प्रासादस्य उपरि वानर: अस्ति ।

१२८. अहो (विस्मये) अहो कीदृशी वन्या ?

१२९. ईषत् (अल्पम्) ईषत् उष्णं जलं पिबेत् ।

१३०. ऐषम: (अस्मिन्वर्षे) ऐषम: वात्या अभवत् ।

१३१. परुत् (गतवर्षे) परुत् निर्वाचनं जातम् ।

Scanned with CamScanner

१३२. परारि (विगतवर्षे) परारि भूकम्प: जात: ।

१३३. किन्तु / तु / परन्तु । हरि: दुर्बल: किन्तु बुद्धिमान् ।

१३४. नाम (इति) धर्म: नाम कर्त्तव्यपालनम् ।

१३५. भूय: (वारंवारम्) भूयो भूय: नमोनम: ।

१३६. भृशम् (।) बालिका भृशं क्रन्दति ।

१३७. नितराम् (अतीव) चौर: नितरां चतुर: ।

१३८. रहसि (एकान्ते) त्वं रहसि किं करोषि ?

१३९. सहसा (हठात्) सहसा प्रतिकारं कुर्यात् ।

१४०. हठात् (साक्षात् समये) हठात् विस्फोरणं जातम् ।

१४१. सम्यक् / सुष्ठु (उत्तमभावेन) सम्यक् / सुष्ठु कथितम् ।

१४२. समया (समीपे) याजपुरं समया वैतरणी वहति ।

१४३. सद्य: / सपदि (तत्काले) सद्य: / सपदि प्रधानमन्त्री विदेशात् आगतवान्

१४४. साधु (उत्तमम्) बालक: साधु वदति ।

१४५. मुहुर्मुहु (पुन: पुन:) शरीरं मुहुर्मुहु: कम्पते ।

१४६. पृथक् (भिन्नम्) पाकिस्थानं भारतात् पृथक् अभवत् ।

१४७. मिथ: (परस्परम्) मिथ: कलह: न करणीय: ।

१४८. मुधा (वृथा) तस्य श्रंम: मुधा / वृथा ।

१४९. स्वस्ति (मङ्गलम्) तुभ्यं स्वस्ति ।

१५०. हन्त (दु:खे विस्मये) हन्त! गृहदाहे क: रक्षेत् ?

१५१. मनाक् (अल्पम्) मनाक् अपि मिथ्या हानिं करोति ।

१५२. चिरम् / चिरेण / चिराय / चिरात् / चिरस्य (बहुकालम्)
अस्माकं राष्ट्रं चिरं / चिरेण/ चिराय.. रक्षाम:

कृदन्तगत क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, णमुल, प्रत्ययान्ता: शब्दा: अव्ययरूपेण स्वीकृता: ।

यथा - गत्वा, आगत्य, गन्तुम्, स्मारम्, स्मारम्, राम: ग्रामम् गत्वा / आगत्य सेवां करोति ।

अहं नगरं गन्तुम् इच्छामि ।

कवि: स्मारं स्मारं कवितां गायति / लिखति ।

❖❖❖

Scanned with CamScanner

NOTES

UNIT - V

सामान्य व्यावहारिकवाक्यावली

१. शिष्टाचारः

१. हरिः ओम् ।

२. सुप्रभातम् ।

३. नमस्ते / नमस्कारः ।

४. शुभरात्रिः ।

५. धन्यवादः ।

६. स्वागतम् ।

७. क्षम्यताम् ।

८. चिन्ता मास्तु ।

९. कृपया ।

१०. पुनः मिलामः ।

११. अस्तु ।

१२. श्रीमन् ।

१३. मान्ये / आर्ये ।

१४. बहु समीचीनम् ।

२. मेलनम्

१. भवतः नाम किम् ? (पुं)

२. भवत्याः नाम किम् ? (स्त्री)

३. मम नाम ....

४. एषः मम मित्रं ... ।

५. एतस्य नाम श्रुतवान् ।

६. एषा मम सखी ...... ।

७. भवान् किम् (उद्योगं) करोति ?

८. भवती किम् (उद्योगं) करोति ?

९. अहम् अध्यापकः अस्मि ।

Scanned with CamScanner

१०. अहम् अध्यापिका अस्मि ।

११. अधिकारी /

१२. अभियन्ता /

१३. लिपिकारः /

१४. विक्रयिकः /

१५. उट्टङ्ककः /

१६. प्राध्यापकः/

१७. अधिवक्ता/

१८. व्याख्याता/

१९. अहं यन्त्रागारे कार्यं करोमि ।

२०. कार्यालये /

२१. वित्तकोषे /

२२. उच्चविद्यालये /

२३. महाविद्यालये /

२४. चिकित्सालये /

२५. यन्त्रागारे /

२६. भवान् / भवती कस्यां कक्षायां पठति ?

२७. अहं नवमकक्षायां पठामि ।

२८. अहं बि.एस्.सि. कक्षायां पठामि ।

२९. भवतः ग्रामः ?

३०. मम ग्रामः ......

३१. कुशलं किम् ?

३२. गृहे सर्वं कुशलं किम् ?

३३. अन्यः कः विशेषः ?

३४. कुतः आगच्छति ?

३५. विद्यालयतः / गृहतः / ....तः आगच्छामि

३६. कुत्र गच्छति ?

३७. देवालयं / कार्यालयं / विपणिं गच्छामि ।

Scanned with CamScanner

NOTES

३८. किं मेलनं विरलं जातम् ?

३९. भवन्तं कुत्रापि दृष्टवान् ।

४०. कुशली / कुशलिनी अस्ति ।

४१. भवान् सम्भाषणशिबिरम् आगतवान् किम्?

४२. तर्हि कुत्र दृष्टवान् ?

४३. तर्हि तत्रैव दृष्टवान् स्याम् ।

३. सरल - वाक्यानि

१. तथैव अस्तु ।

२. जानामि ।

३. आम्, तत् सत्यम् ।

४. समीचीना सूचना ।

५. स्वल्पम् एव ।

६. किमर्थं तद् न भवति ?

७. भवतु नाम ।

८. ओहो! तथा किम्?

९. एवमपि अस्ति किम् ?

१०. अथ किम्?

११. नैव किल ।

१२. भवतु ।

१३. आगच्छतु ।

१४. उपविशतु ।

१५. सर्वथा न ।

१६. किम् अन्यत्?

१७. अस्तु किम्?

१८. किमर्थं श्रीमन्?

१९. प्राप्तं खलु ?

२०. किम् भवति इति पश्यामः ।

Scanned with CamScanner

२१. ज्ञातम्?

२२. कथम् आसीत्?

२३. अङ्गीकृतं खलु?

२४. कति अपेक्षितानि?

२५. अद्य एव किम्?

२६. इदानीम् एव किम्?

२७. आगन्तव्यं भो: ।

२८. तदर्थं किम् ।

२९. तत् किमपि मास्तु ।

३०. न दृश्यते?

३१. समाप्तम्?

३२. कस्मिन् समये?

३३. तथापि... ।

३४. आवश्यकं न आसीत् ।

३५. तिष्ठतु भो: ।

३६. स्मरति खलु?

३७. तथा किमपि नास्ति ।

३८. कथम् अस्ति भवान्?

३९. मा विस्मरतु ।

४०. अन्यच्च...

४१. तदनन्तरम्...

४२. तावदेव खलु?

४३. महान् आनन्द: ।

४४. तथा न ।

४५. तस्य क: अर्थ:?

४६. आम्...

४७. एवमेव...

Scanned with CamScanner

NOTES

२८. मां किञ्चित् स्मारयतु ।

२९. तम् अहं सम्यक् जानामि ।

३०. तदानीमेव उक्तवान् खलु ?

३१. कदा उक्तवान् ?

३२. यत्किमपि भवतु ।

३३. सः बहु समीचीनः ।

३४. सः बहु रूक्षः ।

३५. तद्विषये चिन्ता मास्तु ।

३६. तथैव इति न नियमः ।

३७. कर्तुं शक्यम्, किञ्चित् समयः अपेक्ष्यते ।

३८. एतावत् तु कृतवान् ।

३९. द्रष्टुम् एव न शक्यते ।

४०. तत्रैव कुत्रापि स्यात् ।

४१. यथार्थं वदामि ।

४२. एवं भवितुम् अर्हति ।

४३. कदाचित् एवमपि स्यात् ।

४४. किम् अहं तावदपि न जानामि ?

४५. कः न इच्छति ?

४६. तत्र गत्वा किं करोति ?

४७. पुनः आगच्छन्तु ।

४८. मम कोऽपि क्लेशः नास्ति ।

४९. एतत् कष्टकरं न ।

५०. किम् आनीतवान् ?

५१. भवन्तं कः उक्तवान् ?

५२. किञ्चिदनन्तरम् आगच्छेत् ।

५३. प्रायः तथा न स्यात् ।

५४. चिन्ता मास्तु, श्वः ददातु ।

५५. अहं पुनः सूचयिष्यामि ।

५६. अद्य आसीत् किम् ?

Scanned with CamScanner

NOTES

५७. अवश्यम् आगमिष्यामि ।

५८. किम् नागराज: अस्ति?

५९. किमर्थम्, एवं जातम् ?

६०. किम्, तत्र एव आसीत्?

६१. कुत: आनीतवान्?

६२. अन्यत् किमपि कार्यं नास्ति ।

६३. मम वचनं शृणोतु ।

६४. एतत् सत्यं खलु?

६५. तद् अहमपि जानामि ।

६६. तावत् आवश्यकं न ।

६७. भवत: का हानि:?

६८. किमर्थम् एतावान् विलम्ब: ?

६९. यथेष्टम् अस्ति ।

७०. भवत: अभिप्राय: क:?

७१. तस्य किं कारणम्?

७२. स्वयमेव करोति किम्?

७३. तत् मह्यं न रोचते ।

७४. उक्तम् एव रटति स: ।

७५. अन्यथा बहु कष्टम् ।

७६. किमर्थं पूर्वं न उक्तवान्?

७७. स्पष्टं न जानामि ।

७८. निश्चय: नास्ति ।

७९. भवान् कुत्र आसीत् ?

८०. भीति: मास्तु ।

८१. भयस्य कारणं नास्ति ।

८२. तदहं बहु इच्छामि ।

८३. कियत् लज्जास्पदम्!

८४. एष: मम दोष: न ।

Scanned with CamScanner

NOTES

८५. मम तु आक्षेप: नास्ति ।

८६. स: शीघ्रकोपी ।

८७. गम्भीर: मा भवतु ।

८८. युक्ते समये आगतवान् ।

८९. बहु जल्पति भो: ।

९०. एषा केवलं किंवदन्ती ।

९१. किमपि न भवति ।

९२. एवमेव आगतवान् ।

९३. विना कारणं किमर्थं गन्तव्यम्?

९४. भवत: वचनं सत्यम् ।

९५. मम वचनं क: शृणोति?

९६. तदा किमपि न स्फुरितम् ।

९७. किमर्थं तावती चिन्ता?

९८. भवत: किम् अस्ति कष्टम्?

९९. राम राम, एवं न भवितव्यम् आसीत् ।

१००. अन्यथा मा चिन्तयतु ।

५. मित्र-मिलनम्

(सामान्यमिलनम् अकस्मात् दर्शनम्)

१. नमो नम: ।

२. किं भो: दर्शनमेव नास्ति?

३. नैव, अत्रैव सञ्चरामि किल!

४. किं भो:, वार्ता एव नास्ति?

५. किं भो:, एकं पत्रम् अपि न लिखितम्?

६. वयं सर्वे विस्मृता: किम्?

७. कथं विस्मरणं भवति?

८. भवत: सङ्केतम् एव न जानामि स्म ।

९. महापुरुष: संवृत्त: भवान् ।

Scanned with CamScanner

NOTES

१०. भवान् एव किम्? दूरतः न ज्ञातम् ।

११. ह्यः भवन्तं स्मृतवान् ।

१२. कथम् अत्र आगमनम्?

१३. अत्रैव किञ्चित् कार्यम् आसीत् ।

१४. त्वरितं कार्यम् आसीत् ।

१५. अतः आगतवान् ।

१६. बहुकालतः प्रतीक्षां करोमि ।

१७. यानं न प्राप्तं, अतः एव विलम्बः ।

१८. आगच्छतु भोः, गृहं गच्छामः ।

१९. इदानीं समयः नास्ति ।

२०. श्वः सायं मिलाम किम्?

२१. अवश्यं तत्रैव आगच्छामि ।

२२. इदानीं कुत्र उद्योगः?

२३. यन्त्रागारे उद्योगः ।

२४. एकत्र अध्यापकः अस्मि ।

२५. इदानीं कुत्र वासः?

२६. एषः मम गृहसङ्केतः ।

२७. यानम् आगतम्, आगच्छामि ।

२८. अस्तु, पुनः मिलामः ।

२९. पुनः अस्माकं मेलनं कदा ?

३०. तद्दिने किमर्थं भवान् न आगतवान्?

३१. वयं तदा एव आगतवन्तः ।

३२. भवतः समीपे सम्भाषणीयम् आसीत् ।

३३. भवान् अन्यथा गृहीतवान् ।

३४. भवतः बहु प्रतीक्षां कृतवान् ।

३५. बहुकालतः तस्य वार्ता एव नास्ति ।

३६. भवतः पत्रम् इदानीम् एव लब्धम् ।

३७. गच्छाम, किञ्चिद्दूरम् अहमपि आगच्छामि ।

Scanned with CamScanner

NOTES

३८. तिष्ठतु भोः, अर्धार्धं काफी पिबाम ।

३९. अस्तु, पिबाम ।

४०. स्थातुं समयः नास्ति ।

४१. गमनात् अनुक्षणमेव पत्रं लिखतु ।

४२. पुनः कदाचित् मेलिष्यामि ।

४३. तान् (तेभ्यः) मम शुभाशयान् निवेदयतु ।

४४. किमर्थम् एवं वदति?

४५. किञ्चित्कालं तिष्ठतु ।

४६. अत्र पत्रालयः कुत्र अस्ति?

४७. कियद्दूरे अस्ति?

४८. वित्तकोषः कियद्दूरे अस्ति?

४९. किमर्थम् एवं त्वरा?

५०. इतोऽपि समयः अस्ति किम्?

५१. सर्वस्य अपि मितिः भवेत् ।

५२. कियद् दातुं शक्यम्?

५३. कस्मिन् समये प्रतीक्षा करणीया?

५४. गृहे उपविश्य किं करोति?

५५. भवतः परिचयः एव न लब्धः ।

५६. किं भोः, बहु कृशः जातः?

५७. अवश्यं मम गृहम् आगन्तव्यम् ।

५८. सः सर्वत्र दर्वीं चालयति ।

५९. यथा भवान् इच्छति ।

६०. परिहासाय उक्तवान् भोः ।

६१. एषः भवतः अपराधः न ।

६२. नैव, चिन्ता नास्ति ।

६३. वयम् इदानीम् अन्यगृहे स्मः ।

६४. भवान् मम अपेक्षया ज्येष्ठः किम्?

६५. ओहो, मम अपेक्षया कनिष्ठः किम्?

Scanned with CamScanner

NOTES

६६. भवान् विवाहित: किम्?

६७. नैव, इदानीमपि एकाकी ।

६८. भवत: पिता कुत्र कार्यं करोति?

६९. स: वर्षद्वयात् पूर्वमेव निवृत्त: ।

७०. स: वृद्ध: इव भाति ।

७१. भवन्त: सर्वे सहैव वसन्ति किम्?

७२. नैव, सर्वे विभक्ता: ।

७३. भवत: वय: किम्?

७४. भवन्त: कति सहोदरा:?

७५. वयम् आहत्य अष्ट जना: ।

७६. तेषु भवान् कतम:?

७७. भवान् एव ज्येष्ठ: किम्?

७८. मम एक: अग्रज: अस्ति?

७९. स: इदानीमपि बाल: ।

८०. भवत: अनुजाया: वय: किम्?

८१. भवान् मा ददातु, मा स्वीकरोतु ।

८२. अन्यं कमपि न पृच्छतु।

८३. स: बहु वदति ।

८४. तर्हि सर्वं दायित्वं भवत: एव ।

८५. सर्वत्र अग्रे सरति ।

८६. भवन्तं गृहे एव द्रक्ष्यामि ।

८७. स: निष्ठावान् ।

८८. यावदहं प्रत्यागच्छामि

८९. तावत् प्रतीक्षां करोतु ।

९०. द्वयो: एक: आगच्छतु ।

९१. तस्मै विषय: निवेदित: किम्?

९२. तस्य स: अत्यन्तं प्रीतिपात्रम् ।

९३. भवता इदं न कर्तव्यम् ।

Scanned with CamScanner

NOTES

९४. यदि सःस्यात्... ।

९५. अवश्यम् आगन्तव्यं, न विस्मर्तव्यम् ।

९६. कियत्कालं तिष्ठति ?

९७. अहम् अपि एतां वार्तां श्रुतवान् ।

९८. सः स्तोकात् मुक्तः ।

९९. भवन्तं द्रष्टुं सः पुनः आगच्छति किम्?

१००. अहं किमर्थम् असत्यं वदामि ?

१०१. भवान् अपि एवं वदति किम्?

१०२. भवान् एवं कर्तुम् अर्हति किम्?

१०३. भवान् गच्छतु, मम किञ्चित् कार्यम् अस्ति ।

१०४. वृथा भवान् चिन्तां करोति ।

१०५. दैवेच्छा तथा आसीत्, किं कुर्मः ?

१०६. अहम् अन्यद् उक्तवान् भवान् अन्यद् गृहीतवान् ।

१०७. एतावद् असत्यं वदति इति अहं न ज्ञातवान् ।

१०८. प्रमादवशात् संवृत्तम्, न तु ।

१०९. अयम् , एकः शनिः ।

११०. भवदुक्तं सर्वम् अपि अङ्गीकर्तुं न शक्यम् ।

१११. अहं गन्तुं न शक्नोमि ।

११२. विषयस्य वर्धनं मास्तु ।

११३. सर्वेऽपि पलायनशीलाः ।

११४. असम्बद्धं मा प्रलपतु ।

११५. सर्वस्य अपि भवान् एव मूलम् ।

११६. सरलतया तस्य जाले पतितवान् ।

११७. अस्माकं मेलनान्तरं बहु कालः अतीतः ।

११८. इदानीम् आगन्तुं न शक्यते ।

११९. भवान् अपि अङ्गीकरोति किम् ?

१२०. किं, भवान् अपि विश्वसितवान्?

१२१. सः विश्वासयोग्यः किम्?

Scanned with CamScanner

NOTES

१२२. किम्, किञ्चित् साहाय्यं करोति?

१२३. समय: कथम् अतिशीघ्रम् अतीत: ।

१२४. युक्ते समये आगतवान् ।

१२५. एकनिमेष: विलम्ब: चेत् अहं गत: स्याम् ।

१२६. अहमपि भवता सह आगच्छमि किम्?

१२७. किञ्चित्कालं ददाति किम्?

१२८. इदानीं मया अपि अन्यत्र गन्तव्यम् ।

१२९. भवान् स्वकार्यं पश्यतु ।

१३०. शीघ्रं प्रत्यागमिष्यामि ।

१३१. आवश्यकं चेत् श्व: आनेष्यामि ।

१३२. 'मास्तु" इत्युक्तेऽपि स: न शृणोति ।

६. यात्रा

१. चिटिकां कुत्र क्रीणामि?

२. शीघ्रम् आगच्छतु, यानं गच्छेत्?

३. इदानीम् एव एकं यानं गतम् ।

४. अहं भवत: पार्श्वे; उपविशामि ।

५. किञ्चित् समञ्जनं कुर्म: ।

६. महान् जनसम्मर्द: ।

७. परीवर्त्तं ददातु ।

८. अग्रे चलतु ।

९. यानं कदा वा निर्गच्छति?

१०. शीघ्रम् अवतरतु ।

११. किम् अग्रिमं स्थानम् अस्माकम्?

१२. यानस्य का संख्या?

१३. फलकमपि नास्ति, किमपि नास्ति ।

१४. यानं न लब्धम् ।

१५. यानं दशवादने आगच्छति ।

Scanned with CamScanner

१६. यानस्य निर्गमनाय इतोऽपि अर्धघण्टा अस्ति ।

१७. पञ्चवादने अपि एकं यानम् अस्ति ।

१८. यानं तदानीम् एव आगत्य स्थितम् ।

१९. आरक्षणं नास्ति ।

२०. एवमेव अग्रे गच्छतु ।

२१. अत्रैव कुत्रचित् स्यात्, अन्वेषणं कुर्मः ।

२२. तत्रैव अस्ति / तत्रैव स्यात् ।

२३. अहं न जानामि, अन्यं पृच्छतु ।

२४. भवान् शीघ्रं न गच्छति चेत् यानं न लभ्यते ।

२५. अयं मार्गः कुत्र गच्छति?

२६. भवान् आरक्षणं कृतवान् किम्?

२७. सर्वं स्वीकृतवान् खलु?

२८. यानपेटिकाम्, चिटिकाम्

२९. यानस्यूतम्

३०. वनितास्यूतम्

३१. धनविषये जागरूको भवतु ।

३२. ततः आगन्तुम् एतावान् विलम्बः किमर्थम्?

३३. एकम् अपि यानं न आगतम् ।

३४. षष्टिसंख्याकं यानं गतं किम्?

३५. अहम् इदानीम् एव आगतवान् ।

३६. कीदृशः मार्गः एषः ?

७. प्रवासतः प्रतिनिवर्तनम्

१. कदा आगतवान्?

२. अद्य प्रातः आगतवान् किम्?

३. कथम् आसीत् प्रवासः?

४. प्रवासे व्यवस्था समीचीना आसीत् किम्?

५. कति दिनानां प्रवासः?

६. एकाकी गतवान् किम्?

Scanned with CamScanner

NOTES

७. एकाकी किमर्थम्?

८. परिवारसमेत: गतवान्।

९. दिनत्रयं तत्र स्थितवान्।

१०. मार्गमध्ये दुर्घटना सञ्जाता।

११. विशेषतया कोऽपि न आहत:।

१२. वस्तूनि एतावन्ति एव किम्?

१३. बहुधा श्रान्त: अस्मि भो:?

१४. त्रिचक्रिका किमर्थम्?

१५. लोकयानेन गच्छाम:।

१६. लोकयानेन, सुखयानेन

१७. सामिसुखयानेन

१८. त्रिचक्रिकया

१९. पादाभ्याम्

२०. संलपन्त:

२१. क: प्रतीक्षते भो:?

२२. त्रिचक्रिकया एव गच्छाम:।

२३. किमर्थं वृथा व्यय: इति?

२४. बहुकालत: प्रतीक्षां करोमि।

२५. कदा प्रस्थित:?

२६. काशीं, रामेश्वरं, सर्वं दृष्टवान् किम्?

२७. कियत् सुन्दरम् अस्तीति, जानाति किम्?

२८. महद् अद्भुतम्।

८. चलच्चित्रम्

१. मासे कति चित्राणि पश्यति?

२. द्वयं त्रयं वा।

३. चित्रमन्दिरं पूर्णम् आसीत्।

४. महान् सम्मर्द: आसीत्।

Scanned with CamScanner

NOTES

५. चिटिका न लब्धा किम्?

६. चित्रं कथम् आसीत्?

७. करमुक्तम् इति दृष्टवान्।

८. कः निर्देशकः? / कस्य निर्देशनम्?

९. तर्हि समीचीनम् एव स्यात्।

१०. संवादः / कथा समीचीना अस्ति।

११. एतद् द्वितीयवारं पश्यन् अस्मि।

१२. एकमपि चित्रं सम्यक् नास्ति।

१३. परह्यः एव दृष्टवान् अहम्।

१४. केवलं निस्तारं, जामिता भवति।

१५. तर्हि किमर्थं द्रष्टव्यम्?

१६. मयापि एकवारं द्रष्टव्यम्।

१७. सर्वे मिलित्वा गतवन्तः किम्?

२८. केवलं धनं व्यर्थम्।

९. शिक्षकाः

१. भवतः वेतनश्रेणी का?

२. इदानीं सर्वत्र समाना किम्?

३. प्राचार्यस्य आदेशं दृष्टवान् किम्?

४. अहो। तत्तु सामान्यम्।

५. अधिवेतनं लब्धं किम्?

६. लिपिकं दृष्टवान् किम्?

७. एवं चेत् कथं जीवामः?

८. महान् कोलाहलः इति श्रुतवान्।

९. किम्, समाचार-पत्रं पठितम्?

१०. वेतनं वर्धितम्।

११. कदा आरभ्य अन्वयः?

१२. इदानीं कक्षा अस्ति किम्?

Scanned with CamScanner

NOTES

१३. अद्य कक्षां न स्वीकरोमि इति सूचयतु ।

१४. किं प्राचार्यः आगतः ?

१५. अस्मिन् मासे कति अवकाशाः ?

१६. परश्वः अवकाशः भवेत् किम्?

१७. प्रश्नपत्रिका किं सज्जीकृता ?

१८. अस्मिन् वर्षे फलितांशः कथम्?

१९. एतावन्तः अङ्काः कथं लब्धाः ?

२०. परीक्षकाणाम् औदार्यम् ।

२१. परीक्षा अन्या, योग्यता अन्या ।

२२. मौल्यमापनार्थं गच्छति किम्?

२३. मौल्यमापनं कुत्र ?

२४. अस्वस्थः चेदपि आगतवान् ।

२५. अद्यतनाः बालास्तु...!

२६. अये, अत्र आगच्छतु ।

२७. गणितस्य अध्यापकः अस्ति वा इति पश्यतु ।

२८. ते तु बालाः खलु!

२९. किं भोः, सम्यक् पठति खलु!

३०. संशयः अस्ति चेत् पृच्छन्तु ।

३१. ज्ञातं किम्?

३२. पुनः एकवारं वदतु ।

३३. एकम् अपि गणितं न कृतवान् किम्?

३४. एवं चेत् परीक्षायां किं भवेत्?

३५. सेवकं किञ्चित् आह्वयतु ।

३६. घण्टा नादिता किम्?

३७. टिप्पणीं लिखन्तु ।

३८. एकोऽपि न जानाति किम्?

३९. भवान् ज्ञातवान् किम्? वदतु किञ्चित् ।

४०. अद्य एतावदेव पर्याप्तम् ।

Scanned with CamScanner

४१. एतम् अनुच्छेदं पूर्णं कृत्वा समापयाम ।

४२. श्वः एतद् सम्यक् पठित्वा आगन्तव्यम् ।

४३. किं गृहे किमपि पठति?

४४. किमर्थं कोलाहलः ?

४५. ह्यः कियत् पर्यन्तं पठितवान्?

१०. स्त्रियः

१. गृहकार्यं सर्वं समाप्तं किम्?

२. समाप्तप्रायम् ।

३. किं द्वित्राणि दिनानि न दृष्टा!

४. अहं मातृगृहं गतवती आसम् ।

५. एषु दिनेषु विमला मिलितवती किम्?

६. कार्यालयतः तस्य आगमनस्य समयः एषः ।

७. ममापि बहु कार्यम् अस्ति ।

८. किञ्चित् शर्करां ददाति वा ?

९. शर्करां

१०. काफी

११. दुग्धं

१२. आर्द्रकम्

१३. चालनीम्

१४. भवत्याः माता किं करोति स्म?

१५. अद्य प्रातः आरभ्य बहु कार्याणि ।

१६. तेषां पुत्र्याः विवाहः निश्चितः इति श्रुतवती ।

१७. वरः विदेशे अस्ति ।

१८. कन्यायाः कृते किं किम् आभूषणं दास्यति?

१९. मृत्तैलं लब्धं किम्?

३०. मृत्तैलं विक्रीयते इति श्रुतवती ।

Scanned with CamScanner

NOTES

११. कार्यालयः

१. भवान् कति दिनानि अवकाशं स्वीक्रोति?

२. एषु दिनेषु महान् कार्यभारः ।

३. एतत् सूचना फलके स्थापयतु ।

४. अत्र हस्ताङ्कनं करोतु ।

५. सः अवकाशं स्वीकृतवान् ।

६. अस्मिन् विषये पुनरपि चिन्तयामि ।

७. आगामिसप्ताहं मां पश्यतु ।

८. अस्मिन् विषये अनन्तरं वदामि । एतत् अहम् अवश्यमेव स्मरामि ।

९. भवदुक्तं सर्वं ज्ञातवान् भोः ।

१०. अत्र तस्य एव सर्वाधिकारः ।

११. मम कृते काऽपि दूरभाषा आगता किम्?

१२. आं, भवतः कृते दूरभाषा आगता आसीत् ।

१३. भवान् कस्मिन् पदे नियुक्तः अस्ति?

१४. एषः सर्वदा आगत्य पीड़यति ।

१५. इदानीं समयः अतीतः ।

१६. कृपया श्वः आगच्छतु ।

१७. सः आगतवान् इति स्मरामि ।

१८. पञ्चवादनपर्यन्तम् अत्रैव आसीत् ।

१९. माम् आहूतवान् किम्?

२०. तस्य व्यवस्थाम् अहं करोमि ।

२१. कार्यालयस्य कदा अवकाशः ?

२२. एतद्विषये श्वः पुनरपि स्मारयतु ।

२३. तम् अत्र आगन्तुं सूचयतु ।

२४. किमर्थम् इदानीम् अपि कार्यं न आरब्धम्?

२५. अन्येषाम् उपहासेनैव कालं यापयति सः ।

२६. मया किं करणीयं, वदतु ।

२७. अहं किं करोमि भोः ?

Scanned with CamScanner

NOTES

२८. अस्तु, परिशीलयामः ।

२९. चलतु, किञ्चित् काफी पिबाम ।

३०. भवान् शीघ्रं प्रत्यागमिष्यति खलु?

३१. कृपया उपविशतु ।

३२. पञ्चनिमेषेषु कृत्वा ददामि ।

३३. अद्य सः अत्र नास्ति ।

३४. सः एक सप्ताहाभ्यन्तरे आगच्छेत् ।

१२. दूरवाणी

१. हरिः ॐ ! संस्कृत-भारती!

२. संस्कृतभारत्याः कार्यालयः, किम्?

३. राजु महोदयस्य गृहं किम्?

४. एषा षट्-शून्यं शून्यं शून्यं चत्वारि किम्?

५. कः तत्र? / कः सम्भाषणं करोति?

६. अहं कृष्णः ।

७. कः अपेक्षितः ।

८. कृष्णः गृहे अस्ति किम्?

९. क्षम्यताम्, सः गृहे नास्ति ।

१०. कृपया एतद् कृष्णं सूचयतु ।

११. कृपया तम् आह्वयतु ।

१२. अस्तु, एकक्षणं तिष्ठतु ।

१३. कः दूरभाषां कृतवान् इति वदामि? सः श्वः आगच्छेत् ।

१४. अस्तु, श्वः पुनः दूरभाषां करोमि ।

१५. किम्, इदानीमपि न आगतवान्?

१६. तस्य दूरभाषासंख्यां वदति किम्?

१७. गृहे मिलेत् किम्?

१८. चेनैतः /बङ्गलुरुतः इदानीमपि न आगतवान् ।

१९. अवश्यं सूचयिष्यामि ।

NOTES

२०. स्थापयामि किम् ?

२१. किञ्चित् उच्चैः वदतु ।

२३. अतिथिः

१. किं पिबति भवान् /भवती ?

२. तर्हि पानकम् आनयामि ।

३. भवान् / भवती कॉफी पिबति, उत चायम्?

४. किञ्चित् विश्रान्तिम् अनुभवतु ।

५. किम् अद्यैव गन्तव्यम्?

६. भोजनं कृत्वा गच्छतु ।

७. दिनद्वयं तिष्ठतु, भोः ।

८. रात्रौ निद्रा सम्यक् आसीत् ।

९. रात्रौ निद्रा एव न आसीत् ।

१०. अत्रैव कुत्रापि गतवान्, इदानीम् आगच्छति ।

१४. शुभाशया:

१. दीपावलीशुभाशयाः ।

२. युगादि-शुभाशयाः ।

३. मकरसंक्रमणस्य हार्दिकशुभाशयाः ।

४. नववर्षस्य शुभाशयाः ।

५. नववर्षं नवचैतन्यं ददातु ।

६. भवतः वैवाहिकजीवनं सुखमयं भवतु ।

७. नवदम्पत्योः वैवाहिक जीवनं सुमधुरं भूयात् ।

८. सफलतायै अभिनन्दनम् ।

९. भवदीयः समारम्भः यशस्वी भवतु ।

१०. शतंजीव शरदो वर्धमानः ।

११. शिवाः सन्तु ते पन्थानः।

१२. जन्मदिनस्य शुभाशयाः ।

Scanned with CamScanner

लोकोक्तयः

NOTES

1. अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम् अथवा सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।
2. इतो भ्रष्टस्ततो नष्टः ।
3. अकर्मा भूमिनिन्दकः ।
4. आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति ।
5. नि:सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाड़म्बरो महान् ।
6. नवागमानां नव एव पन्थाः ।
7. गतस्य शोचनं नास्ति अथवा निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् अथवा काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनाऽपि किम् ?
8. छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति अथवा विपद् विपदमनुबध्नाति ।
9. न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।
10. हिमवति दिवौषधिः शीर्षे सर्पः समाविष्टः ।
11. अतिपरिचयादवज्ञा संततगमनादनादरो भवति ।
12. याचको याचकं दृष्ट्वा शुना वत् गुर्गुरायते अथवा स्वजनः परहिंस्रकः ।
13. महाजनो येन गतः सः पन्थाः ।
14. श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम् अथवा सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावकम् ।
15. निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते अथवा यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्युस्तत्राल्पधीरपि ।
16. महान् महत्येव करोति विक्रमम् अथवा अनुहुंकुरुते घनध्वनिं नतु गोमायुरुतानि केशरी ।
17. बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः अथवा गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः ।
18. अपि धन्वन्तरिवैद्यः किं करोति गतायुषि अथवा निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् ?
19. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ।
20. कण्टकेनैव कण्टकम्।
21. इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः ।
22. बह्वारम्भे लघुक्रिया ।
23. हिताहितं वीक्ष्य निकाममाचरेत् ।
24. यो यद्वपति बीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम् ।

Scanned with CamScanner

NOTES

25. सर्व: स्वार्थं समीहते ।

26. न हि सुखं दुःखैर्विना लभ्यते ।

27. दुग्धधौतोऽपि किं याति वायसः कलहंसताम् ? अथवा अङ्गारः शतधौतेन मलिनतां न मुञ्चति । अथवा भूयोऽपि सिक्तः पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति । अथवा आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया अथवा न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन निवार्यते ।

28. कष्टं खलु पराश्रयः ।

29. कुपुत्रेण कुलं नष्टम् ।

30. जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

31. पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्द्धनम् ।

32. वीरभोग्या वसुन्धरा ।

33. बली बलीयान्न तु नीतिमार्गः ।

34. बालानां रोदनं बलम् ।

35. पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फुत्कृत्य पामरः पिबति ।

36. निजसदननिविष्टः श्वा न सिंहायते किमु ?

37. दूरस्थाः पर्वताः रम्याः ।

38. अर्थमनर्थं भावय नित्यम् ।

39. हरेः पदाहतिः श्लाघ्या न श्लाघ्यं खररोहणम् । अथवा याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाऽधमे लब्धकामा ।

40. आतुरे नियमो नास्ति अथवा अकाले नियमो नास्ति ।

41. विषकुम्भं पयोमुखम् ।

42. शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम् ।

43. न मुनिः पुनरायातो न चासौ वर्द्धते गिरिः ।

44. गतस्य शोचना नास्ति ।

45. संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।

46. वर्त्तमानेन कालेन वर्त्तयन्ति मनीषिणः ।

47. यथा वृक्षस्तथा फलम् ।

48. ये गर्जन्ति मुहुर्मुहुर्जलधरा वर्षन्ति नैतादृशाः ।

Scanned with CamScanner

NOTES

49. एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा ।

50. नवा वाणी मुखे मुखे ।

51. गत: कालो न चायाति ।

52. अल्पविद्या भयङ्करी ।

53. पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारक: ।

54. अध्रुवात् ध्रुवं वरम् । अथवा वरमद्य कपोतो न श्वो मयूर: ।

55. अतिदर्पे हता लङ्का ।

56. एकस्य हि विवादोऽत्र देश्यते न तु प्राणिन: ।

57. खल: करोति दुर्वृत्तं तद्धि फलति साधुषु ।

दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनं च महादधे: ।

58. परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्।

धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मन: ।

59. स सुहृत् व्यसने य: स्यात् ।

60. कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दु:खमेकान्ततो वा ।

61. दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी ।

62. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

63. ते हि नो दिवस: गता: ।

64. विश्वस्तेषु च वञ्चनापरिभवश्चौर्यं न शौर्यं हि तत् । अथवा अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम् ?

65. अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति ।

66. संघे शक्ति: कलौ युगे ।

67. शुभस्य शीघ्रम् ।

68. पावको लोहसङ्गेन मुद्गरैरभिहन्यते ।

खल: करोति दुर्वृत्तं तद्धि फलति साधुषु ।

69. ब्रुवते हि फलेन साधवो तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् ।

70. बन्धनभ्रष्टो गृहकपोतश्चिल्लाया मुखे पतित: ।

Scanned with CamScanner

NOTES

71. सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः ।

72. पङ्कोहि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्द्धनि ।

73. न विड़ालो भवेद्यत्र तत्र क्रीड़न्ति मूषकाः ।

74. को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ।

75. प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम् ।

76. अश्नुते स हि कल्याणं व्यसने यो न मुह्यति ।

77. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।

78. न सुवर्णे ध्वनिस्तादृक् यादृक् कांस्ये प्रजायते ।

79. रत्नाकरो जलनिधिरित्यसेवि धनाशया ।

धनं दूरन्तु वदनं पूरितं क्षारवारिणा ।

अथवा विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम् ।

80. अज्ञात-कुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित् ।

81. अथवा भवितव्यानां द्वाराणि वर्त्तन्ते सर्वत्र ।

82. व्रणे क्षारं ज्वलेद् भृशम् ।

83. अपात्रे प्रतिपत्तिश्च ।

84. अवलोक्य स्वकं दोषं परदोषे प्रमोदते ।

85. अतिभक्तिश्चोरलक्षणम् ।

86. वृथा वृष्टिः समुद्रेषु ।

87. तुलसीपत्रयुग्मेन सुवासो हि वितन्यते ।

88. दीपतलं हि तमसावृतं नैव दृश्यते ।

89. सलिले तु गृहं कृत्वा नक्रेण कलहः कृतः ।

90. दरिद्रस्य गुणाः सर्वे भस्माच्छादितवह्निवत् ।

91. मौनं सम्मतिलक्षणम् ।

92. अभ्यासयोगयुक्तेन सर्वं भवति संसिद्धिः ।

93. पतन् शिशुश्चलेद् ध्रुवम् ।

94. भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम् ।

Scanned with CamScanner

95. अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन् विचारमूढ़: प्रतिभासि मे त्वम् ।

96. कल्पवृक्षोऽप्यभव्यानां प्रायो याति पलाशताम् ।

97. पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।

98. शूर्पस्य स्वर्गलाभेऽपि स्वभावो नातिरिच्यते ।

99. अणुरपि पर्वततामुपैति वाचा ।

100. पदरहितविचित्रो धावते लोकवाद: ।

❖❖❖

Scanned with CamScanner